Resource: Open Hindi Contemporary Version

Open Hindi Contemporary Version (Hindi) is based on: Hindi Contemporary Version Bible, Biblica, Inc, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Open Hindi Contemporary Version

Luke 1:1

1 अनेक व्यक्तियों ने उन घटनाओं को लिखकर इकट्ठा करने
का कार्य किया है, जो हमारे बीच में घटी.

2 ये सबूत हमें उनसे प्राप्त हुए हैं, जो प्रारंभ ही से इनके
प्रत्यक्षदर्शी और परमेश्वर के वचन के सेवक रहे.

3 मैंने स्वयं हर एक घटनाओं की शुरुआत से सावधानीपूर्वक
जांच की है. इसलिये परम सम्मान्य थियोफ़िलॉस महोदय, मुझे
भी यह उचित लगा कि आपके लिए मैं यह सब क्रम के
अनुसार लिखूं

4 कि जो शिक्षाएं आपको दी गई हैं, आप उनकी विश्वसनीयता
को जान लें.

5 यहूदिया प्रदेश के राजा हेरोदेस के शासनकाल में अबीयाह
दल के एक पुरोहित थे, जिनका नाम ज़करयाह था. उनकी
पत्नी का नाम एलिज़ाबेथ था, जो हारोन की वंशज थी.

6 वे दोनों ही परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी तथा प्रभु के सभी आदेशों
और नियमों के पालन में दोषहीन थे.

7 उनकी कोई संतान न थी क्योंकि एलिज़ाबेथ बांझ थी और वे
दोनों ही अब बूढ़े हो चुके थे.

8 अपने दल की बारी के अनुसार जब ज़करयाह एक दिन
परमेश्वर के सामने अपनी पुरोहित सेवा भेंट कर रहे थे,

9 उन्हें पुरोहितों की रीति के अनुसार पर्ची द्वारा चुनाव कर प्रभु
के मंदिर में प्रवेश करने और धूप जलाने का काम सौंपा गया
था.

10 धूप जलाने के समय बाहर सभी लोगों का विशाल समूह
प्रार्थना कर रहा था.

11 तभी ज़करयाह के सामने प्रभु का एक दूत प्रकट हुआ, जो
धूप वेदी की दायीं ओर खड़ा था.

12 स्वर्गदूत को देख ज़करयाह चौंक पड़े और भयभीत हो गए

13 किंतु उस स्वर्गदूत ने उनसे कहा, “मत डरो, ज़करयाह!
तुम्हारी प्रार्थना सुन ली गई है. तुम्हारी पत्नी एलिज़ाबेथ एक पुत्र
जनेगी. तुम उसका नाम योहन रखना.

14 तुम आनंदित और प्रसन्न होंगे तथा अनेक उसके जन्म के
कारण आनंद मनाएंगे.

15 यह बालक प्रभु की दृष्टि में महान होगा. वह दाखरस और
मदिरा का सेवन कभी न करेगा तथा माता के गर्भ से ही पवित्र
आत्मा से भरा हुआ होगा.

16 वह इस्राएल के वंशजों में से अनेकों को प्रभु—उनके
परमेश्वर—की ओर लौटा ले आएगा.

17 वह एलियाह की आत्मा और सामर्थ्य में प्रभु के आगे
चलनेवाला बनकर पिताओं के हृदय संतानों की ओर तथा
अनाज्ञाकारियों को धर्मी के ज्ञान की ओर फेरेगा कि एक राष्ट्र
को प्रभु के लिए तैयार करें.”

18 ज़करयाह ने स्वर्गदूत से प्रश्न किया, “मैं कैसे विश्वास करूं—
क्योंकि मैं ठहरा एक बूढ़ा व्यक्ति और मेरी पत्नी की आयु भी
ढल चुकी है?”

19 स्वर्गदूत ने उन्हें उत्तर दिया, “मैं गब्रिएल हूं. मैं नित परमेश्वर
की उपस्थिति में रहता हूं. मुझे तुम्हें यह बताने और इस शुभ
समाचार की घोषणा करने के लिए ही भेजा गया है.

Luke 1:1

20 और सुनो! जब तक मेरी ये बातें पूरी न हो जाए, तब तक के
लिए तुम गूंगे हो जाओगे, बोलने में असमर्थ, क्योंकि तुमने मेरे
वचनों पर विश्वास नहीं किया, जिसका नियत समय पर पूरा
होना निश्चित है."

21 बाहर ज़करयाह का इंतजार कर रहे लोग असमंजस में पड़
गए कि उन्हें मंदिर में इतनी देर क्यों हो रही है.

22 जब ज़करयाह बाहर आए, वह उनसे बातें करने में असमर्थ
रहे. इसलिये वे समझ गए कि ज़करयाह को मंदिर में कोई
दर्शन प्राप्त हुआ है. वह उनसे संकेतों द्वारा बातचीत करते रहे
और मौन बने रहे.

23 अपने पुरोहित सेवाकाल की समाप्ति पर ज़करयाह घर
लौट गए.

24 उनकी पत्नी एलिज़ाबेथ ने गर्भधारण किया और यह कहते
हुए पांच माह तक अकेले में रहीं,

25 "प्रभु ने मुझ पर यह कृपादृष्टि की है और समूह में मेरी
लज्जित स्थिति से मुझे उबार लिया है."

26 छठे माह में स्वर्गदूत गब्रिएल को परमेश्वर द्वारा गलील
प्रदेश के नाज़रेथ नामक नगर में

27 एक कुंवारी कन्या के पास भेजा गया, जिसका विवाह
योसेफ़ नामक एक पुरुष से होना निश्चित हुआ था. योसेफ़,
राजा दावीद के वंशज थे. कन्या का नाम था मरियम.

28 मरियम को संबोधित करते हुए स्वर्गदूत ने कहा, "प्रभु की
कृपापात्री, नमस्कार! प्रभु आपके साथ हैं."

29 इस कथन को सुन वह बहुत ही घबरा गईं कि इस प्रकार
के नमस्कार का क्या अर्थ हो सकता है.

30 स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "मत डरिए, मरियम! क्योंकि आप
परमेश्वर की कृपा की पात्र हैं.

31 सुनिए! आप गर्भधारण कर एक पुत्र को जन्म देंगी. आप
उनका नाम येशु रखें.

32 वह महान होंगे. परम प्रधान के पुत्र कहलाएंगे और प्रभु
परमेश्वर उन्हें उनके पूर्वज दावीद का सिंहासन सौंपेंगे,

33 वह याकोब के वंश पर हमेशा के लिए राज्य करेंगे तथा
उनके राज्य का अंत कभी न होगा."

34 मरियम ने स्वर्गदूत से प्रश्न किया, "यह कैसे संभव होगा
क्योंकि मैं तो कुंवारी हूं?"

35 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा आप पर उतरेंगे तथा
परम प्रधान का सामर्थ्य आप पर छाया करेगा. इसलिये जो
जन्म लेंगे, वह पवित्र और परमेश्वर-पुत्र कहलाएंगे.

36 और यह भी सुनिए आपकी परिजन एलिज़ाबेथ ने अपनी
वृद्धावस्था में एक पुत्र गर्भधारण किया है. वह, जो बांझ
कहलाती थी, उन्हें छः माह का गर्भ है.

37 परमेश्वर के लिए असंभव कुछ भी नहीं."

38 मरियम ने कहा, "देखिए, मैं प्रभु की दासी हूं. मेरे लिए वही
सब हो, जैसा आपने कहा है." तब वह स्वर्गदूत उनके पास से
चला गया.

39 मरियम तुरंत यहूदिया प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्र के एक नगर
को चली गईं.

40 वहां उन्होंने ज़करयाह के घर पर जाकर एलिज़ाबेथ को
नमस्कार किया.

41 जैसे ही एलिज़ाबेथ ने मरियम का नमस्कार सुना, उनके गर्भ
में शिशु उछल पड़ा और एलिज़ाबेथ पवित्र आत्मा से भर गईं.

42 वह उल्लसित शब्द में बोल उठी, "तुम सभी नारियों में धन्य
हो और धन्य है तुम्हारे गर्भ का फल!

43 मुझ पर यह कैसी कृपादृष्टि हुई है, जो मेरे प्रभु की माता
मुझसे भेंट करने आई हैं!

44 देखो तो, जैसे ही तुम्हारा नमस्कार मेरे कानों में पड़ा,
हर्षोल्लास से मेरे गर्भ में शिशु उछल पड़ा.

45 धन्य है वह, जिसने प्रभु द्वारा कही हुई बातों के पूरा होने का
विश्वास किया है!"

46 इस पर मरियम के वचन ये थे: "मेरा प्राण प्रभु की प्रशंसा
करता है

47 और मेरी अंतरात्मा परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता में आनंदित
हुई है,

48 क्योंकि उन्होंने अपनी दासी की दीनता की ओर दृष्टि की है.
अब से सभी पीढ़ियां मुझे धन्य कहेंगी,

49 क्योंकि सामर्थ्यी ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं. पवित्र है
उनका नाम.

50 उनकी दया उनके श्रद्धालुओं पर पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी
रहती है.

51 अपने भुजबल से उन्होंने प्रतापी काम किए हैं और
अभिमानियों को बिखरा दिया है.

52 परमेश्वर ने राजाओं को उनके सिंहासनों से नीचे उतार दिया
तथा विनम्रों को उठाया है.

53 उन्होंने भूखों को उत्तम पदार्थों से तृप्त किया तथा सम्पन्नों
को खाली लौटा दिया.

54 उन्होंने अपने सेवक इस्राएल की सहायता अपनी उस
करुणा के स्मरण में की,

55 जिसकी प्रतिज्ञा उसने हमारे बाप-दादों से करी थी और जो
अब्राहाम तथा उनके वंशजों पर सदा-सर्वदा रहेगी."

56 लगभग तीन माह एलिज़ाबेथ के साथ रहकर मरियम अपने
घर लौट गईं.

57 एलिज़ाबेथ का प्रसवकाल पूरा हुआ और उन्होंने एक पुत्र
को जन्म दिया.

58 जब पड़ोसियों और परिजनों ने यह सुना कि एलिज़ाबेथ पर
यह अनुग्रह हुआ है, तो वे भी उनके इस आनंद में सम्मिलित
हो गए.

59 आठवें दिन वे शिशु के ख़तना के लिए इकट्ठा हुए. वे शिशु
को उसके पिता के नाम पर ज़करयाह पुकारने लगे.

60 किंतु शिशु की माता ने उत्तर दिया; "नहीं! इसका नाम
योहन होगा!"

61 इस पर उन्होंने एलिज़ाबेथ से कहा, "आपके परिजनों में तो
इस नाम का कोई भी व्यक्ति नहीं है!"

62 तब उन्होंने शिशु के पिता से संकेत में प्रश्न किया कि वह
शिशु का नाम क्या रखना चाहते हैं?

63 ज़करयाह ने एक लेखन पट्ट मंगा कर उस पर लिख दिया,
"इसका नाम योहन है." यह देख सभी चकित रह गए.

64 उसी क्षण उनकी आवाज लौट आई. उनकी जीभ के बंधन
खुल गए और वह परमेश्वर की स्तुति करने लगे.

65 सभी पड़ोसियों में परमेश्वर के प्रति श्रद्धा भाव आ गया और
यहूदिया प्रदेश के सभी पर्वतीय क्षेत्र में इसकी चर्चा होने लगी.

66 निःसंदेह प्रभु का हाथ उस बालक पर था. जिन्होंने यह सुना,
उन्होंने इसे याद रखा और यह विचार करते रहे: "क्या होगा
यह बालक!"

67 पवित्र आत्मा से भरकर उनके पिता ज़करयाह इस प्रकार
भविष्यवाणियों का वर्णानुभाषण करना शुरू किया:

68 “धन्य हैं प्रभु, इस्राएल के परमेश्वर, क्योंकि उन्होंने अपनी
प्रजा की सुधि ली और उसका उद्धार किया.

69 उन्होंने हमारे लिए अपने सेवक दावीद के वंश में एक
उद्धारकर्ता पैदा किया है,

70 (जैसा उन्होंने प्राचीन काल के अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं
के माध्यम से प्रकट किया)

71 शत्रुओं तथा उन सबसे, जो हमसे घृणा करते हैं, बचाए रखा

72 कि वह हमारे पूर्वजों पर अपनी कृपादृष्टि प्रदर्शित करें तथा
अपनी पवित्र वाचा को पूरा करें;

73 वही वाचा, जो उन्होंने हमारे पूर्वज अब्राहाम से स्थापित की
थी:

74 वह हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ाएंगे,

75 कि हम पवित्रता और धार्मिकता में निर्भय हो जीवन भर
उनकी सेवा कर सकें.

76 “और बालक तुम, मेरे पुत्र, परम प्रधान परमेश्वर के
भविष्यवक्ता कहलाओगे; क्योंकि तुम उनका मार्ग तैयार
करने के लिए प्रभु के आगे-आगे चलोगे,

77 तुम परमेश्वर की प्रजा को उसके पापों की क्षमा के द्वारा
उद्धार का ज्ञान प्रदान करोगे.

78 हमारे परमेश्वर की अत्यधिक कृपा के कारण, स्वर्ग से हम
पर प्रकाश का उदय होगा,

79 उन पर, जो अंधकार और मृत्यु की छाया में हैं; कि इसके
द्वारा हमारा मार्गदर्शन शांति के मार्ग पर हो.”

80 बालक योहन का विकास होता गया तथा वह आत्मिक रूप
से भी बलवंत होते गए. इस्राएल के सामने सार्वजनिक रूप से
प्रकट होने के पहले वह बंजर भूमि में निवास करते रहे.

Luke 2:1

1 यह उस समय की घटना है जब सम्राट कयसर औगुस्तॉस
की ओर से यह राज आज्ञा घोषित की गई कि सभी रोम
शासित राष्ट्रों में जनगणना की जाए.

2 यह सीरिया राज्य पर राज्यपाल क्रीरिनियुस के शासनकाल
में पहली जनगणना थी.

3 सभी नागरिक अपने नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने
जन्मस्थान को जाने लगे.

4 योसेफ़, दावीद के वंशज थे, इसलिये वह गलील प्रदेश के
नाज़रेथ नगर से यहूदिया प्रदेश के बेथलेहेम अर्थात् दावीद के
नगर गए

5 कि वह भी अपनी मंगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती थी,
नाम लिखवाएं.

6 वहीं मरियम का प्रसवकाल पूरा हुआ

7 और उन्होंने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया. उन्होंने उसे
कपड़ों में लपेट कर चरनी में लिटा दिया क्योंकि यात्री निवास
में उनके ठहरने के लिए कोई स्थान उपलब्ध न था.

8 उसी क्षेत्र में कुछ चरवाहे रात के समय मैदानों में अपनी भेड़ों
की चौकसी कर रहे थे.

9 सहसा प्रभु का एक दूत उनके सामने प्रकट हुआ और प्रभु
का तेज उनके चारों ओर फैल गया और चरवाहे अत्यंत डर
गए.

10 इस पर स्वर्गदूत ने उन्हें धीरज देते हुए कहा, “डरो मत!
क्योंकि मैं अत्यंत आनंद का एक शुभ संदेश लाया हूं, जो सभी
के लिए है:

11 तुम्हारे उद्धारकर्ता ने आज दावीद के नगर में जन्म लिया है.
प्रभु मसीह वही हैं.

Luke 2:1

12 उनकी पहचान के चिह्न ये हैं: तुम कपड़ों में लिपटा और
चरनी में लेटा हुआ एक शिशु पाओगे."

13 सहसा उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का एक विशाल
समूह प्रकट हुआ, जो परमेश्वर की स्तुति इस गान के द्वारा कर
रहा था:

14 "सबसे ऊंचे स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति; तथा पृथ्वी पर
उनमें, जिन पर उनकी कृपादृष्टि है, शांति स्थापित हो."

15 जब स्वर्गदूत स्वर्ग लौट गए तब चरवाहों ने आपस में विचार
किया, "आओ हम बेथलेहेम जाकर वह सब देखें, जिसका प्रभु
ने हम पर प्रकाशन किया है."

16 इसलिये वे तुरंत चल पड़े और बेथलेहेम नगर पहुंचकर
मरियम, योसेफ़ तथा उस शिशु को देखा, जो चरनी में लेटा
हुआ था.

17 उस शिशु का दर्शन कर वे उससे संबंधित सभी बातों को,
जो उन पर प्रकाशित की गयी थी, सभी जगह बताने लगे.

18 सभी सुननेवालों के लिए चरवाहों का समाचार आश्चर्य का
विषय था.

19 मरियम इन बातों को अपने हृदय में संजोकर उनके बारे में
सोच-विचार करती रहीं.

20 चरवाहे परमेश्वर की स्तुति तथा गुणगान करते हुए लौट गए
क्योंकि जो कुछ उन्होंने सुना था और देखा था, वह ठीक वैसा
ही था, जैसा उन पर प्रकाशित किया गया था.

21 जन्म के आठवें दिन, ख़तना के समय, उस शिशु का नाम
येशु रखा गया—वही नाम, जो उनके गर्भ में आने के पूर्व
स्वर्गदूत द्वारा बताया गया था.

22 जब मोशेह की व्यवस्था के अनुरूप मरियम और योसेफ़
के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए, वे शिशु को येरूशलेम लाए कि
उसे प्रभु को भेंट किया जाए.

23 जैसा कि व्यवस्था का आदेश है: हर एक पहलौठा पुत्र प्रभु
को भेंट किया जाए

24 तथा प्रभु के व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार एक जोड़ा
पंडुकी या कबूतर के दो बच्चों की बलि चढ़ाई जाए.

25 येरूशलेम में शिमओन नामक एक व्यक्ति थे. वह धर्मी तथा
श्रद्धालु थे. वह इस्राएल की शांति की प्रतीक्षा कर रहे थे. उन
पर पवित्र आत्मा का आच्छादन था.

26 पवित्र आत्मा के द्वारा उन पर यह स्पष्ट कर दिया गया था
कि प्रभु के मसीह को देखे बिना उनकी मृत्यु नहीं होगी.

27 पवित्र आत्मा के सिखाने पर शिमओन मंदिर के आंगन में
आए. उसी समय मरियम और योसेफ़ ने व्यवस्था द्वारा
निर्धारित विधियों को पूरा करने के उद्देश्य से शिशु येशु को
लेकर वहां प्रवेश किया.

28 शिशु येशु को देखकर शिमओन ने उन्हें गोद में लेकर
परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा.

29 "परम प्रधान प्रभु, अब अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने
सेवक को शांति में विदा कीजिए,

30 क्योंकि मैंने अपनी आंखों से आपके उद्धार को देख लिया
है,

31 जिसे आपने सभी के लिए तैयार किया है.

32 यह आपकी प्रजा इस्राएल का गौरव, तथा सब राष्ट्रों की ज्ञान
की ज्योति है."

33 मरियम और योसेफ़ अपने पुत्र के विषय में इन बातों को
सुन चकित रह गए.

34 शिमओन ने मरियम को संबोधित करते हुए ये आशीर्वचन
कहे: "यह पहले से ठहराया हुआ है कि यह शिशु इस्राएल में
अनेकों के पतन और उत्थान के लिए चुना गया है. यह एक
ऐसा चिन्ह होगा लोकमत जिसके विरुद्ध ही होगा.

35 यह तलवार तुम्हारे ही प्राण को आर-पार बेध देगी—कि अनेकों के हृदयों के विचार प्रकट हो जाएं."

36 हन्ना नामक एक भविष्यवक्तिन थी, जो आशेर वंश के फ़नुएल नामक व्यक्ति की पुत्री थी. वह अत्यंत वृद्ध थी तथा विवाह के बाद पति के साथ मात्र सात वर्ष रहकर विधवा हो गई थी.

37 इस समय उनकी आयु चौरासी वर्ष थी. उन्होंने मंदिर कभी नहीं छोड़ा और वह दिन-रात उपवास तथा प्रार्थना करते हुए परमेश्वर की उपासना में तल्लीन रहती थी.

38 उसी समय वह वहां आई और परमेश्वर के प्रति धन्यवाद व्यक्त करने लगीं. उन्होंने उन सभी को इस शिशु के विषय में सूचित किया, जो येरूशलेम के छुटकारे की प्रतीक्षा में थे.

39 जब योसेफ़ तथा मरियम प्रभु के व्यवस्था में निर्धारित विधियां पूरी कर चुके, वे गलील प्रदेश में अपने नगर नाज़रेथ लौट गए.

40 बालक येशु बड़े होते हुए बलवंत होते गए तथा उनकी बुद्धि का विकास होता गया. परमेश्वर उनसे प्रसन्‍न थे तथा वह उनकी कृपादृष्टि के पात्र थे.

41 प्रभु येशु के माता-पिता प्रति वर्ष फ़सह उत्सव के उपलक्ष्य में येरूशलेम जाया करते थे.

42 जब प्रभु येशु की अवस्था बारह वर्ष की हुई, तब प्रथा के अनुसार वह भी अपने माता-पिता के साथ उत्सव के लिए येरूशलेम गए.

43 उत्सव की समाप्‍ति पर जब उनके माता-पिता घर लौट रहे थे, बालक येशु येरूशलेम में ही ठहर गए. उनके माता-पिता इससे अनजान थे.

44 यह सोचकर कि बालक यात्री-समूह में ही कहीं होगा, वे उस दिन की यात्रा में आगे बढ़ते गए. जब उन्होंने परिजनों-मित्रों में प्रभु येशु को खोजना प्रारंभ किया,

45 प्रभु येशु उन्हें उनके मध्य नहीं मिले इसलिये वे उन्हें खोजने येरूशलेम लौट गए.

46 तीन दिन बाद उन्होंने प्रभु येशु को मंदिर परिसर में शिक्षकों के साथ बैठा हुआ पाया. वहां बैठे हुए वह उनकी सुन रहे थे तथा उनसे प्रश्न भी कर रहे थे.

47 जिस किसी ने भी उनको सुना, वह उनकी समझ और उनके उत्तरों से चकित थे.

48 उनके माता-पिता उन्हें वहां देख चकित रह गए. उनकी माता ने उनसे प्रश्न किया, "पुत्र! तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? तुम्हारे पिता और मैं तुम्हें कितनी बेचैनी से खोज रहे थे!"

49 "क्यों खोज रहे थे आप मुझे?" प्रभु येशु ने उनसे पूछा, "क्या आपको यह मालूम न था कि मेरा मेरे पिता के घर में ही होना उचित है?"

50 मरियम और योसेफ़ को प्रभु येशु की इस बात का अर्थ समझ नहीं आया.

51 प्रभु येशु अपने माता-पिता के साथ नाज़रेथ लौट गए और उनके आज्ञाकारी रहे. उनकी माता ने ये सब विषय हृदय में संजोए रखे.

52 प्रभु येशु बुद्धि डीलडौल तथा परमेश्वर और मनुष्यों की कृपादृष्टि में बढ़ते चले गए.

Luke 3:1

1 सम्राट कयसर तिबेरियॉस के शासनकाल के पन्द्रहवें वर्ष में जब पोन्तियॉस पिलातॉस यहूदिया प्रदेश का राज्यपाल, तथा हेरोदेस गलील प्रदेश का, उसका भाई फ़िलिप्पॉस इतूरिया और त्रख़ोनीतिस प्रदेश का, तथा लिसनियस एबिलीन का शासक थे,

2 और जब हन्ना और कायाफ़स महापुरोहित पद पर थे; ज़करयाह के पुत्र योहन को, जब वह बंजर भूमि में थे, परमेश्वर की ओर से एक संदेश प्राप्‍त हुआ.

Luke 3:1

3 इसलिये योहन यरदन नदी के आस-पास के सभी क्षेत्र में
भ्रमण करते हुए पाप क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का
प्रचार करने लगे;

4 जैसा बपतिस्मा देनेवाले योहन के विषय में भविष्यवक्ता
यशायाह के शब्दों के पुस्तक में लिखा है: "एक आवाज, जो
बंजर भूमि में पुकारनेवाले की कह रही है, 'प्रभु के लिए मार्ग
को तैयार करो; उनका मार्ग सरल बनाओ.

5 हर एक घाटी भर दी जाएगी, हर एक पर्वत और पहाड़ी
समतल की जाएगी. टेढ़े रास्ते सीधे हो जाएंगे, तथा असमतल
पथ समतल.

6 हर एक मनुष्य के सामने परमेश्वर का उद्धार स्पष्ट हो
जाएगा.' "

7 बपतिस्मा लेने के उद्देश्य से अपने पास आई भीड़ को
संबोधित करते हुए योहन कहते थे, "विषैले सांपों की संतान!
समीप आ रहे क्रोध से भागने की चेतावनी तुम्हें किसने दे दी?

8 सच्चे मन फिराने का प्रमाण दो और अपने आपको ऐसा
कहना शुरू मत करो: 'हम तो अब्राहाम की संतान हैं!' क्योंकि
मैं तुम्हें बताता हूं कि परमेश्वर में इन पत्थरों तक से अब्राहाम
की संतान पैदा करने का सामर्थ्य है.

9 कुल्हाड़ी पहले ही वृक्षों की जड़ पर रखी हुई है. हर एक पेड़,
जो उत्तम फल नहीं फलता, काटा जाता और आग में झोंक
दिया जाता है."

10 इस पर भीड़ ने उनसे प्रश्न किया, "तब हम क्या करें?"

11 योहन ने उन्हें उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति के पास दो कुर्ते हैं,
वह एक उसे दे दे, जिसके पास एक भी नहीं है. जिसके पास
भोजन है, वह भी यही करे."

12 चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा के लिए उनके पास आए और
उन्होंने योहन से प्रश्न किया, "गुरुवर! हमारे लिए उचित क्या
है?"

13 "निर्धारित राशि से अधिक मत लो." योहन ने उत्तर दिया.

14 कुछ सिपाहियों ने उनसे प्रश्न किया, "हमें बताइए—हम क्या
करें?" योहन ने उत्तर दिया, "न तो डरा-धमका कर लोगों से
पैसा ऐंठो और न ही उन पर झूठा आरोप लगाओ परंतु अपने
वेतन में ही संतुष्ट रहो."

15 बड़ी जिज्ञासा के भाव में भीड़ यह जानने का प्रयास कर रही
थी और अपने-अपने हृदय में यही विचार कर रहे थे कि कहीं
योहन ही तो मसीह नहीं हैं.

16 भीड़ को संबोधित करते हुए योहन ने स्पष्ट किया, "मेरा
बपतिस्मा तो मात्र जल-बपतिस्मा है किंतु एक मुझसे अधिक
सामर्थ्यशाली आ रहे हैं. मैं तो उनकी जूतियों के बंध खोलने
योग्य भी नहीं. वही हैं, जो तुम्हें पवित्र आत्मा और आग में
बपतिस्मा देंगे.

17 सूप उसके हाथ में है. वह गेहूं को निरुपयोगी भूसी और
डंठल से अलग करते हैं. वह गेहूं को खलिहान में इकट्ठा करेंगे
तथा भूसी को कभी न बुझनेवाली आग में भस्म कर देंगे."

18 योहन अनेक प्रकार से शिक्षा देते हुए लोगों में सुसमाचार
का प्रचार करते रहे.

19 जब योहन ने राज्यपाल हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी
हेरोदिअस के विषय में तथा स्वयं उसी के द्वारा किए गए अन्य
कुकर्मों के कारण फटकार लगाई,

20 तब हेरोदेस ने एक और कुकर्म किया: उसने योहन ही को
बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया.

21 जब लोग योहन से बपतिस्मा ले रहे थे, उन्होंने प्रभु येशु को
भी बपतिस्मा दिया. इस अवसर पर, जब प्रभु येशु प्रार्थना कर
रहे थे, स्वर्ग खोल दिया गया

22 और पवित्र आत्मा प्रभु येशु पर शारीरिक रूप में कबूतर के
समान उतरे और स्वर्ग से निकला एक शब्द सुना गया: "तुम
मेरे पुत्र हो—मेरे प्रिय. मैं तुममें पूरी तरह संतुष्ट हूं."

23 प्रभु येशु ने जब अपनी सेवकाई प्रारंभ की तब उनकी
अवस्था लगभग तीस वर्ष की थी. जैसा समझा जाता है कि वह
योसेफ़ के पुत्र हैं, योसेफ़ हेली के,

24 हेली मथ्थात के, मथ्थात लेवी के, लेवी मेल्ख़ी के, मेल्ख़ी यन्नाई के, यन्नाई योसेफ़ के,

25 योसेफ़ मत्ताथियाह के, मत्ताथियाह आमोस के, आमोस नहूम के, नहूम ऍस्ली के, ऍस्ली नग्गाई के,

26 नग्गाई माहथ के, माहथ मत्ताथियाह के, मत्ताथियाह सेमेई के, सेमेई योसेख़ के, योसेख़ योदा के,

27 योदा योअनान के, योअनान रेसा के, रेसा ज़ेरोबाबेल के, ज़ेरोबाबेल सलाथिएल के, सलाथिएल नेरी के,

28 नेरी मेल्ख़ी के, मेल्ख़ी अद्दी के, अद्दी कोसम के, कोसम एल्मोदम के, एल्मोदम एर के,

29 एर यहोशू के, यहोशू एलिएज़र के, एलिएज़र योरीम के, योरीम मथ्थात के, मथ्थात लेवी के,

30 लेवी शिमओन के, शिमओन यहूदाह के, यहूदाह योसेफ़ के, योसेफ़ योनाम के, योनाम एलियाकिम के

31 एलियाकिम मेलिया के, मेलिया मेन्ना के, महीनन मत्ताथा के, मत्ताथा नाथान के, नाथान दावीद के,

32 दावीद यिशै के, यिशै ओबेद के, ओबेद बोअज़ के, बोअज़ सलमोन के, सलमोन नाहश्शोन के,

33 नाहश्शोन अम्मीनादाब के, अम्मीनादाब राम के, राम आरनी के, आरनी हेज़रोन के, हेज़रोन फ़ारेस के, फ़ारेस यहूदाह के,

34 यहूदाह याकोब के, याकोब यित्सहाक के, यित्सहाक अब्राहाम के, अब्राहाम तेराह के, तेराह नाख़ोर के,

35 नाख़ोर सेरूख़ के, सेरूख़ रागाउ के, रागाउ फ़ालेक के, फ़ालेक ईबर के, ईबर शेलाह के,

36 शेलाह केनन के, केनन अरफाक्साद के, अरफाक्साद शेम के, शेम नोहा के, नोहा लामेख़ के,

37 लामेख़ मेथुसेलाह के, मेथुसेलाह हनोख, हनोख यारेत के, यारेत मालेलेईल के, मालेलेईल काईनम के,

38 काईनम ईनॉश के, ईनॉश सेथ के, सेथ आदम के और आदम परमेश्वर के पुत्र थे.

Luke 4:1

1 पवित्र आत्मा से भरकर प्रभु येशु यरदन नदी से लौटे और आत्मा उन्हें बंजर भूमि में ले गया,

2 जहां चालीस दिन तक शैतान उन्हें परीक्षा में डालने का प्रयास करता रहा. इस अवधि में वह पूरी तरह बिना भोजन के रहे, इसके बाद उन्हें भूख लगी.

3 शैतान ने उनसे कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो तो इस पत्थर को आज्ञा दो कि यह रोटी बन जाए."

4 प्रभु येशु ने उसे उत्तर दिया, "लिखा है: 'मनुष्य का जीवन सिर्फ भोजन पर ही निर्भर नहीं रहता है.'"

5 इसके बाद शैतान ने उन्हें ऊंचे पहाड़ पर ले जाकर क्षण मात्र में सारे विश्व के सभी राज्यों की झलक दिखाई

6 और उनसे कहा, "इन सबका सारा अधिकार और वैभव मैं तुम्हें दूंगा क्योंकि ये सब मुझे सौंपे गए हैं इसलिये ये सब मैं अपनी इच्छा से किसी को भी दे सकता हूं.

7 यदि तुम मात्र मेरी आराधना करो तो ये सब तुम्हारा हो जाएगा."

8 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, "लिखा है: तुम सिर्फ प्रभु अपने परमेश्वर की ही आराधना और सेवा किया करो."

9 इसके बाद शैतान ने उन्हें येरूशलेम ले जाकर मंदिर की चोटी पर खड़ा कर दिया और उनसे कहा, "यदि तुम परमेश्वर के पुत्र हो तो यहां से कूद जाओ,

Luke 4:1

10 क्योंकि लिखा है: " 'वह अपने स्वर्गदूतों को तुम्हारी सुरक्षा
के संबंध में आज्ञा देंगे तथा;

11 वे तुम्हें हाथों-हाथ उठा लेंगे; कि तुम्हारे पांव को पत्थर से
चोट न लगे.' "

12 इसके उत्तर में प्रभु येशु ने उससे कहा, "यह भी तो लिखा
है: तुम प्रभु अपने परमेश्वर को न परखना."

13 जब शैतान प्रभु येशु को परीक्षा में डालने के सभी प्रयास
कर चुका, वह उन्हें किसी सटीक अवसर तक के लिए
छोड़कर चला गया.

14 प्रभु येशु आत्मा के सामर्थ्य में गलील प्रदेश लौट गए.
नज़दीकी सभी नगरों में उनके विषय में समाचार फैल गया.

15 प्रभु येशु यहूदी सभागृहों में शिक्षा देते थे तथा सभी उनकी
सराहना करते थे.

16 प्रभु येशु नाज़रेथ नगर आए, जहां उनका पालन पोषण हुआ
था. शब्बाथ पर अपनी रीति के अनुसार वह यहूदी सभागृह में
जाकर पवित्र शास्त्र पढ़ने के लिए खड़े हो गए.

17 उन्हें भविष्यवक्ता यशायाह का अभिलेख दिया गया.
उन्होंने उसमें वह जगह निकाली, जहां लिखा है:

18 "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उन्होंने मेरा अभिषेक
किया है, कंगालों को सुसमाचार देने के लिए, और बंदियों के
लिए मुक्ति का प्रचार करने के लिए और अंधों को रोशनी,
कुचले हुओं को कष्ट से छुड़ाने

19 तथा प्रभु की कृपादृष्टि का वर्ष के प्रचार के लिए भेजा है."

20 तब उन्होंने पुस्तक बंद करके सेवक के हाथों में दे दी और
स्वयं बैठ गए. सभागृह में हर एक व्यक्ति उन्हें एकटक देख
रहा था.

21 प्रभु येशु ने आगे कहा, "आज आपके सुनते-सुनते यह लेख
पूरा हुआ."

22 सभी प्रभु येशु की सराहना कर रहे थे तथा उनके मुख से
निकलने वाले सुंदर विचारों ने सबको चकित कर रखा था. वे
आपस में पूछ रहे थे, "यह योसेफ़ का ही पुत्र है न?"

23 प्रभु येशु ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "मैं जानता हूं कि
आप मुझसे यह कहना चाहेंगे, 'अरे चिकित्सक! पहले स्वयं
को तो स्वस्थ कर! अपने गृहनगर में भी वह सब कर दिखा,
जो हमने तुझे कफ़रनहूम में करते सुना है.' "

24 प्रभु येशु ने आगे कहा, "वास्तव में कोई भी भविष्यवक्ता
अपने गृहनगर में सम्मान नहीं पाता.

25 सच तो यह है कि एलियाह के समय में जब साढ़े तीन साल
आसमान बंद होकर वर्षा न हुई, इस्राएल राष्ट्र में अनेक
विधवाएं थी, तथा सभी राष्ट्र में भयंकर अकाल पड़ा;

26 एलियाह को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया,
अतिरिक्त उसके, जो सीदोन प्रदेश के ज़रफता नगर में थी.

27 वैसे ही भविष्यवक्ता एलीशा के समय में इस्राएल राष्ट्र में
अनेक कोढ़ रोगी थे किंतु सीरियावासी नामान के अतिरिक्त
कोई भी शुद्ध नहीं किया गया."

28 यह सुनते ही यहूदी सभागृह में इकट्ठा सभी व्यक्ति अत्यंत
क्रोधित हो गए.

29 उन्होंने प्रभु येशु को धक्के मारते हुए नगर के बाहर निकाल
दिया और उन्हें खींचते हुए उस पर्वत शिखर पर ले गए, जिस
पर वह नगर बसा हुआ था कि उन्हें चट्टान पर से नीचे धकेल
दें

30 किंतु प्रभु येशु बचते हुए भीड़ के बीच से निकल गए.

31 वहां से वह गलील प्रदेश के कफ़रनहूम नामक नगर में
आए और शब्बाथ पर लोगों को शिक्षा देने लगे.

Luke 5:1

32 प्रभु येशु की शिक्षा उनके लिए आश्चर्य का विषय थी क्योंकि उनका संदेश अधिकारपूर्ण होता था.

33 सभागृह में एक दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति था. वह ऊंचे शब्द में बोल उठा,

34 "नाज़रेथवासी येशु! क्या चाहते हैं आप? क्या आप हमें नाश करने आए हैं? मैं जानता हूं कि आप कौन हैं; परमेश्वर के पवित्र जन!"

35 "चुप!" प्रभु येशु ने कड़े शब्द में कहा, "उसमें से बाहर निकल आ!" दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को उन सबके सामने भूमि पर पटक दिया और उस व्यक्ति की हानि किए बिना उसमें से निकल गया.

36 यह देख वे सभी चकित रह गए और आपस में कहने लगे, "क्या है यह शब्द! यह बड़े अधिकार तथा सामर्थ्य के साथ दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है और वे मनुष्यों में से बाहर आ जाते हैं!"

37 उनके विषय में यह वर्णन आस-पास के सभी क्षेत्रों में फैल गया.

38 यहूदी सभागृह से निकलकर प्रभु येशु शिमओन के निवास पर गए. वहां शिमओन की सास ज्वर-पीड़ित थी. शिष्यों ने प्रभु येशु से उन्हें स्वस्थ करने की विनती की

39 प्रभु येशु ने उनके पास जाकर ज्वर को फटकारा और ज्वर उन्हें छोड़ चला गया. वह तुरंत बिछौने से उठकर उनकी सेवा टहल में जुट गईं.

40 सूर्यास्त के समय लोग विभिन्न रोगों से पीड़ितों को उनके पास ले आए. प्रभु येशु ने हर एक पर हाथ रख उन्हें रोग से मुक्ति प्रदान की.

41 इसके अतिरिक्त अनेकों में से दुष्टात्मा यह चिल्लाते हुए बाहर निकल गए, "आप तो परमेश्वर के पुत्र हैं!" किंतु प्रभु येशु उन्हें डांट कर बोलने से रोक देते थे क्योंकि दुष्टात्मा उनके मसीह होने के सत्य से परिचित थे.

42 पौ फटते ही प्रभु येशु एक सुनसान स्थल पर चले गए. लोग उन्हें खोजते हुए वहां पहुंच गए. वे प्रयास कर रहे थे कि प्रभु येशु उन्हें छोड़कर न जाएं.

43 प्रभु येशु ने स्पष्ट किया, "यह ज़रूरी है कि मैं अन्य नगरों में भी जाकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार दूं क्योंकि मुझे इसी उद्देश्य से भेजा गया है."

44 इसलिये वह यहूदिया प्रदेश के यहूदी सभागृहों में सुसमाचार का प्रचार करते रहे.

Luke 5:1

1 एक दिन प्रभु येशु गन्नेसरत झील के तट पर खड़े थे. वहां एक बड़ी भीड़ उनसे परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उन पर गिर पड़ रही थी.

2 प्रभु येशु ने तट पर नावें देखीं. मछुवारे उन्हें छोड़कर चले गए थे क्योंकि वे अपने जाल धो रहे थे.

3 प्रभु येशु एक नाव पर बैठ गए, जो शिमओन की थी. उन्होंने शिमओन से नाव को तट से कुछ दूर झील में ले जाने के लिए कहा और तब उन्होंने नाव में बैठकर इकट्ठा भीड़ को शिक्षा देनी प्रारंभ कर दी.

4 जब वह अपना विषय समाप्त कर चुके, शिमओन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, "नाव को गहरे जल में ले चलो और तब जाल डालो."

5 शिमओन प्रभु से बोले, "स्वामी! हम रात भर कठिन परिश्रम कर चुके हैं किंतु हाथ कुछ न लगा, फिर भी, इसलिये कि यह आप कह रहे हैं, मैं जाल डाल देता हूं."

6 यह कहते हुए उन्होंने जाल डाल दिए. जाल में इतनी बड़ी संख्या में मछलियां आ गई कि जाल फटने लगे

7 इसलिये उन्होंने दूसरी नाव के सह मछुआरों को सहायता के लिए बुलाया. उन्होंने आकर सहायता की और दोनों नावों में इतनी मछलियां भर गईं कि बोझ के कारण नावें डूबने लगीं.

Luke 5:1

8 सच्चाई का अहसास होते ही शिमओन प्रभु येशु के चरणों
पर गिर कहने लगे, "आप मुझसे दूर ही रहिए प्रभु, मैं एक पापी
मनुष्य हूं."

9 यह इसलिये कि शिमओन तथा उनके साथी मछुवारे इतनी
मछलियों के पकड़े जाने से अचंभित थे.

10 शिमओन के अन्य साथी, ज़ेबेदियॉस के दोनों पुत्र, याकोब
और योहन भी यह देख भौचक्के रह गए थे. तब प्रभु येशु ने
शिमओन से कहा, "डरो मत! अब से तुम मछलियों को नहीं,
मनुष्यों को मेरे पास लाओगे."

11 इसलिये उन्होंने नावें तट पर लगाई और सब कुछ त्याग कर
प्रभु येशु के पीछे चलने लगे.

12 किसी नगर में एक व्यक्ति था, जिसके सारे शरीर में कोढ़
रोग फैल चुका था. प्रभु येशु को देख उसने भूमि पर गिरकर
उनसे विनती की, "प्रभु! यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर
सकते हैं."

13 प्रभु येशु ने हाथ बढ़ाकर उसका स्पर्श किया और कहा, "मैं
चाहता हूं, शुद्ध हो जाओ!" तत्काल ही उसे कोढ़ रोग से चंगाई
प्राप्त हो गई.

14 प्रभु येशु ने उसे आज्ञा दी, "इसके विषय में किसी से कुछ न
कहना परंतु जाकर पुरोहित को अपने शुद्ध होने का प्रमाण दो
तथा मोशेह द्वारा निर्धारित शुद्धि-बलि भेंट करो कि तुम्हारा
कोढ़ से छुटकारा उनके सामने गवाही हो जाए."

15 फिर भी प्रभु येशु के विषय में समाचार और भी अधिक
फैलता गया. परिणामस्वरूप लोग भारी संख्या में उनके
प्रवचन सुनने और बीमारियों से चंगा होने की अभिलाषा से
उनके पास आने लगे.

16 प्रभु येशु अक्सर भीड़ को छोड़, गुप्त रूप से, एकांत में
जाकर प्रार्थना किया करते थे.

17 एक दिन, जब प्रभु येशु शिक्षा दे रहे थे, फ़रीसी तथा शास्त्री,
जो गलील तथा यहूदिया प्रदेशों तथा येरूशलेम नगर से वहां
आए थे, बैठे हुए थे. रोगियों को स्वस्थ करने का परमेश्वर का
सामर्थ्य प्रभु येशु में सक्रिय था.

18 कुछ व्यक्ति एक लकवे के रोगी को बिछौने पर लिटा कर
वहां लाए. ये लोग रोगी को प्रभु येशु के सामने लाने का प्रयास
कर रहे थे.

19 जब वे भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने में असफल रहे
तो वे छत पर चढ़ गए और छत में से उसके बिछौने सहित
रोगी को प्रभु येशु के ठीक सामने उतार दिया.

20 उनका यह विश्वास देख प्रभु येशु ने कहा, "मित्र! तुम्हारे पाप
क्षमा किए जा चुके हैं."

21 फ़रीसी और शास्त्री अपने मन में विचार करने लगे, "कौन
है यह व्यक्ति, जो परमेश्वर-निंदा कर रहा है? भला परमेश्वर के
अतिरिक्त अन्य कौन पाप क्षमा कर सकता है?"

22 यह जानते हुए कि उनके मन में क्या विचार उठ रहे थे, प्रभु
येशु ने उनसे कहा, "आप अपने मन में इस प्रकार तर्क-वितर्क
क्यों कर रहे हैं?

23 क्या कहना सरल है, 'तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए गए' या
'उठो और चलो'?

24 किंतु इसका उद्देश्य यह है कि तुम्हें यह मालूम हो जाए कि
मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा का अधिकार सौंपा गया
है." तब रोगी से येशु ने कहा, "उठो, अपना बिछौना उठाओ
और अपने घर जाओ."

25 उसी क्षण वह रोगी उन सबके सामने उठ खड़ा हुआ,
अपना बिछौना उठाया, जिस पर वह लेटा हुआ था और
परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए घर चला गया.

26 सभी हैरान रह गए. सभी परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे.
श्रद्धा से भरकर वे कह रहे थे, "हमने आज अनोखे काम होते
देखे हैं."

27 जब वह वहां से जा रहे थे, उनकी दृष्टि एक चुंगी लेनेवाले
पर पड़ी, जिनका नाम लेवी था. वह अपनी चौकी पर बैठे काम
कर रहे थे. प्रभु येशु ने उन्हें आज्ञा दी, "आओ! मेरे पीछे हो
लो!"

Luke 6:1

28 लेवी उठे तथा सभी कुछ वहीं छोड़कर प्रभु येशु के पीछे हो
लिए.

29 प्रभु येशु के सम्मान में लेवी ने अपने घर पर एक बड़े भोज
का आयोजन किया. बड़ी संख्या में चुंगी लेनेवालों के
अतिरिक्त वहां अनेक अन्य व्यक्ति भी इकट्ठा थे.

30 यह देख उस संप्रदाय के फ़रीसी और शास्त्री प्रभु येशु के
शिष्यों से कहने लगे, "तुम लोग चुंगी लेनेवालों तथा अपराधियों
के साथ क्यों खाते-पीते हो?"

31 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "चिकित्सक की ज़रूरत स्वस्थ
व्यक्ति को नहीं, रोगी को होती है;

32 मैं पृथ्वी पर धर्मियों को नहीं परंतु पापियों को बुलाने आया
हूं कि वे पश्चाताप करें."

33 फ़रीसियों और शास्त्रियों ने उन्हें याद दिलाते हुए कहा,
"योहन के शिष्य अक्सर उपवास और प्रार्थना करते हैं.
फ़रीसियों के शिष्य भी यही करते हैं किंतु आपके शिष्य तो
खाते-पीते रहते हैं."

34 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या दूल्हे उपस्थिति में
अतिथियों से उपवास की आशा की जा सकती है?

35 किंतु वह समय आएगा, जब दूल्हा उनके मध्य से हटा लिया
जाएगा—वे उस समय उपवास करेंगे."

36 प्रभु येशु ने उनके सामने यह दृष्टांत प्रस्तुत किया, "पुराने
वस्त्र पर नये वस्त्र का जोड़ नहीं लगाया जाता. यदि कोई ऐसा
करता है तब कोरा वस्त्र तो नाश होता ही है साथ ही वह जोड़
पुराने वस्त्र पर अशोभनीय भी लगता है.

37 वैसे ही नया दाखरस पुरानी मश्कों में रखा नहीं जाता. यदि
कोई ऐसा करे तो नया दाखरस मश्कों को फाड़कर बह
जाएगा और मश्के भी नाश हो जाएगी.

38 नया दाखरस नई मश्कों में ही रखा जाता है.

39 पुराने दाखरस का पान करने के बाद कोई भी नए दाखरस
की इच्छा नहीं करता क्योंकि वे कहते हैं, 'पुराना दाखरस ही
उत्तम है.' "

Luke 6:1

1 एक शब्बाथ पर प्रभु येशु अन्न के खेत से होकर जा रहे थे.
उनके शिष्यों ने बालें तोड़कर, मसल-मसल कर खाना प्रारंभ
कर दिया.

2 यह देख कुछ फ़रीसियों ने कहा, "आप शब्बाथ पर यह काम
क्यों कर रहे हैं, जो नियम विरुद्ध?"

3 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या आपने यह कभी नहीं पढ़ा
कि भूख लगने पर दावीद और उनके साथियों ने क्या किया
था?

4 दावीद ने परमेश्वर के भवन में प्रवेश कर वह समर्पित रोटी
खाई, जिसका खाना पुरोहितों के अतिरिक्त किसी अन्य के
लिए नियम विरुद्ध था? यही रोटी उन्होंने अपने साथियों को भी
दी."

5 प्रभु येशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र शब्बाथ का प्रभु है."

6 एक अन्य शब्बाथ पर प्रभु येशु यहूदी सभागृह में शिक्षा देने
लगे. वहां एक व्यक्ति था, जिसका दायां हाथ लक़वा मारा हुआ
था.

7 फ़रीसी और शास्त्री इस अवसर की ताक में थे कि शब्बाथ
पर प्रभु येशु इस व्यक्ति को स्वस्थ करें और वह उन पर दोष
लगा सकें.

8 प्रभु येशु को उनके मनों में उठ रहे विचारों का पूरा पता था.
उन्होंने उस व्यक्ति को, जिसका हाथ सूखा हुआ था, आज्ञा दी,
"उठो! यहां सबके मध्य खड़े हो जाओ." वह उठकर वहां खड़ा
हो गया.

9 तब प्रभु येशु ने फ़रीसियों और शास्त्रियों को संबोधित कर
प्रश्न किया, "यह बताइए, शब्बाथ पर क्या करना उचित है;
भलाई या बुराई? जीवन रक्षा या विनाश?"

Luke 6:1

10 उन सब पर एक दृष्टि डालते हुए प्रभु येशु ने उस व्यक्ति को
आज्ञा दी, “अपना हाथ बढ़ाओ!” उसने ऐसा ही किया—
उसका हाथ स्वस्थ हो गया था.

11 यह देख फ़रीसी और शास्त्री क्रोध से जलने लगे. वे आपस
में विचार-विमर्श करने लगे कि प्रभु येशु के साथ अब क्या
किया जाए.

12 एक दिन प्रभु येशु पर्वत पर प्रार्थना करने चले गए और सारी
रात वह परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे.

13 प्रातःकाल उन्होंने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और
उनमें से बारह को चुनकर उन्हें प्रेरित पद प्रदान किया.

14 शिमओन, (जिन्हें वह पेतरॉस नाम से पुकारते थे) उनके
भाई आन्द्रेयास, याकोब, योहन, फ़िलिप्पॉस, बारथोलोमेयॉस

15 मत्तियाह, थोमॉस, हलफ़ेयॉस के पुत्र याकोब, राष्ट्रवादी
शिमओन,

16 याकोब के पुत्र यहूदाह, तथा कारियोतवासी यहूदाह, जिसने
उनके साथ धोखा किया.

17 प्रभु येशु उनके साथ पर्वत से उतरे और आकर एक समतल
स्थल पर खड़े हो गए. येरूशलेम तथा समुद्र के किनारे के
नगर सोर और सीदोन से आए लोगों तथा सुननेवालों का एक
बड़ा समूह वहां इकट्ठा था,

18 जो उनके प्रवचन सुनने और अपने रोगों से चंगाई के उद्देश्य
से वहां आया था. इस समूह में दुष्टात्मा से पीड़ित भी शामिल
थे, जिन्हें प्रभु येशु दुष्टात्मा मुक्त करते जा रहे थे.

19 सभी लोग उन्हें छूने का प्रयास कर रहे थे क्योंकि उनसे
निकली हुई सामर्थ्य उन सभी को स्वस्थ कर रही थी.

20 अपने शिष्यों की ओर दृष्टि करते हुए प्रभु येशु ने उनसे कहा:
“धन्य हो तुम सभी जो निर्धन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य
तुम्हारा है.

21 धन्य हो तुम जो भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त किए जाओगे.
धन्य हो तुम जो इस समय रो रहे हो, क्योंकि तुम आनंदित
होगे.

22 धन्य हो तुम सभी जिनसे सभी मनुष्य घृणा करते हैं, तुम्हारा
बहिष्कार करते हैं, तुम्हारी निंदा करते हैं, तुम्हारे नाम को
मनुष्य के पुत्र के कारण बुराई करनेवाला घोषित कर देते हैं.

23 “उस दिन आनंदित होकर हर्षोल्लास में उछलो-कूदो,
क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा फल होगा. उनके पूर्वजों ने
भी भविष्यद्वक्ताओं को इसी प्रकार सताया था.

24 “धिक्कार है तुम पर! तुम जो धनी हो, तुम अपने सारे सुख
भोग चुके.

25 धिक्कार है तुम पर! तुम जो अब तृप्त हो, क्योंकि तुम्हारे
लिए भूखा रहना निर्धारित है. धिक्कार है तुम पर! तुम जो इस
समय हंस रहे हो, क्योंकि तुम शोक तथा विलाप करोगे.

26 धिक्कार है तुम पर! जब सब मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करते हैं
क्योंकि उनके पूर्वज झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ यही किया
करते थे.”

27 “किंतु तुम, जो इस समय मेरे प्रवचन सुन रहे हो, अपने
शत्रुओं से प्रेम करो तथा उनके साथ भलाई, जो तुमसे घृणा
करते हैं.

28 जो तुम्हें शाप देते हैं उनको आशीष दो, और जो तुम्हारे साथ
दुर्व्यवहार करें उनके लिए प्रार्थना करो.

29 यदि कोई तुम्हारे एक गाल पर प्रहार करे उसकी ओर
दूसरा भी फेर दो. यदि कोई तुम्हारी चादर लेना चाहे तो उसे
अपना कुर्ता भी देने में संकोच न करो.

30 जब भी कोई तुमसे कुछ मांगे तो उसे अवश्य दो और यदि
कोई तुम्हारी कोई वस्तु ले ले तो उसे वापस न मांगो

31 अन्यों के साथ तुम्हारा व्यवहार वैसा ही हो जैसे व्यवहार की
आशा तुम उनसे करते हो.

Luke 7:1

32 “यदि तुम उन्हीं से प्रेम करते हो, जो तुमसे प्रेम करते हैं तो
इसमें तुम्हारी क्या प्रशंसा? क्योंकि दुर्जन भी तो यही करते हैं.

33 वैसे ही यदि तुम उन्हीं के साथ भलाई करते हो, जिन्होंने
तुम्हारे साथ भलाई की है, तो इसमें तुम्हारी क्या प्रशंसा?
क्योंकि दुर्जन भी तो यही करते हैं.

34 और यदि तुम उन्हीं को कर्ज़ देते हो, जिनसे राशि वापस
प्राप्त करने की आशा होती है तो तुमने कौन सा प्रशंसनीय
काम कर दिखाया? ऐसा तो परमेश्वर से दूर रहनेवाले लोग भी
करते हैं—इस आशा में कि उनकी सारी राशि उन्हें लौटा दी
जाएगी.

35 सही तो यह है कि तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उनका
उपकार करो और कुछ भी वापस प्राप्त करने की आशा किए
बिना उन्हें कर्ज़ दे दो. तब तुम्हारा ईनाम असाधारण होगा और
तुम परम प्रधान की संतान ठहराए जाओगे क्योंकि वह उनके
प्रति भी कृपालु हैं, जो उपकार नहीं मानते और बुरे हैं.

36 कृपालु बनो, ठीक वैसे ही, जैसे तुम्हारे पिता कृपालु हैं.

37 “किसी का न्याय मत करो तो तुम्हारा भी न्याय नहीं किया
जाएगा. किसी पर दोष मत लगाओ तो तुम पर भी दोष नहीं
लगाया जाएगा. क्षमा करो तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा.

38 उदारतापूर्वक दो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा—पूरा नाप दबा-
दबा कर और हिला-हिला कर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी
झोली में उंडेल (यानी अत्यंत उदारतापूर्वक) देंगे. देने के
तुम्हारे नाप के अनुसार ही तुम प्राप्त करोगे.”

39 प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा भी शिक्षा दी. “क्या कोई
अंधा दूसरे अंधे का मार्गदर्शन कर सकता है? क्या वे दोनों ही
गड्ढे में न गिरेंगे?

40 विद्यार्थी अपने शिक्षक से बढ़कर नहीं है परंतु हर एक,
जिसने शिक्षा पूरी कर ली है, वह अपने शिक्षक के समान होगा.

41 “तुम भला अपने भाई की आंख के कण की ओर उंगली
क्यों उठाते हो जबकि तुम स्वयं अपनी आंख में पड़े लट्ठे की
ओर ध्यान नहीं देते?

42 या तुम भला यह कैसे कह सकते हो ‘ज़रा ठहरो, मैं तुम्हारी
आंख से वह कण निकाल देता हूं,’ जबकि तुम्हारी अपनी आंख
में तो लट्ठा पड़ा हुआ देख नहीं सकते हो? अरे पाखंडी! पहले
तो स्वयं अपनी आंख में से उस लट्ठे को तो निकाल! तभी तू
स्पष्ट रूप से देख सकेगा और अपने भाई की आंख में से उस
कण को निकाल सकेगा.”

43 “कोई भी अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं लाता और न बुरा पेड़
अच्छा फल.

44 हर एक पेड़ उसके अपने फलों के द्वारा पहचाना जाता है.
कंटीले वृक्षों में से लोग अंजीर या कंटीली झाड़ियों में से अंगूर
इकट्ठा नहीं किया करते.

45 भला व्यक्ति हृदय में भरे हुए उत्तम भंडार में से उत्तम ही
निकालता है तथा बुरा व्यक्ति अपने हृदय में भरे हुए बुरे भंडार
में से बुरा; क्योंकि उसका मुख उसके हृदय में भरी हुई
वस्तुओं में से ही निकालता है.”

46 “तुम लोग मुझे, प्रभु, प्रभु कहकर क्यों पुकारते हो जबकि
मेरी आज्ञाओं का पालन ही नहीं करते?

47 मैं तुम्हें बताऊंगा कि वह व्यक्ति किस प्रकार का है, जो मेरे
पास आता है, मेरे संदेश को सुनता तथा उसका पालन करता
है:

48 वह उस घर बनानेवाले के जैसा है, जिसने गहरी खुदाई
करके चट्टान पर नींव डाली. मूसलाधार बारिश के तेज बहाव
ने उस घर पर ठोकरें मारी किंतु उसे हिला न पाया क्योंकि वह
घर मजबूत था.

49 वह व्यक्ति, जो मेरे संदेश को सुनता है किंतु उसका पालन
नहीं करता, उस व्यक्ति के समान है, जिसने भूमि पर बिना
नींव के घर बनाया और जिस क्षण उस पर तेज बहाव ने ठोकरें
मारी, वह ढह गया और उसका सर्वनाश हो गया.”

Luke 7:1

1 लोगों को ऊपर लिखी शिक्षा देने के बाद प्रभु येशु
कफ़रनहूम नगर लौट गए.

Luke 7:1

2 वहां एक शताधिपति का एक अत्यंत प्रिय सेवक रोग से
बिस्तर पर था. रोग के कारण वह लगभग मरने पर था.

3 प्रभु येशु के विषय में मालूम होने पर सेनापति ने कुछ वरिष्ठ
यहूदियों को प्रभु येशु के पास इस विनती के साथ भेजा, कि
वह आकर उसके सेवक को चंगा करें.

4 उन्होंने प्रभु येशु के पास आकर उनसे विनती कर कहा, "यह
सेनापति निश्चय ही आपकी इस दया का पात्र है

5 क्योंकि उसे हमारी जनता से प्रेम है तथा उसने हमारे लिए
सभागृह भी बनाया है."

6 इसलिये प्रभु येशु उनके साथ चले गए. प्रभु येशु उसके घर
के पास पहुंचे ही थे कि शताधिपति ने अपने मित्रों के द्वारा उन्हें
संदेश भेजा, "प्रभु! आप कष्ट न कीजिए. मैं इस योग्य नहीं हूं
कि आप मेरे घर पधारें.

7 अपनी इसी अयोग्यता को ध्यान में रखते हुए मैं स्वयं आपसे
भेंट करने नहीं आया. आप मात्र वचन कह दीजिए और मेरा
सेवक स्वस्थ हो जाएगा.

8 मैं स्वयं बड़े अधिकारियों के अधीन नियुक्त हूं और सैनिक
मेरे अधिकार में हैं. मैं किसी को आदेश देता हूं, 'जाओ!' तो
वह जाता है और किसी को आदेश देता हूं, 'इधर आओ!' तो
वह आता है. अपने सेवक से कहता हूं, 'यह करो!' तो वह वही
करता है."

9 यह सुनकर प्रभु येशु अत्यंत चकित हुए और मुड़कर पीछे
आ रही भीड़ को संबोधित कर बोले, "मैं यह बताना सही
समझता हूं कि मुझे इस्राएलियों तक में ऐसा दृढ़ विश्वास देखने
को नहीं मिला."

10 वे, जो सेनापति द्वारा प्रभु येशु के पास भेजे गए थे, जब घर
लौटे तो यह पाया कि वह सेवक स्वस्थ हो चुका था.

11 इसके कुछ ही समय बाद प्रभु येशु नाइन नामक एक नगर
को गए. एक बड़ी भीड़ और उनके शिष्य उनके साथ थे.

12 जब वह नगर द्वार पर पहुंचे, एक मृत व्यक्ति अंतिम संस्कार
के लिए बाहर लाया जा रहा था—अपनी माता का एकलौता
पुत्र और वह स्वयं विधवा थी; और उसके साथ नगर की एक
बड़ी भीड़ थी.

13 उसे देख प्रभु येशु करुणा से भर उठे. उन्होंने उससे कहा,
"रोओ मत!"

14 तब उन्होंने जाकर उस अर्थी को स्पर्श किया. यह देख वे,
जिन्होंने उसे उठाया हुआ था, रुक गए. तब प्रभु येशु ने कहा,
"युवक! मैं तुमसे कहता हूं, उठ जाओ!"

15 मृतक उठ बैठा और वार्तालाप करने लगा. प्रभु येशु ने माता
को उसका जीवित पुत्र सौंप दिया.

16 वे सभी श्रद्धा में परमेश्वर का धन्यवाद करने लगे. वे कह रहे
थे, "हमारे मध्य एक तेजस्वी भविष्यवक्ता का आगमन हुआ
है. परमेश्वर ने अपनी प्रजा की सुधि ली है."

17 प्रभु येशु के विषय में यह समाचार यहूदिया प्रदेश तथा पास
के क्षेत्रों में फैल गया.

18 योहन के शिष्यों ने उन्हें इस विषय में सूचना दी.

19 योहन ने अपने दो शिष्यों को प्रभु के पास इस प्रश्न के साथ
भेजा, "क्या आप वही हैं जिनके आगमन की प्रतीक्षा की जा
रही है, या हम किसी अन्य की प्रतीक्षा करें?"

20 जब वे दोनों प्रभु येशु के पास पहुंचे उन्होंने कहा, "बपतिस्मा
देनेवाले योहन ने हमें आपके पास यह पूछने भेजा है, 'क्या
आप वही हैं, जिनके आगमन की प्रतीक्षा की जा रही है, या हम
किसी अन्य की प्रतीक्षा करें?' "

21 ठीक उसी समय प्रभु येशु अनेकों को स्वस्थ कर रहे थे, जो
रोगी, पीड़ित और दुष्टात्मा के सताए हुए थे. वह अनेक अंधों
को भी दृष्टि प्रदान कर रहे थे.

22 इसलिये प्रभु येशु ने उन दूतों उत्तर दिया, "तुमने जो कुछ
सुना और देखा है उसकी सूचना योहन को दे दो: अंधे दृष्टि पा
रहे हैं, अपंग चल रहे हैं, कोढ़ी शुद्ध होते जा रहे हैं, बहरे सुनने

Luke 7:1

लगे हैं, मृतक जीवित किए जा रहे हैं तथा कंगालों में सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है.

23 धन्य है वह, जिसका विश्वास मुझ पर से नहीं उठता."

24 योहन का संदेश लानेवालों के विदा होने के बाद प्रभु येशु ने भीड़ से योहन के विषय में कहना प्रारंभ किया, "तुम्हारी आशा बंजर भूमि में क्या देखने की थी? हवा में हिलते हुए सरकंडे को?

25 यदि यह नहीं तो फिर क्या देखने गए थे? कीमती वस्त्र धारण किए हुए किसी व्यक्ति को? जो ऐसे वस्त्र धारण करते हैं उनका निवास तो राजमहलों में होता है.

26 तुम क्यों गए थे? किसी भविष्यवक्ता से भेंट करने? हां! मैं तुम्हें बता रहा हूं कि यह वह हैं, जो भविष्यवक्ता से भी बढ़कर हैं

27 यह वही हैं, जिनके विषय में लिखा गया है: " 'मैं अपना दूत तुम्हारे आगे भेज रहा हूं, जो तुम्हारे आगे-आगे चलकर तुम्हारे लिए मार्ग तैयार करेगा.'

28 सच तो यह है कि आज तक जितने भी मनुष्य हुए हैं उनमें से एक भी (बपतिस्मा देनेवाले) योहन से बढ़कर नहीं. फिर भी, परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा भी योहन से बढ़कर है."

29 जब सभी लोगों ने, यहां तक कि चुंगी लेनेवालों ने, प्रभु येशु के वचन, सुने तो उन्होंने योहन का बपतिस्मा लेने के द्वारा यह स्वीकार किया कि परमेश्वर की योजना सही है.

30 किंतु फ़रीसियों और शास्त्रियों ने बपतिस्मा न लेकर उनके लिए तय परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया.

31 प्रभु येशु ने आगे कहा, "इस पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किससे करूं? किसके समान हैं ये?

32 ये बाजार में बैठे हुए उन बालकों के समान हैं, जो एक दूसरे से पुकार-पुकारकर कह रहे हैं: " 'हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, किंतु तुम नहीं नाचे, हमने तुम्हारे लिए शोक गीत भी गाया, फिर भी तुम न रोए.'

33 बपतिस्मा देनेवाले योहन रोटी नहीं खाते थे और दाखरस का सेवन भी नहीं करते थे इसलिये तुमने घोषित कर दिया, 'उसमें दुष्टात्मा का वास है.'

34 मनुष्य के पुत्र का खान-पान सामान्य है और तुम घोषणा करते हैं, 'अरे, वह तो पेटू और पियक्कड़ है; वह तो चुंगी लेनेवालों और अपराधी व्यक्तियों का मित्र है!' बुद्धि अपनी संतान द्वारा साबित हुई है

35 फिर भी ज्ञान की सच्चाई उसकी सभी संतानों द्वारा प्रकट की गई है."

36 एक फ़रीसी ने प्रभु येशु को भोज पर आमंत्रित किया. प्रभु येशु आमंत्रण स्वीकार कर वहां गए और भोजन के लिए बैठ गए.

37 नगर की एक पापिन स्त्री, यह मालूम होने पर कि प्रभु येशु वहां आमंत्रित हैं, संगमरमर के बर्तन में इत्र लेकर आई

38 और उनके चरणों के पास रोती हुई खड़ी हो गई. उसके आंसुओं से उनके पांव भीगने लगे. तब उसने प्रभु के पावों को अपने बालों से पोंछा, उनके पावों को चूमा तथा उस इत्र को उनके पावों पर उंडेल दिया.

39 जब उस फ़रीसी ने, जिसने प्रभु येशु को आमंत्रित किया था, यह देखा तो मन में विचार करने लगा, "यदि यह व्यक्ति वास्तव में भविष्यवक्ता होता तो अवश्य जान जाता कि जो स्त्री उसे छू रही है, वह कौन है—एक पापी स्त्री!"

40 प्रभु येशु ने उस फ़रीसी को कहा, "शिमओन, मुझे तुमसे कुछ कहना है." "कहिए, गुरुवर," उसने कहा.

41 प्रभु येशु ने कहा, "एक साहूकार के दो कर्ज़दार थे—एक पांच सौ दीनार का तथा दूसरा पचास का.

42 दोनों ही कर्ज़ चुकाने में असमर्थ थे इसलिये उस साहूकार ने दोनों ही के कर्ज़ क्षमा कर दिए. यह बताओ, दोनों में से कौन उस साहूकार से अधिक प्रेम करेगा?"

43 शिमओन ने उत्तर दिया, “मेरे विचार से वह, जिसकी बड़ी
राशि क्षमा की गई.” “तुमने सही उत्तर दिया,” प्रभु येशु ने कहा.

44 तब उस स्त्री से उन्मुख होकर प्रभु येशु ने शिमओन से कहा,
“इस स्त्री की ओर देखो. मैं तुम्हारे घर आया, तुमने तो मुझे पांव
धोने के लिए भी जल न दिया किंतु इसने अपने आंसुओं से मेरे
पांव भिगो दिए और अपने केशों से उन्हें पोंछ दिया.

45 तुमने चुंबन से मेरा स्वागत नहीं किया किंतु यह स्त्री मेरे
पांवों को चूमती रही.

46 तुमने मेरे सिर पर तेल नहीं मला किंतु इसने मेरे पांवों पर
इत्र उंडेल दिया है.

47 मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि यह मुझसे इतना अधिक प्रेम
इसलिये करती है कि इसके बहुत पाप क्षमा कर दिए गए हैं;
किंतु वह, जिसके थोड़े ही पाप क्षमा किए गए हैं, प्रेम भी थोड़ा
ही करता है.”

48 तब प्रभु येशु ने उस स्त्री से कहा, “तुम्हारे पाप क्षमा कर दिए
गए हैं.”

49 आमंत्रित अतिथि आपस में विचार-विमर्श करने लगे, “कौन
है यह, जो पाप भी क्षमा करता है?”

50 प्रभु येशु ने उस स्त्री से कहा, “तुम्हारा विश्वास ही तुम्हारे
उद्धार का कारण है. शांति में विदा हो जाओ.”

Luke 8:1

1 इसके बाद शीघ्र ही प्रभु येशु परमेश्वर के राज्य की घोषणा
तथा प्रचार करते हुए नगर-नगर और गांव-गांव फिरने लगे.
बारहों शिष्य उनके साथ साथ थे.

2 इनके अतिरिक्त कुछ वे स्त्रियां भी उनके साथ यात्रा कर रही
थी, जिन्हें रोगों और दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया गया था:
मगदालावासी मरियम, जिसमें से सात दुष्टात्मा निकाले गए थे,

3 हेरोदेस के भंडारी कूज़ा की पत्नी योहान्ना, सूज़न्ना तथा अन्य
स्त्रियां. ये वे स्त्रियां थी, जो अपनी संपत्ति से इनकी सहायता
कर रही थी.

4 जब नगर-नगर से बड़ी भीड़ इकट्ठा हो रही थी और लोग प्रभु
येशु के पास आ रहे थे, प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा
शिक्षा दी.

5 “एक किसान बीज बोने के लिए निकला. बीज बोने में कुछ
बीज तो मार्ग के किनारे गिरे, पैरों के नीचे कुचले गए तथा
आकाश के पक्षियों ने उन्हें चुग लिया.

6 कुछ पथरीली भूमि पर जा पड़े, वे अंकुरित तो हुए परंतु नमी
न होने के कारण मुरझा गए.

7 कुछ बीज कंटीली झाड़ियों में जा पड़े और झाड़ियों ने उनके
साथ बड़े होते हुए उन्हें दबा दिया.

8 कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, बड़े हुए और फल लाए—
जितना बोया गया था उससे सौ गुणा.” जब प्रभु येशु यह दृष्टांत
सुना चुके तो उन्होंने ऊंचे शब्द में कहा, “जिसके सुनने के
कान हों वह सुन ले.”

9 उनके शिष्यों ने उनसे प्रश्न किया, “इस दृष्टांत का अर्थ क्या
है?”

10 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य का
भेद जानने की क्षमता प्रदान की गई है किंतु अन्यों के लिए मुझे
दृष्टान्तों का प्रयोग करना पड़ता हैं जिससे कि, “ ‘वे देखते हुए
भी न देखें; और सुनते हुए भी न समझें.’

11 “इस दृष्टांत का अर्थ यह है: बीज परमेश्वर का वचन है.

12 मार्ग के किनारे की भूमि वे लोग हैं, जो वचन सुनते तो हैं
किंतु शैतान आता है और उनके मन से वचन उठा ले जाता है
कि वे विश्वास करके उद्धार प्राप्त न कर सकें

13 पथरीली भूमि वे लोग हैं, जो परमेश्वर के वचन को सुनने पर
खुशी से स्वीकारते हैं किंतु उनमें जड़ न होने के कारण वे

Luke 8:1

विश्वास में थोड़े समय के लिए ही स्थिर रह पाते हैं. कठिन परिस्थितियों में घिरने पर वे विश्वास से दूर हो जाते हैं.

14 वह भूमि जहां बीज कंटीली झाड़ियों के मध्य गिरा, वे लोग हैं, जो सुनते तो हैं किंतु जब वे जीवनपथ पर आगे बढ़ते हैं, जीवन की चिंताएं, धन तथा विलासिता उनका दमन कर देती हैं और वे मजबूत हो ही नहीं पाते.

15 इसके विपरीत उत्तम भूमि वे लोग हैं, जो भले और निष्कपट हृदय से वचन सुनते हैं और उसे दृढतापूर्वक थामे रहते हैं तथा निरंतर फल लाते हैं.

16 “कोई भी दीपक को जलाकर न तो उसे बर्तन से ढांकता है और न ही उसे पलंग के नीचे रखता है परंतु उसे दीवट पर रखता है कि कमरे में प्रवेश करने पर लोग देख सकें.

17 ऐसा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है जिसे प्रकट न किया जाएगा तथा ऐसा कोई रहस्य नहीं जिसे उजागर कर सामने न लाया जाएगा.

18 इसलिये इसका विशेष ध्यान रखो कि तुम कैसे सुनते हो. जिस किसी के पास है, उसे और भी दिया जाएगा तथा जिस किसी के पास नहीं है, उसके पास से वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके विचार से उसका है.”

19 तब प्रभु येशु की माता और उनके भाई उनसे भेंट करने वहां आए किंतु लोगों की भीड़ के कारण वे उनके पास पहुंचने में असमर्थ रहे.

20 किसी ने प्रभु येशु को सूचना दी, “आपकी माता तथा भाई बाहर खड़े हैं—वे आपसे भेंट करना चाह रहे हैं.”

21 प्रभु येशु ने कहा, “मेरी माता और भाई वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते तथा उसका पालन करते हैं.”

22 एक दिन प्रभु येशु ने शिष्यों से कहा, “आओ, हम झील की दूसरी ओर चलें.” इसलिये वे सब नाव में बैठकर चल दिए.

23 जब वे नाव खे रहे थे प्रभु येशु सो गए. उसी समय झील पर प्रचंड बवंडर उठा, यहां तक कि नाव में जल भरने लगा और उनका जीवन खतरे में पड़ गया.

24 शिष्यों ने जाकर प्रभु येशु को जगाते हुए कहा, “स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जा रहे हैं!” प्रभु येशु उठे. और बवंडर और तेज लहरों को डांटा; बवंडर थम गया तथा तेज लहरें शांत हो गईं.

25 “कहां है तुम्हारा विश्वास?” प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से प्रश्न किया. भय और अचंभे में वे एक दूसरे से पूछने लगे, “कौन हैं यह, जो बवंडर और लहरों तक को आदेश देते हैं और वे भी उनके आदेशों का पालन करती हैं!”

26 इसके बाद वे गिरासेन प्रदेश में आए, जो गलील झील के दूसरी ओर है.

27 जब प्रभु येशु तट पर उतरे, उनकी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हो गई, जिसमें अनेक दुष्टात्मा समाये हुए थे. दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति उनके पास आ गया. यह व्यक्ति लंबे समय से कपड़े न पहनता था. वह मकान में नहीं परंतु कब्रों की गुफाओं में रहता था.

28 प्रभु येशु पर दृष्टि पड़ते ही वह चिल्लाता हुआ उनके चरणों में जा गिरा और अत्यंत ऊंचे शब्द में चिल्लाया, “येशु! परम प्रधान परमेश्वर के पुत्र! मेरा और आपका एक दूसरे से क्या लेना देना? आपसे मेरी विनती है कि आप मुझे कष्ट न दें,”

29 क्योंकि प्रभु येशु दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से निकल जाने की आज्ञा दे चुके थे. समय समय पर दुष्टात्मा उस व्यक्ति पर प्रबल हो जाया करता था तथा लोग उसे सांकलों और बेड़ियों में बांधकर पहरे में रखते थे, फिर भी वह दुष्टात्मा बेड़ियां तोड़ उसे सुनसान स्थान में ले जाता था.

30 प्रभु येशु ने उससे प्रश्न किया, “क्या नाम है तुम्हारा?” “विशाल सेना,” उसने उत्तर दिया क्योंकि अनेक दुष्टात्मा उसमें समाए हुए थे.

31 दुष्टात्मा-गण प्रभु येशु से निरंतर विनती कर रहे थे कि वह उन्हें पाताल में न भेजें.

Luke 8:1

32 वहीं पहाड़ी के ढाल पर सूअरों का एक विशाल समूह चर
रहा था. दुष्टात्माओं ने प्रभु येशु से विनती की कि वह उन्हें
सूअरों में जाने की अनुमति दे दें. प्रभु येशु ने उन्हें अनुमति दे
दी.

33 जब दुष्टात्मा उस व्यक्ति में से बाहर आए, उन्होंने तुरंत
जाकर सूअरों में प्रवेश किया और सूअर ढाल से झपटकर
दौड़ते हुए झील में जा डूबे.

34 इन सूअरों के चरवाहे यह देख दौड़कर गए और नगर तथा
उस प्रदेश में सब जगह इस घटना के विषय में बताने लगे.

35 लोग वहां यह देखने आने लगे कि क्या हुआ है. तब वे प्रभु
येशु के पास आए. वहां उन्होंने देखा कि वह व्यक्ति, जो पहले
दुष्टात्मा से पीड़ित था, वस्त्र धारण किए हुए, पूरी तरह स्वस्थ
और सचेत प्रभु येशु के चरणों में बैठा हुआ है. यह देख वे हैरान
रह गए.

36 जिन्होंने यह सब देखा, उन्होंने जाकर अन्यों को सूचित
किया कि यह दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्ति किस प्रकार दुष्टात्मा
से मुक्त हुआ है.

37 तब गिरासेन प्रदेश तथा पास के क्षेत्रों के सभी निवासियों ने
प्रभु येशु को वहां से दूर चले जाने को कहा क्योंकि वे अत्यंत
भयभीत हो गए थे. इसलिये प्रभु येशु नाव द्वारा वहां से चले गए.

38 वह व्यक्ति जिसमें से दुष्टात्मा निकाला गया था उसने प्रभु
येशु से विनती की कि वह उसे अपने साथ ले लें किंतु प्रभु येशु
ने उसे यह कहते हुए विदा किया,

39 “अपने परिजनों में लौट जाओ तथा इन बड़े-बड़े कामों का
वर्णन करो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे लिए किए हैं.” इसलिये वह
लौटकर सभी नगर में यह वर्णन करने लगा कि प्रभु येशु ने
उसके लिए कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं.

40 जब प्रभु येशु झील की दूसरी ओर पहुंचे, वहां इंतजार करती
भीड़ ने उनका स्वागत किया.

41 जाइरूस नामक एक व्यक्ति, जो यहूदी सभागृह का प्रधान
था, उनसे भेंट करने आया. उसने प्रभु येशु के चरणों पर
गिरकर उनसे विनती की कि वह उसके साथ उसके घर जाएं

42 क्योंकि उसकी एकमात्र बेटी, जो लगभग बारह वर्ष की थी,
मरने पर थी. जब प्रभु येशु वहां जा रहे थे, मार्ग में वह भीड़ में
दबे जा रहे थे.

43 वहां बारह वर्ष से लहूस्राव-पीड़ित एक स्त्री थी. उसने
अपनी सारी जीविका वैद्यों पर खर्च कर दी थी, पर वह किसी
भी इलाज से स्वस्थ न हो पाई थी.

44 इस स्त्री ने पीछे से आकर येशु के वस्त्र के छोर को छुआ,
और उसी क्षण उसका लहू बहना बंद हो गया.

45 “किसने मुझे छुआ है?” प्रभु येशु ने पूछा. जब सभी इससे
इनकार कर रहे थे, पेतरॉस ने उनसे कहा, “स्वामी! यह बढ़ती
हुई भीड़ आप पर गिरी जा रही है.”

46 किंतु प्रभु येशु ने उनसे कहा, “किसी ने तो मुझे छुआ है
क्योंकि मुझे यह पता चला है कि मुझमें से सामर्थ्य निकली है.”

47 जब उस स्त्री ने यह समझ लिया कि उसका छुपा रहना
असंभव है, भय से कांपती हुई सामने आई और प्रभु येशु के
चरणों में गिर पड़ी. उसने सभी उपस्थित भीड़ के सामने यह
स्वीकार किया कि उसने प्रभु येशु को क्यों छुआ था तथा कैसे
वह तत्काल रोग से चंगी हो गई.

48 इस पर प्रभु येशु ने उससे कहा, “बेटी! तुम्हारे विश्वास ने
तुम्हें स्वस्थ किया है. परमेश्वर की शांति में लौट जाओ.”

49 जब प्रभु येशु यह कह ही रहे थे, यहूदी सभागृह प्रधान
जाइरूस के घर से किसी व्यक्ति ने आकर सूचना दी,
“आपकी पुत्री की मृत्यु हो चुकी है, अब गुरुवर को कष्ट न
दीजिए.”

50 यह सुन प्रभु येशु ने जाइरूस को संबोधित कर कहा, “डरो
मत! केवल विश्वास करो और वह स्वस्थ हो जाएगी.”

51 जब वे जाइरूस के घर पर पहुंचे, प्रभु येशु ने पेतरॉस, योहन
और याकोब तथा कन्या के माता-पिता के अतिरिक्त अन्य
किसी को अपने साथ भीतर आने की अनुमति नहीं दी.

52 उस समय सभी उस बालिका के लिए रो-रोकर शोक प्रकट
कर रहे थे. “बंद करो यह रोना-चिल्लाना!” प्रभु येशु ने आज्ञा
दी, “उसकी मृत्यु नहीं हुई है—वह सिर्फ सो रही है.”

53 इस पर वे प्रभु येशु पर हंसने लगे क्योंकि वे जानते थे कि
बालिका की मृत्यु हो चुकी है.

54 प्रभु येशु ने बालिका का हाथ पकड़कर कहा, “बेटी, उठो!”

55 उसके प्राण उसमें लौट आए और वह तुरंत खड़ी हो गई.
प्रभु येशु ने उनसे कहा कि बालिका को खाने के लिए कुछ
दिया जाए.

56 उसके माता-पिता चकित रह गए किंतु प्रभु येशु ने उन्हें
निर्देश दिया कि जो कुछ हुआ है, उसकी चर्चा किसी से न करें.

Luke 9:1

1 प्रभु येशु ने बारहों शिष्यों को बुलाकर उन्हें दुष्टात्माओं को
निकालने तथा रोग दूर करने का सामर्थ्य और अधिकार प्रदान
किया

2 तथा उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने तथा रोगियों को
स्वस्थ करने के लिए भेज दिया.

3 प्रभु येशु ने उन्हें निर्देश दिए, “यात्रा के लिए अपने साथ कुछ
न रखना—न छड़ी, न झोला, न रोटी, न पैसा और न ही कोई
बाहरी वस्त्र.

4 तुम जिस किसी घर में मेहमान होकर रहो, नगर से विदा होने
तक उसी घर के मेहमान बने रहना.

5 यदि लोग तुम्हें स्वीकार न करें तब उस नगर से बाहर जाते
हुए अपने पैरों की धूल झाड़ देना कि यह उनके विरुद्ध गवाही
हो.”

6 वे चल दिए तथा सुसमाचार का प्रचार करते और रोगियों को
स्वस्थ करते हुए सब जगह यात्रा करते रहे.

7 जो कुछ हो रहा था उसके विषय में हेरोदेस ने भी सुना और
वह अत्यंत घबरा गया क्योंकि कुछ लोग कह रहे थे कि
बपतिस्मा देनेवाले योहन मरे हुओं में से दोबारा जीवित हो गए
हैं.

8 कुछ अन्य कह रहे थे कि एलियाह प्रकट हुए हैं तथा कुछ
अन्यों ने दावा किया कि प्राचीन काल के भविष्यद्वक्ताओं में से
कोई दोबारा जीवित हो गया है

9 किंतु हेरोदेस ने विरोध किया, “योहन का सिर तो स्वयं मैंने
उड़वाया था, तब यह कौन है, जिसके विषय में मैं ये सब सुन
रहा हूं?” इसलिये हेरोदेस प्रभु येशु से मिलने का प्रयास करने
लगा.

10 अपनी यात्रा से लौटकर प्रेरितों ने प्रभु येशु के सामने अपने-
अपने कामों का बखान किया. तब प्रभु येशु उन्हें लेकर
चुपचाप बैथसैदा नामक नगर चले गए.

11 किंतु लोगों को इसके विषय में मालूम हो गया और वे वहां
पहुंच गए. प्रभु येशु ने सहर्ष उनका स्वागत किया और उन्हें
परमेश्वर के राज्य के विषय में शिक्षा दी तथा उन रोगियों को
चंगा किया, जिन्हें इसकी ज़रूरत थी.

12 जब दिन ढलने पर आया तब बारहों प्रेरितों ने प्रभु येशु के
पास आकर उन्हें सुझाव दिया, “भीड़ को विदा कर दीजिए कि
वे पास के गांवों में जाकर अपने ठहरने और भोजन की
व्यवस्था कर सकें क्योंकि यह सुनसान जगह है.”

13 इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम्हीं करो इनके भोजन
की व्यवस्था!” उन्होंने इसके उत्तर में कहा, “हमारे पास तो
केवल पांच रोटियां तथा दो मछलियां ही हैं; हां, यदि हम
जाकर इन सबके लिए भोजन मोल ले आएं तो यह संभव है.”

14 इस भीड़ में पुरुष ही लगभग पांच हज़ार थे. प्रभु येशु ने
शिष्यों को आदेश दिया, “इन्हें लगभग पचास-पचास के झुंड
में बैठा दो.”

15 शिष्यों ने उन सबको भोजन के लिए बैठा दिया.

16 पांचों रोटियां तथा दोनों मछलियां अपने हाथ में लेकर प्रभु
येशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करते हुए उनके लिए परमेश्वर को

Luke 9:1

धन्यवाद किया तथा उन्हें तोड़-तोड़ कर शिष्यों को देते गए कि वे लोगों में इनको बांटते जाएं.

17 सभी ने भरपेट खाया. शेष रह गए टुकड़े इकट्ठा करने पर बारह टोकरे भर गए.

18 एक समय, जब प्रभु येशु एकांत में प्रार्थना कर रहे थे तथा उनके शिष्य भी उनके साथ थे, प्रभु येशु ने शिष्यों से प्रश्न किया, “लोग क्या कहते हैं वे मेरे विषय में; कि मैं कौन हूं?”

19 उन्होंने उत्तर दिया, “कुछ कहते हैं बपतिस्मा देनेवाला योहन; कुछ एलियाह; और कुछ अन्य कहते हैं पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से एक, जो दोबारा जीवित हो गया है.”

20 “मैं कौन हूं इस विषय में तुम्हारी धारणा क्या है?” प्रभु येशु ने प्रश्न किया. पेतरॉस ने उत्तर दिया, “परमेश्वर के मसीह.”

21 प्रभु येशु ने उन्हें कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि वे यह किसी से न कहें.

22 आगे प्रभु येशु ने प्रकट किया, “यह अवश्य है कि मनुष्य के पुत्र अनेक पीड़ाएं सहे, यहूदी प्रधानों, प्रधान पुरोहितों तथा व्यवस्था के शिक्षकों के द्वारा अस्वीकृत किया जाए; उसका वध किया जाए तथा तीसरे दिन उसे दोबारा जीवित किया जाए.”

23 तब प्रभु येशु ने उन सबसे कहा, “यदि कोई मेरे पीछे होना चाहे, (शिष्य होना चाहे) वह अपने अहम का त्याग कर प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले.

24 क्योंकि जो कोई अपने जीवन को सुरक्षित रखना चाहता है, उसे खो देगा किंतु जो कोई मेरे हित में अपने प्राणों को त्यागने के लिए तत्पर है, वह अपने प्राणों को सुरक्षित रखेगा.

25 क्या लाभ है यदि कोई व्यक्ति सारे संसार पर अधिकार तो प्राप्त कर ले किंतु स्वयं को खो दे या उसका जीवन ले लिया जाए?

26 क्योंकि जो कोई मुझसे और मेरी शिक्षा से लज्जित होता है, मनुष्य का पुत्र भी, जब वह अपनी, अपने पिता की तथा पवित्र दूतों की महिमा में आएगा, उससे लज्जित होगा.

27 “सच तो यह है कि यहां कुछ हैं, जो मृत्यु तब तक न चखेंगे जब तक वे परमेश्वर का राज्य देख न लें.”

28 अपनी इस बात के लगभग आठ दिन बाद प्रभु येशु पेतरॉस, योहन तथा याकोब को साथ लेकर एक ऊंचे पर्वत शिखर पर प्रार्थना करने गए.

29 जब प्रभु येशु प्रार्थना कर रहे थे, उनके मुखमंडल का रूप बदल गया तथा उनके वस्त्र सफ़ेद और उजले हो गए.

30 दो व्यक्ति—मोशेह तथा एलियाह—उनके साथ बातें करते दिखाई दिए.

31 वे भी स्वर्गीय तेज में थे. उनकी बातों का विषय था प्रभु येशु का जाना, जो येरूशलेम नगर में शीघ्र ही होने पर था.

32 पेतरॉस तथा उसके साथी अत्यंत नींद में थे किंतु जब वे पूरी तरह जाग गए, उन्होंने प्रभु येशु को उनके स्वर्गीय तेज में उन दो व्यक्तियों के साथ देखा.

33 जब वे पुरुष प्रभु येशु के पास से जाने लगे पेतरॉस प्रभु येशु से बोले, “प्रभु! हमारे लिए यहां होना कितना अच्छा है! हम यहां तीन मंडप बनाएं: एक आपके लिए, एक मोशेह के लिए तथा एक एलियाह के लिए.” स्वयं उन्हें अपनी इन कही हुई बातों का मतलब नहीं पता था.

34 जब पेतरॉस यह कह ही रहे थे, एक बादल ने उन सबको ढांप लिया. बादल से घिर जाने पर वे भयभीत हो गए.

35 बादल में से एक आवाज सुनाई दी: “यह मेरा पुत्र है—मेरा चुना हुआ. इसके आदेश का पालन करो.”

36 आवाज समाप्त होने पर उन्होंने देखा कि प्रभु येशु अकेले हैं. जो कुछ उन्होंने देखा था, उन्होंने उस समय उसका वर्णन किसी से भी न किया. वे इस विषय में मौन बने रहे.

Luke 9:1

37 अगले दिन जब वे पर्वत से नीचे आए, एक बड़ी भीड़ वहां
इकट्ठा थी.

38 भीड़ में से एक व्यक्ति ने ऊंचे शब्द में पुकारकर कहा,
"गुरुवर! आपसे मेरी विनती है कि आप मेरे पुत्र को स्वस्थ कर
दें क्योंकि वह मेरी इकलौती संतान है.

39 एक दुष्टात्मा अक्सर उस पर प्रबल हो जाता है और वह
सहसा चीखने लगता है. दुष्टात्मा उसे भूमि पर पटक देता है
और मेरे पुत्र को ऐंठन प्रारंभ हो जाती है और उसके मुख से
फेन निकलने लगता है. यह दुष्टात्मा कदाचित ही उसे
छोड़कर जाता है—वह उसे नाश करने पर उतारू है.

40 मैंने आपके शिष्यों से विनती की थी कि वे उसे मेरे पुत्र में से
निकाल दें किंतु वे असफल रहे."

41 "अरे ओ अविश्वासी और बिगड़ी हुई पीढ़ी!" प्रभु येशु ने
कहा, "मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा, कब तक धीरज रखूंगा?
यहां लाओ अपने पुत्र को!"

42 जब वह बालक पास आ ही रहा था, दुष्टात्मा ने उसे भूमि पर
पटक दिया, जिससे उसके शरीर में ऐंठन प्रारंभ हो गई किंतु
प्रभु येशु ने दुष्टात्मा को डांटा, बालक को स्वस्थ किया और
उसे उसके पिता को सौंप दिया.

43 परमेश्वर का प्रताप देख सभी चकित रह गए. जब सब लोग
इस घटना पर अचंभित हो रहे थे प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से
कहा,

44 "जो कुछ मैं कह रहा हूं अत्यंत ध्यानपूर्वक सुनो और याद
रखो: मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथों पकड़वाया जाने पर है."

45 किंतु शिष्य इस बात का मतलब समझ न पाए. इस बात का
मतलब उनसे छुपाकर रखा गया था. यही कारण था कि वे
इसका मतलब समझ न पाए और उन्हें इसके विषय में प्रभु
येशु से पूछने का साहस भी न हुआ.

46 शिष्यों में इस विषय को लेकर विवाद छिड़ गया कि उनमें
श्रेष्ठ कौन है.

47 यह जानते हुए कि शिष्य अपने मन में क्या सोच रहे हैं प्रभु
येशु ने एक छोटे बालक को अपने पास खड़ा करके कहा,

48 "जो कोई मेरे नाम में इस छोटे बालक को ग्रहण करता है,
मुझे ग्रहण करता है, तथा जो कोई मुझे ग्रहण करता है, उन्हें
ग्रहण करता है जिन्होंने मुझे भेजा है. वह, जो तुम्हारे मध्य छोटा
है, वही है जो श्रेष्ठ है."

49 योहन ने उन्हें सूचना दी, "प्रभु, हमने एक व्यक्ति को आपके
नाम में दुष्टात्मा निकालते हुए देखा है. हमने उसे ऐसा करने से
रोकने का प्रयत्न किया क्योंकि वह हममें से नहीं है."

50 "मत रोको उसे!" प्रभु येशु ने कहा, "क्योंकि जो तुम्हारा
विरोधी नहीं, वह तुम्हारे पक्ष में है."

51 जब प्रभु येशु के स्वर्ग में उठा लिए जाने का निर्धारित समय
पास आया, विचार दृढ़ करके प्रभु येशु ने अपने पांव
येरूशलेम नगर की ओर बढ़ा दिए.

52 उन्होंने अपने आगे संदेशवाहक भेज दिए. वे शमरिया
प्रदेश के एक गांव में पहुंचे कि प्रभु येशु के आगमन की तैयारी
करें

53 किंतु वहां के निवासियों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया क्योंकि
प्रभु येशु येरूशलेम नगर की ओर जा रहे थे.

54 जब उनके दो शिष्यों—याकोब और योहन ने यह देखा तो
उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया, "प्रभु, यदि आप आज्ञा दें तो हम
प्रार्थना करें कि आकाश से इन्हें नाश करने के लिए आग की
बारिश हो जाए."

55 पीछे मुड़कर प्रभु येशु ने उन्हें डांटा, "तुम नहीं समझ रहे
कि तुम यह किस मतलब से कह रहे हो. मनुष्य का पुत्र
इन्सानों के विनाश के लिए नहीं परंतु उनके उद्धार के लिए
आया है!"

56 और वे दूसरे नगर की ओर बढ़ गए.

57 मार्ग में एक व्यक्ति ने अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए उनसे
कहा, "आप जहां कहीं जाएंगे, मैं आपके साथ रहूंगा."

58 येशु ने उसके उत्तर में कहा, “लोमड़ियों के पास उनकी
गुफाएं तथा आकाश के पक्षियों के पास उनके बसेरे होते हैं
किंतु मनुष्य के पुत्र के पास तो सिर रखने तक का स्थान नहीं
है!”

59 एक अन्य व्यक्ति से प्रभु येशु ने कहा, “आओ! मेरे पीछे हो
लो.” उस व्यक्ति ने कहा, “प्रभु मुझे पहले अपने पिता की
अंत्येष्टि की अनुमति दे दीजिए.”

60 प्रभु येशु ने उससे कहा, “मरे हुओं को अपने मृत गाड़ने दो
किंतु तुम जाकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो.”

61 एक अन्य व्यक्ति ने प्रभु येशु से कहा, “प्रभु, मैं आपके साथ
चलूंगा किंतु पहले मैं अपने परिजनों से विदा ले लूं.”

62 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “ऐसा कोई भी व्यक्ति, जो
हल चलाने को तत्पर हो, परंतु उसकी दृष्टि पीछे की ओर लगी
हुई हो, परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं.”

Luke 10:1

1 इसके बाद प्रभु ने अन्य बहत्तर व्यक्तियों को चुनकर उन्हें
दो-दो करके उन नगरों और स्थानों पर अपने आगे भेज दिया,
जहां वह स्वयं जाने पर थे.

2 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “उपज तो बहुत है किंतु मज़दूर कम,
इसलिये उपज के स्वामी से विनती करो कि इस उपज के लिए
मज़दूर भेज दें.”

3 जाओ! मैं तुम्हें भेज रहा हूं. तुम भेड़ियों के मध्य मेमनों के
समान हो.

4 अपने साथ न तो धन, न झोला और न ही जूतियां ले जाना.
मार्ग में किसी का कुशल मंगल पूछने में भी समय खर्च न
करना.

5 “जिस किसी घर में प्रवेश करो, तुम्हारे सबसे पहले शब्द हों,
‘इस घर में शांति बनी रहे.’

6 यदि परिवार-प्रधान शांति प्रिय व्यक्ति है, तुम्हारी शांति उस
पर बनी रहेगी. यदि वह ऐसा नहीं है तो तुम्हारी शांति तुम्हारे
ही पास लौट आएगी.

7 उसी घर के मेहमान बने रहना. भोजन और पीने के लिए जो
कुछ तुम्हें परोसा जाए, उसे स्वीकार करना क्योंकि सेवक
अपने वेतन का अधिकारी है. एक घर से निकलकर दूसरे घर
में मेहमान न बनना.

8 “जब तुम किसी नगर में प्रवेश करो और वहां लोग तुम्हें सहर्ष
स्वीकार करें, तो जो कुछ तुम्हें परोसा जाए, उसे खाओ.

9 वहां जो बीमार हैं, उन्हें चंगा करना और उन्हें सूचित करना,
‘परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है.’

10 किंतु यदि तुम किसी नगर में प्रवेश करो और वहां
नगरवासियों द्वारा स्वीकार न किए जाओ तो उस नगर की
गलियों में जाकर यह घोषणा करो,

11 ‘तुम्हारे नगर की धूल तक, जो हमारे पांवों में लगी है, उसे
हम तुम्हारे सामने एक चेतावनी के लिए झाड़ रहे हैं; परंतु यह
जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है.’

12 सच मानो, न्याय के दिन पर सोदोम नगर के लिए तय किया
गया दंड उस नगर के लिए तय किए दंड की तुलना में सहने
योग्य होगा.

13 “धिक्कार है तुझ पर कोराज़ीन! धिक्कार है तुझ पर
बैथसैदा! ये ही अद्भुत काम, जो तुझमें किए गए हैं यदि सोर
और सीदोन नगरों में किए जाते तो वे विलाप-वस्त्र पहन, राख
में बैठकर, कब के पश्चाताप कर चुके होते! पश्चाताप कर चुके
होते.

14 किंतु तुम दोनों नगरों की तुलना में सोर और सीदोन नगरों
का दंड सहने योग्य होगा.

15 और कफ़रनहूम! क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किए जाने की
आशा कर रहा है? अरे! तुझे तो पाताल में उतार दिया जाएगा.

16 “वह, जो तुम्हारी शिक्षा को सुनता है, मेरी शिक्षा को सुनता
है; वह, जो तुम्हें अस्वीकार करता है, मुझे अस्वीकार करता है
किंतु वह, जो मुझे अस्वीकार करता है, उन्हें अस्वीकार करता
है, जिन्होंने मुझे भेजा है.”

17 वे बहत्तर बहुत उत्साह से भरकर लौटे और कहने लगे,
“प्रभु! आपके नाम में तो दुष्टात्मा भी हमारे सामने समर्पण कर
देते हैं!”

18 इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मैं शैतान को बिजली के
समान स्वर्ग से गिरते देख रहा था.

19 मैंने तुम्हें सांपों और बिच्छुओं को रौंदने तथा शत्रु के सभी
सामर्थ्य का नाश करने का अधिकार दिया है इसलिये किसी
भी रीति से तुम्हारी हानि न होगी.

20 फिर भी, तुम्हारे लिए आनंद का विषय यह न हो कि दुष्टात्मा
तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करते हैं परंतु यह कि तुम्हारे नाम
स्वर्ग में लिखे जा चुके हैं.”

21 प्रभु येशु पवित्र आत्मा के आनंद से भरकर कहने लगे,
“पिता! स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं आपकी स्तुति करता हूं
कि आपने ये सभी सच बुद्धिमानों और ज्ञानियों से छुपा रखे
और नन्हे बालकों पर प्रकट कर दिए क्योंकि पिता, आपकी
दृष्टि में यही अच्छा था.

22 “मेरे पिता द्वारा सब कुछ मुझे सौंप दिया गया है. पिता के
अलावा कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है, और कोई नहीं
जानता कि पिता कौन हैं, सिवाय पुत्र के तथा वे, जिन पर वह
प्रकट करना चाहें.”

23 तब प्रभु येशु ने अपने शिष्यों की ओर उन्मुख हो उनसे
व्यक्तिगत रूप से कहा, “धन्य हैं वे आंख, जो वह देख रही हैं,
जो तुम देख रहे हो

24 क्योंकि सच मानो, अनेक भविष्यवक्ता और राजा वह देखने
की कामना करते रहे, जो तुम देख रहे हो किंतु वे देख न सके
तथा वे वह सुनने की कामना करते रहे, जो तुम सुन रहे हो
किंतु सुन न सके.”

25 एक अवसर पर एक वकील ने प्रभु येशु को परखने के
उद्देश्य से उनके सामने यह प्रश्न रखा: “गुरुवर, अनंत काल के
जीवन को पाने के लिए मैं क्या करूं?”

26 प्रभु येशु ने उससे प्रश्न किया, “व्यवस्था में क्या लिखा है,
इसके विषय में तुम्हारा विश्लेषण क्या है?”

27 उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “ ‘प्रभु, अपने परमेश्वर से अपने
सारे हृदय, अपने सारे प्राण, अपनी सारी शक्ति तथा अपनी
सारी समझ से प्रेम करो तथा अपने पड़ोसी से अपने समान
प्रेम.’”

28 प्रभु येशु ने उससे कहा, “तुम्हारा उत्तर बिलकुल सही है.
यही करने से तुम जीवित रहोगे.”

29 स्वयं को संगत प्रमाणित करने के उद्देश्य से उसने प्रभु येशु
से प्रश्न किया, “तो यह बताइए कौन है मेरा पड़ोसी?”

30 प्रभु येशु ने उत्तर दिया. “येरूशलेम नगर से एक व्यक्ति
येरीख़ो नगर जा रहा था कि डाकुओं ने उसे घेर लिया, उसके
वस्त्र छीन लिए, उसकी पिटाई की और उसे अधमरी हालत
में छोड़कर भाग गए.

31 संयोग से एक पुरोहित उसी मार्ग से जा रहा था. जब उसने
उस व्यक्ति को देखा, वह मार्ग के दूसरी ओर से आगे बढ़ गया.

32 इसी प्रकार एक लेवी भी उसी स्थान पर आया, उसकी दृष्टि
उस पर पड़ी तो वह भी दूसरी ओर से होता हुआ चला गया.

33 एक शमरियावासी भी उसी मार्ग से यात्रा करते हुए उस
जगह पर आ पहुंचा. जब उसकी दृष्टि उस घायल व्यक्ति पर
पड़ी, वह दया से भर गया.

34 वह उसके पास गया और उसके घावों पर तेल और
दाखरस लगाकर पट्टी बांधी. तब वह घायल व्यक्ति को अपने
वाहक पशु पर बैठाकर एक यात्री निवास में ले गया तथा
उसकी सेवा टहल की.

35 अगले दिन उसने दो दीनार यात्री निवास के स्वामी को देते हुए कहा, 'इस व्यक्ति की सेवा टहल कीजिए. इसके अतिरिक्त जो भी लागत होगा वह मैं लौटने पर चुका दूंगा.'

36 "यह बताओ तुम्हारे विचार से इन तीनों व्यक्तियों में से कौन उन डाकुओं द्वारा घायल व्यक्ति का पड़ोसी है?"

37 वकील ने उत्तर दिया, "वही, जिसने उसके प्रति करुणाभाव का परिचय दिया." प्रभु येशु ने उससे कहा, "जाओ, तुम्हारा स्वभाव भी ऐसा ही हो."

38 प्रभु येशु और उनके शिष्य यात्रा करते हुए एक गांव में पहुंचे, जहां मार्था नामक एक स्त्री ने उन्हें अपने घर में आमंत्रित किया.

39 उसकी एक बहन थी, जिसका नाम मरियम था. वह प्रभु के चरणों में बैठकर उनके प्रवचन सुनने लगी

40 किंतु मार्था विभिन्‍न तैयारियों में उलझी रही. वह प्रभु येशु के पास आई और उनसे प्रश्न किया, "प्रभु, क्या आपको इसका लेश मात्र भी ध्यान नहीं कि मेरी बहन ने अतिथि-सत्कार का सारा बोझ मुझ अकेली पर ही छोड़ दिया है? आप उससे कहें कि वह मेरी सहायता करे."

41 "मार्था, मार्था," प्रभु ने कहा, "तुम अनेक विषयों की चिंता करती और घबरा जाती हो

42 किंतु ज़रूरत तो कुछ ही की है—वास्तव में एक ही की. मरियम ने उसी उत्तम भाग को चुना है, जो उससे कभी अलग न किया जाएगा."

Luke 11:1

1 एक दिन प्रभु येशु एक स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे. जब उन्होंने प्रार्थना समाप्‍त की उनके शिष्यों में से एक ने उनसे विनती की, "प्रभु, हमको प्रार्थना करना सिखा दीजिए—ठीक जैसे योहन ने अपने शिष्यों को सिखाया है."

2 प्रभु येशु ने उनसे कहा, "जब भी तुम प्रार्थना करो, इस प्रकार किया करो: " 'हमारे स्वर्गीय पिता! आपका नाम सभी जगह सम्मानित हो. आपका राज्य हर जगह स्थापित हो.

3 हमारा रोज़ का भोजन हमें हर दिन दिया कीजिए.

4 हमारे पापों को क्षमा कीजिए. हम भी उनके पाप क्षमा करते हैं, जो हमारे विरुद्ध पाप करते हैं. हमें परीक्षा में फंसने से बचाइए.' "

5 प्रभु येशु ने उनसे आगे कहा, "तुममें से किसी का एक मित्र आधी रात में आकर यह विनती करे, 'मित्र! मुझे तीन रोटियां दे दो;

6 क्योंकि मेरा एक मित्र यात्रा करते हुए घर आया है और उसके भोजन के लिए मेरे पास कुछ नहीं है.'

7 तब वह अंदर ही से उत्तर दे, 'मुझे मत सताओ! द्वार बंद हो चुका है और मेरे बालक मेरे साथ सो रहे हैं. अब मैं उठकर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता.'

8 मैं जो कह रहा हूं उसे समझो: हालांकि वह व्यक्ति मित्र होने पर भी भले ही उसे देना न चाहे, फिर भी उस मित्र के बहुत विनती करने पर उसकी ज़रूरत के अनुसार उसे अवश्य देगा.

9 "यही कारण है कि मैंने तुमसे कहा है: विनती करो, तो तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, तो तुम पाओगे; द्वार खटखटाओ, तो वह तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा

10 क्योंकि हर एक, जो विनती करता है, उसकी विनती पूरी की जाती है, जो खोजता है, वह प्राप्‍त करता है और वह, जो द्वार खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोल दिया जाता है.

11 "तुममें कौन पिता ऐसा है, जो अपने पुत्र के मछली मांगने पर उसे सांप दे

12 या अंडे की विनती पर बिच्छू?

13 जब तुम दुष्ट होने पर भी अपनी संतान को उत्तम वस्तुएं प्रदान करना जानते हो तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता उन्हें, जो उनसे विनती करते हैं, कहीं अधिक बढ़कर पवित्र आत्मा प्रदान न करेंगे, जो उत्तम है?"

Luke 11:1

14 प्रभु येशु एक व्यक्ति में से, जो गूंगा था, एक दुष्टात्मा को
निकाल रहे थे. दुष्टात्मा के निकलते ही वह, जो गूंगा था, बोलने
लगा. यह देख भीड़ अचंभित रह गई.

15 किंतु उनमें से कुछ ने कहा, “वह तो दुष्टात्माओं के प्रधान
बेलज़बूल की सहायता से दुष्टात्मा निकालता है.”

16 कुछ अन्य ने प्रभु येशु को परखने के उद्देश्य से उनसे
अद्भुत चिह्न की मांग की.

17 उनके मन की बातें जानकर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “कोई
भी राज्य, जिसमें फूट पड़ चुकी है, नाश हो जाता है और जिस
परिवार में फूट पड़ चुकी हो, उसका नाश हो जाता है.

18 यदि शैतान अपने ही विरुद्ध काम करने लगे तो उसका
राज्य स्थिर कैसे रह सकता है? मैं ये सब इसलिये कह रहा हूं
कि तुम यह दावा कर रहे हो कि मैं दुष्टात्माओं को बेलज़बूल
की सहायता से निकाला करता हूं.

19 यदि मैं दुष्टात्माओं को बेलज़बूल के सहयोग से बाहर
निकाला करता हूं तो फिर तुम्हारे अनुयायी उनको कैसे बाहर
करती है? परिणामस्वरूप वे ही तुम पर आरोप लगाएंगे.

20 किंतु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के सामर्थ्य के द्वारा
निकालता हूं, तब परमेश्वर का राज्य तुम्हारे मध्य आ चुका है.

21 “जब कोई बलवान व्यक्ति शस्त्रों से पूरी तरह से सुसज्जित
होकर अपने घर की चौकसी करता है, तो उसकी संपत्ति
सुरक्षित रहती है

22 किंतु जब उससे अधिक बलवान कोई व्यक्ति उस पर
आक्रमण कर उसे अपने वश में कर लेता है और वे सभी
शस्त्र, जिन पर वह भरोसा करता था, छीन लेता है, तो वह
उसकी संपत्ति को लूटकर बांट देता है.

23 “वह, जो मेरे पक्ष में नहीं है मेरे विरुद्ध है और वह, जो मेरे
साथ इकट्ठा नहीं करता, वह बिखेरता है.

24 “जब दुष्टात्मा किसी व्यक्ति में से बाहर आ जाती है, वह
निवास स्थान की खोज में सूखे स्थानों में फिरती है, किंतु उसे
निवास स्थान प्राप्त नहीं हो पाता. तब वह सोचती है कि मैं जिस
निवास स्थान को छोड़कर आयी थी, वहीं लौट जाऊं.

25 वह वहां लौटकर उसे खाली, साफ़ और सुथरा पाती है.

26 तब वह जाकर अपने से अधिक बुरी सात आत्मा और ले
आती है और वे सब उस व्यक्ति में प्रवेश कर उसमें अपना घर
बना लेती हैं. तब उस व्यक्ति की स्थिति पहले से खराब हो
जाती है.”

27 जब प्रभु येशु यह शिक्षा दे रहे थे, भीड़ में से एक नारी पुकार
उठी, “धन्य है वह माता, जिसने आपको जन्म दिया और
आपका पालन पोषण किया.”

28 किंतु प्रभु येशु ने कहा, “परंतु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर के वचन
को सुनकर उसका पालन करते हैं.”

29 जब और अधिक लोग इकट्ठा होने लगे, प्रभु येशु ने कहा,
“यह पीढ़ी अत्यंत बुरी पीढ़ी है. यह चमत्कार चिह्नों की मांग
करती है किंतु भविष्यवक्ता योनाह के चिह्न के अतिरिक्त इसे
और कोई चिह्न नहीं दिया जाएगा.

30 जिस प्रकार परमेश्वर की ओर से भविष्यवक्ता योनाह नीनवे
नगरवासियों के लिए एक चिह्न थे, उसी प्रकार मनुष्य का पुत्र
इस पीढ़ी के लिए एक चिह्न है.

31 न्याय-दिवस पर दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के साथ खड़ी
होगी और इसे धिक्कारेगी क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से यात्रा
कर राजा शलोमोन के ज्ञान को सुनने आई थी; किंतु यहां तो
वह है, जो राजा शलोमोन से भी बढ़कर है.

32 न्याय-दिवस पर नीनवे नगर की जनता इस पीढ़ी के साथ
उपस्थित होगी और इसे धिक्कारेगी क्योंकि उसने तो
भविष्यवक्ता योनाह के प्रचार के परिणामस्वरूप पश्चाताप
कर लिया, किंतु यहां तो वह है, जो भविष्यवक्ता योनाह से भी
बढ़कर है.

33 “दीप जलाकर कोई भी उसे न तो ऐसे स्थान पर रखता है,
जहां वह छुप जाए और न ही किसी बर्तन के नीचे; परंतु वह

उसे उसके नियत स्थान पर रखता है, कि जो प्रवेश करते हैं, देख सकें.

34 तुम्हारे शरीर का दीपक तुम्हारी आंख हैं. यदि तुम्हारी आंख निरोगी हैं, तुम्हारा सारा शरीर उजियाला होगा किंतु यदि तुम्हारी आंखें रोगी हैं, तो तुम्हारा शरीर भी अंधियारा होगा.

35 ध्यान रहे कि तुम्हारे भीतर छिपा हुआ उजाला अंधकार न हो.

36 इसलिये यदि तुम्हारा सारा शरीर उजियाला है, उसमें ज़रा सा भी अंधकार नहीं है, तब वह सब जगह उजाला देगा—जैसे एक दीप अपने उजाले से तुम्हें उजियाला देता है."

37 जब प्रभु येशु अपना प्रवचन समाप्त कर चुके, एक फ़रीसी ने उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया. प्रभु येशु उसके साथ गए तथा भोजन के लिए बैठ गए.

38 उस फ़रीसी को यह देख आश्चर्य हुआ कि भोजन के पूर्व प्रभु येशु ने हाथ नहीं धोए.

39 प्रभु येशु ने इस पर उससे कहा, "तुम फ़रीसी प्याले और थाली को बाहर से तो साफ़ करते हो किंतु तुम्हारे हृदय लोभ और दुष्टता से भरे हुए हैं.

40 निर्बुद्धियों! जिसने बाहरी भाग बनाया है, क्या उसी ने अंदरूनी भाग नहीं बनाया?

41 तुममें जो अंदर बसा हुआ है, उसे दान में दे दो, तब तुम और तुम्हारे संस्कार शुद्ध हो पाएंगे.

42 "धिक्कार है तुम पर, फ़रीसियो! तुम परमेश्वर को अपने पुदीना, ब्राम्ही तथा अन्य हर एक साग-पात का दसवां अंश तो देते हो किंतु मनुष्यों के प्रति न्याय और परमेश्वर के प्रति प्रेम की उपेक्षा करते हो. ये ही वे चीज़ें हैं, जिनको पूरा करना आवश्यक है—अन्यों की उपेक्षा किए बिना.

43 "धिक्कार है तुम पर, फ़रीसियो! तुम्हें सभागृहों में प्रधान आसन तथा नगर चौक में लोगों द्वारा सम्मान भरा नमस्कार पसंद है.

44 "धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम उन छिपी हुई कब्रों के समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते फिरते हैं."

45 एक वकील ने प्रभु येशु से कहा, "गुरुवर! ऐसा कहकर आप हमारा भी अपमान कर रहे हैं."

46 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, "धिक्कार है तुम पर भी, वकीलों! क्योंकि तुम लोगों पर नियमों का ऐसा बोझ लाद देते हो, जिसको उठाना कठिन होता है, जबकि तुम स्वयं उनकी सहायता के लिए अपनी उंगली से छूते तक नहीं.

47 "धिक्कार है तुम पर! क्योंकि तुम भविष्यद्वक्ताओं के लिए स्मारक बनाते हो, जबकि तुम्हारे अपने पूर्वजों ने ही उन भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की थी.

48 इस प्रकार तुम अपने पूर्वजों के कुकर्मों के गवाह हो और इसका पूरी तरह समर्थन करते हो—क्योंकि ये ही थे, जिन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की हत्या की थी और अब तुम उन्हीं के स्मारक बनाते हो.

49 इसलिये परमेश्वर की बुद्धि का भी यह कहना है: 'मैं उनके पास भविष्यवक्ता और प्रेरित भेजूंगा. वे उनमें से कुछ की हत्या कर देंगे तथा कुछ को उत्पीड़ित करेंगे

50 कि सृष्टि की स्थापना से लेकर आज तक सारे भविष्यद्वक्ताओं के लहू बहने का हिसाब इसी पीढ़ी से लिया जाए;

51 हाबिल से लेकर ज़करयाह तक, जिनकी हत्या वेदी तथा मंदिर के मध्य की गई थी. हां, मेरा विश्वास करो: इसका हिसाब इसी पीढ़ी से लिया जाएगा.'

52 "धिक्कार है तुम पर, वकीलों! तुमने ज्ञान की कुंजी तो ले ली हैं, किंतु तुमने ही इसमें प्रवेश नहीं किया, और जो इसमें प्रवेश कर रहे थे, उनका भी मार्ग बंद कर दिया है."

53 प्रभु येशु के वहां से निकलने पर शास्त्री और फ़रीसी, जो उनके कट्टर विरोधी हो गए थे, उनसे अनेक विषयों पर कठिन प्रश्न करने लगे.

54 वे इस घात में थे कि वे प्रभु येशु को उनके ही किसी कथन
द्वारा फंसा लें.

Luke 12:1

1 इसी समय वहां हज़ारों लोगों का इतना विशाल समूह इकट्ठा
हो गया कि वे एक दूसरे पर गिर रहे थे. प्रभु येशु ने सबसे पहले
अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, "फ़रीसियों के
खमीर अर्थात् ढोंग से सावधान रहो.

2 ऐसा कुछ भी ढका नहीं, जिसे खोला न जाएगा या ऐसा कोई
रहस्य नहीं, जिसे प्रकट न किया जाएगा.

3 वे शब्द, जो तुमने अंधकार में कहे हैं, प्रकाश में सुने जाएंगे,
जो कुछ तुमने भीतरी कमरे में कानों में कहा है, वह छत से
प्रचार किया जाएगा.

4 "मेरे मित्रों, मेरी सुनो: उनसे भयभीत न हो, जो शरीर का तो
नाश कर सकते हैं किंतु इसके बाद इससे अधिक और कुछ
नहीं

5 पर मैं तुम्हें समझाता हूं कि तुम्हारा किससे डरना सही है:
उन्हीं से, जिन्हें शरीर का नाश करने के बाद नर्क में झोंकने
का अधिकार है. सच मानो, तुम्हारा उन्हीं से डरना उचित है.

6 क्या दो अस्सारिओन में पांच गौरैयां नहीं बेची जातीं? फिर
भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलते.

7 तुम्हारे सिर का तो एक-एक बाल गिना हुआ है. इसलिये
भयभीत न हो. तुम्हारा दाम अनेक गौरैया से कहीं अधिक है.

8 "मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई मुझे मनुष्यों के सामने
स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के
सामने स्वीकार करेगा,

9 किंतु जो मुझे मनुष्यों के सामने अस्वीकार करता है, उसका
परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने इनकार किया जाएगा.

10 यदि कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध एक भी शब्द कहता है,
उसे तो क्षमा कर दिया जाएगा किंतु पवित्र आत्मा की निंदा
बिलकुल क्षमा न की जाएगी.

11 "जब तुम उनके द्वारा सभागृहों, शासकों और अधिकारियों
के सामने प्रस्तुत किए जाओ तो इस विषय में कोई चिंता न
करना कि अपने बचाव में तुम्हें क्या उत्तर देना है या क्या
कहना है

12 क्योंकि पवित्र आत्मा ही तुम पर प्रकट करेंगे कि उस समय
तुम्हारा क्या कहना सही होगा."

13 उपस्थित भीड़ में से किसी ने प्रभु येशु से कहा, "गुरुवर, मेरे
भाई से कहिए कि वह मेरे साथ पिता की संपत्ति का बंटवारा
कर ले."

14 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, "हे मानव! किसने मुझे
तुम्हारे लिए न्यायकर्ता या मध्यस्थ ठहराया है?"

15 तब प्रभु येशु ने भीड़ को देखते हुए उन्हें चेतावनी दी, "स्वयं
को हर एक प्रकार के लालच से बचाए रखो. मनुष्य का जीवन
उसकी संपत्ति की बहुतायत होने पर भला नहीं है."

16 तब प्रभु येशु ने उनके सामने यह दृष्टांत प्रस्तुत किया:
"किसी व्यक्ति की भूमि से अच्छी फसल उत्पन्न हुई.

17 उसने मन में विचार किया, 'अब मैं क्या करूं? फसल रखने
के लिए तो मेरे पास स्थान ही नहीं है.'

18 "फिर उसने विचार किया, 'मैं ऐसा करता हूं: मैं इन बखारों
को तोड़कर बड़े भंडार निर्मित करूंगा. तब मेरी सारी उपज
तथा वस्तुओं का रख रखाव हो सकेगा.

19 तब मैं स्वयं से कहूंगा, "अनेक वर्षों के लिए अब तेरे लिए
उत्तम वस्तुएं इकट्ठा हैं. विश्राम कर! खा, पी और आनंद कर!"
'

20 "किंतु परमेश्वर ने उससे कहा, 'अरे मूर्ख! आज ही रात तेरे
प्राण तुझसे ले लिए जाएंगे; तब ये सब, जो तूने अपने लिए
इकट्ठा कर रखा है, किसका होगा?'

21 “यही है उस व्यक्ति की स्थिति, जो मात्र अपने लिए इस
प्रकार इकट्ठा करता है किंतु जो परमेश्वर की दृष्टि में धनवान
नहीं है.”

22 इसके बाद अपने शिष्यों से उन्मुख हो प्रभु येशु ने कहा,
“यही कारण है कि मैंने तुमसे कहा है, अपने जीवन के विषय
में यह चिंता न करो कि हम क्या खाएंगे या अपने शरीर के
विषय में कि हम क्या पहनेंगे.

23 जीवन भोजन से तथा शरीर वस्त्रों से बढ़कर है.

24 कौवों पर विचार करो: वे न तो बोते हैं और न काटते हैं.
उनके न तो खलिहान होते हैं और न भंडार; फिर भी परमेश्वर
उन्हें भोजन प्रदान करते हैं. तुम्हारा दाम पक्षियों से कहीं
अधिक बढ़कर है!

25 तुममें से कौन है, जो चिंता के द्वारा अपनी आयु में एक पल
भी बढ़ा पाया है?

26 जब तुम यह छोटा सा काम ही नहीं कर सकते तो भला
अन्य विषयों के लिए चिंतित क्यों रहते हो?

27 “जंगली फूलों को देखो! वे न तो कताई करते हैं और न
बुनाई; परंतु मैं कहता हूं कि राजा शलोमोन तक अपने सारे
ऐश्वर्य में इनमें से एक के तुल्य भी सजे न थे.

28 यदि परमेश्वर घास का श्रृंगार इस सीमा तक करते हैं,
जिसका जीवन थोड़े समय का है और जो कल आग में झोंक
दिया जाएगा, क्या वह तुम्हें और कितना अधिक सुशोभित न
करेंगे? कैसा कमजोर है तुम्हारा विश्वास!

29 इस उधेड़-बुन में लगे न रहो कि तुम क्या खाओगे या क्या
पियोगे और न ही इसकी कोई चिंता करो.

30 विश्व के सभी राष्ट्र इसी कार्य में लगे हैं. तुम्हारे पिता को पहले
ही यह मालूम है कि तुम्हें इन वस्तुओं की ज़रूरत है.

31 इनकी जगह परमेश्वर के राज्य की खोज करो और ये सभी
वस्तुएं तुम्हारी हो जाएंगी.

32 “तुम, जो संख्या में कम हो, भयभीत न होना क्योंकि तुम्हारे
पिता तुम्हें राज्य देकर संतुष्ट हुए हैं.

33 अपनी संपत्ति बेचकर प्राप्त धनराशि निर्धनों में बांट दो.
अपने लिए ऐसा धन इकट्ठा करो, जो नष्ट नहीं किया जा सकता
है—स्वर्ग में इकट्ठा किया धन; जहां न तो किसी चोर की पहुंच
है और न ही विनाश करनेवाले कीड़ों की.

34 क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी होगा.”

35 “हमेशा तैयार रहो तथा अपने दीप जलाए रखो,

36 उन सेवकों के समान, जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा में हैं कि
वह जब विवाहोत्सव से लौटकर आए और द्वार खटखटाए तो
वे तुरंत उसके लिए द्वार खोल दें.

37 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी लौटने पर जागते पाएगा. सच
तो यह है कि स्वामी ही सेवक के वस्त्र धारण कर उन्हें भोजन
के लिए बैठाएगा तथा स्वयं उन्हें भोजन परोसेगा.

38 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी रात के दूसरे या तीसरे प्रहर में
भी आकर जागते पाए.

39 किंतु तुम यह जान लो: यदि घर के स्वामी को यह मालूम हो
कि चोर किस समय आएगा तो वह उसे अपने घर में घुसने ही
न दे.

40 तुम्हारा भी इसी प्रकार सावधान रहना ज़रूरी है क्योंकि
मनुष्य के पुत्र का आगमन ऐसे समय पर होगा जिसकी तुम
कल्पना तक नहीं कर सकते.”

41 पेतरॉस ने उनसे प्रश्न किया, “प्रभु, आपका यह दृष्टांत मात्र
हमारे लिए ही है या भीड़ के लिए भी?”

42 प्रभु ने उत्तर दिया, “वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भंडारी
कौन होगा जिसे स्वामी सभी सेवकों का प्रधान ठहराए कि वह
अन्य सेवकों को निर्धारित समय पर भोज्य सामग्री दे दे.

43 धन्य है वह सेवक, जिसे घर का स्वामी लौटने पर यही करते
हुए पाए.

44 सच्चाई तो यह है कि घर का स्वामी उस सेवक के हाथों में
अपनी सारी संपत्ति की ज़िम्मेदारी सौंप देगा.

45 किंतु यदि वह दास अपने मन में कहने लगे, 'अभी तो मेरे
स्वामी के लौटने में बहुत समय है' और वह अन्य दास-दासियों
की पिटाई करने लगे और खा-पीकर नशे में चूर हो जाए.

46 उसका स्वामी एक ऐसे दिन लौटेगा, जिसकी उसने कल्पना
ही न की थी और एक ऐसे क्षण में, जिसके विषय में उसे मालूम
ही न था तो स्वामी उसके टुकड़े-टुकड़े कर उसकी गिनती
अविश्वासियों में कर देगा.

47 "वह दास, जिसे अपने स्वामी की इच्छा का पूरा पता था
किंतु वह न तो इसके लिए तैयार था और न उसने उसकी
इच्छा के अनुसार व्यवहार ही किया, कठोर दंड पाएगा.

48 किंतु वह, जिसे इसका पता ही न था और उसने दंड पाने
योग्य अपराध किए, कम दंड पाएगा. हर एक से, जिसे बहुत
ज्यादा दिया गया है उससे बहुत ज्यादा मात्रा में ही लिया
जाएगा तथा जिसे अधिक मात्रा में सौंपा गया है, उससे अधिक
का ही हिसाब लिया जाएगा.

49 "मैं पृथ्वी पर आग बरसाने के लक्ष्य से आया हूं और कैसा
उत्तम होता यदि यह इसी समय हो जाता!

50 किंतु मेरे लिए बपतिस्मा की प्रक्रिया निर्धारित है और जब
तक यह प्रक्रिया पूरी नहीं हो जाती, कैसी दुःखदायी है इसकी
पीड़ा!

51 क्या विचार है तुम्हारा—क्या मैं पृथ्वी पर मेल-मिलाप के
लिए आया हूं? नहीं! मेल-मिलाप नहीं, परंतु फूट के लिए.

52 अब से पांच सदस्यों के परिवार में फूट पड़ जाएगी तीन के
विरुद्ध दो और दो के विरुद्ध तीन.

53 वे सब एक दूसरे के विरुद्ध होंगे—पिता पुत्र के और पुत्र
पिता के; माता पुत्री के और पुत्री माता के; सास पुत्र-वधू के
और पुत्र-वधू सास के."

54 भीड़ को संबोधित करते हुए प्रभु येशु ने कहा, "जब तुम
पश्चिम दिशा में बादल उठते देखते हो तो तुम तुरंत कहते हो,
'बारिश होगी' और बारिश होती है.

55 जब पवन दक्षिण दिशा से बहता है तुम कहते हो, 'अब गर्मी
पड़ेगी,' और ऐसा ही हुआ करता है.

56 पाखंडियों! तुम धरती और आकाश की ओर देखकर तो
भेद कर लेते हो किंतु इस युग का भेद क्यों नहीं कर सकते?

57 "तुम स्वयं अपने लिए सही गलत का फैसला क्यों नहीं कर
लेते?

58 जब तुम अपने शत्रु के साथ न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत
होने जा रहे हो, पूरा प्रयास करो कि मार्ग में ही तुम दोनों में
मेल हो जाए अन्यथा वह तो तुम्हें घसीटकर न्यायाधीश के
सामने प्रस्तुत कर देगा, न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी के हाथ
सौंप देगा और अधिकारी तुम्हें जेल में डाल देगा.

59 मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम एक-एक पैसा लौटा न
दो बंदीगृह से छूट न पाओगे."

Luke 13:1

1 उसी समय वहां उपस्थित कुछ लोगों ने प्रभु येशु को उन
गलीलवासियों की याद दिलायी, जिनका लहू पिलातॉस ने
उन्हीं के बलिदानों में मिला दिया था.

2 प्रभु येशु ने उनसे पूछा, "क्या तुम्हारे विचार से ये गलीली अन्य
गलीलवासियों की तुलना में अधिक पापी थे कि उनकी यह
स्थिति हुई?

3 नहीं! मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम मन न फिराओ तो तुम
सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे.

4 या वे अठारह व्यक्ति, जिन पर सीलोअम का मीनार गिरा,
जिससे उनकी मृत्यु हो गई, येरूशलेम वासियों की अपेक्षा
अधिक दोषी थे?

5 नहीं! मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम मन न फिराओ तो तुम
सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे."

6 तब प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा समझाना प्रारंभ
किया, "एक व्यक्ति ने अपने बगीचे में एक अंजीर का पेड़
लगाया. वह फल की आशा में उसके पास आया.

7 उसने माली से कहा, 'देखो, मैं तीन वर्ष से इस पेड़ में फल
की आशा लिए आ रहा हूं और मुझे अब तक कोई फल प्राप्त
नहीं हुआ. काट डालो इसे! भला क्यों इसके कारण भूमि व्यर्थ
ही घिरी रहे?'

8 "किंतु माली ने स्वामी से कहा, 'स्वामी, इसे इस वर्ष और रहने
दीजिए. मैं इसके आस-पास की भूमि खोदकर इसमें खाद
डाल देता हूं.

9 यदि अगले वर्ष यह फल लाए तो अच्छा है, नहीं तो इसे कटवा
दीजिएगा.' "

10 शब्बाथ पर प्रभु येशु यहूदी सभागृह में शिक्षा दे रहे थे.

11 वहां एक ऐसी स्त्री थी, जिसे एक दुष्टात्मा ने अठारह वर्ष से
अपंग किया हुआ था. जिसके कारण उसका शरीर झुककर
दोहरा हो गया था और उसके लिए सीधा खड़ा होना असंभव
हो गया था.

12 जब प्रभु येशु की दृष्टि उस पर पड़ी, उन्होंने उसे अपने पास
बुलाया और उससे कहा, "हे नारी, तुम अपने इस रोग से मुक्त
हो गई हो,"

13 यह कहते हुए प्रभु येशु ने उस पर अपने हाथ रखे और उसी
क्षण वह सीधी खड़ी हो गई और परमेश्वर का धन्यवाद करने
लगी.

14 किंतु यहूदी सभागृह प्रधान इस पर अत्यंत रुष्ट हो गया
क्योंकि प्रभु येशु ने उसे शब्बाथ पर स्वस्थ किया था. सभागृह
प्रधान ने वहां इकट्ठा लोगों से कहा, "काम करने के लिए छः
दिन निर्धारित किए गए हैं इसलिये इन छः दिनों में आकर
अपना स्वास्थ्य प्राप्त करो, न कि शब्बाथ पर."

15 किंतु प्रभु ने इसके उत्तर में कहा, "पाखंडियों! क्या शब्बाथ
पर तुममें से हर एक अपने बैल या गधे को पशुशाला से
खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?

16 और क्या इस स्त्री को, जो अब्राहाम ही की संतान है, जिसे
शैतान ने अठारह वर्ष से बांध रखा था, शब्बाथ पर इस बंधन
से मुक्त किया जाना उचित न था?"

17 प्रभु येशु के ये शब्द सुन उनके सभी विरोधी लज्जित हो गए.
सारी भीड़ प्रभु येशु द्वारा किए जा रहे इन महान कामों को देख
आनंदित थी.

18 इसलिये प्रभु येशु ने उनसे कहना प्रारंभ किया, "परमेश्वर
का राज्य कैसा होगा? मैं इसकी तुलना किससे करूं?

19 परमेश्वर का राज्य राई के बीज के समान है, जिसे किसी
व्यक्ति ने अपनी वाटिका में बोया, और उसने विकसित होते
हुए पेड़ का रूप ले लिया—यहां तक कि आकाश के पक्षी भी
आकर उसकी शाखाओं पर बसेरा करने लगे."

20 प्रभु येशु ने दोबारा कहा, "परमेश्वर के राज्य की तुलना मैं
किससे करूं?

21 परमेश्वर का राज्य खमीर के समान है, जिसे एक स्त्री ने तीन
माप आटे में मिलाया और सारा आटा ही खमीर युक्त हो गया."

22 नगर-नगर और गांव-गांव होते हुए और मार्ग में शिक्षा देते
हुए प्रभु येशु येरूशलेम नगर की ओर बढ़ रहे थे.

23 किसी ने उनसे प्रश्न किया, "प्रभु, क्या मात्र कुछ ही लोग
उद्धार प्राप्त कर सकेंगे?" प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया,

24 "तुम्हारी कोशिश यह हो कि तुम संकरे द्वार से प्रवेश करो
क्योंकि मैं तुम्हें बता रहा हूं कि अनेक इसमें प्रवेश तो चाहेंगे
किंतु प्रवेश करने में असमर्थ रहेंगे.

25 एक बार जब घर का स्वामी द्वार बंद कर दे तो तुम बाहर खड़े, द्वार खटखटाते हुए विनती करते रह जाओगे: 'महोदय, कृपया हमारे लिए द्वार खोल दें.' "किंतु वह उत्तर देगा, 'तुम कौन हो और कहां से आए हो मैं नहीं जानता.'

26 "तब तुम कहोगे, 'हम आपके साथ खाया पिया करते थे और आप हमारी गलियों में शिक्षा दिया करते थे.'

27 "परंतु उसका उत्तर होगा, 'मैं तुमसे कह चुका हूं तुम कौन हो, मैं नहीं जानता. चले जाओ यहां से! तुम सब कुकर्मी हो!'

28 "जब तुम परमेश्वर के राज्य में अब्राहाम, यित्सहाक, याकोब तथा सभी भविष्यद्वक्ताओं को देखोगे और स्वयं तुम्हें बाहर फेंक दिया जाएगा, वहां रोना और दांतों का पीसना ही होगा.

29 चारों दिशाओं से लोग आकर परमेश्वर के राज्य के उत्सव में शामिल होंगे

30 और सच्चाई यह है कि जो अंतिम हैं वे पहले होंगे तथा जो पहले वे अंतिम."

31 उसी समय कुछ फ़रीसियों ने उनके पास आकर उनसे कहा, "यहां से चले जाओ क्योंकि हेरोदेस तुम्हारी हत्या कर देना चाहता है."

32 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "जाकर उस लोमड़ी से कहो, 'मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालूंगा और लोगों को चंगा करूंगा और तीसरे दिन मैं अपने लक्ष्य पर पहुंच जाऊंगा.'

33 फिर भी यह ज़रूरी है कि मैं आज, कल और परसों यात्रा करूं क्योंकि यह हो ही नहीं सकता कि किसी भविष्यवक्ता की हत्या येरूशलेम नगर के बाहर हो.

34 "येरूशलेम! ओ येरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं की हत्या करता तथा उनका पथराव करता है, जिन्हें तेरे लिए भेजा जाता है. कितनी बार मैंने यह प्रयास किया कि तेरी संतान को इकट्ठा कर एकजुट करूं, जैसे मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है किंतु तूने न चाहा.

35 इसलिये अब यह समझ ले कि तेरा घर तेरे लिए उजाड़ छोड़ा जा रहा है. मैं तुझे बताए देता हूं कि इसके बाद तू मुझे तब तक नहीं देखेगा जब तक तू यह नारा न लगाए. 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम में आ रहा है!'"

Luke 14:1

1 एक अवसर पर जब प्रभु येशु शब्बाथ पर फ़रीसियों के नायकों में से एक के घर भोजन करने गए, वे सभी उन्हें उत्सुकतापूर्वक देख रहे थे.

2 वहां जलोदर रोग से पीड़ित एक व्यक्ति था.

3 प्रभु येशु ने फ़रीसियों और वकीलों से प्रश्न किया, "शब्बाथ पर किसी को स्वस्थ करना व्यवस्था के अनुसार है या नहीं?"

4 किंतु वे मौन रहे. इसलिये प्रभु येशु ने उस रोगी पर हाथ रख उसे स्वस्थ कर दिया तथा उसे विदा किया.

5 तब प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, "यह बताओ, यदि तुममें से किसी का पुत्र या बैल शब्बाथ पर कुएं में गिर जाए तो क्या तुम उसे तुरंत ही बाहर न निकालोगे?"

6 उनके पास इस प्रश्न का कोई उत्तर न था.

7 जब प्रभु येशु ने यह देखा कि आमंत्रित व्यक्ति अपने लिए किस प्रकार प्रधान आसन चुन लेते हैं, प्रभु येशु ने उन्हें यह विचार दिया:

8 "जब भी कोई तुम्हें विवाह के उत्सव में आमंत्रित करे, तुम अपने लिए आदरयोग्य आसन न चुनना. यह संभव है कि उसने तुमसे अधिक किसी आदरयोग्य व्यक्ति को भी आमंत्रित किया हो.

9 तब वह व्यक्ति, जिसने तुम्हें और उसे दोनों ही को आमंत्रित किया है, आकर तुमसे कहे 'तुम यह आसन इन्हें दे दो,' तब लज्जित हो तुम्हें वह आसन छोड़कर सबसे पीछे के आसन पर बैठना पड़े.

10 किंतु जब तुम्हें कहीं आमंत्रित किया जाए, जाकर सबसे
साधारण आसन पर बैठ जाओ जिससे कि जब जिसने तुम्हें
आमंत्रित किया है तुम्हारे पास आए तो यह कहे, 'मेरे मित्र,
उठो और उस ऊंचे आसन पर बैठो.' इस पर अन्य सभी
आमंत्रित अतिथियों के सामने तुम आदरयोग्य साबित होगे.

11 हर एक, जो स्वयं को बड़ा बनाता है, छोटा बना दिया जाएगा
तथा जो स्वयं को छोटा बना देता है, बड़ा किया जाएगा."

12 तब फिर प्रभु येशु ने अपने न्योता देनेवाले से कहा, "जब तुम
दिन या रात के भोजन पर किसी को आमंत्रित करो तो अपने
मित्रों, भाई-बंधुओं, परिजनों या धनवान पड़ोसियों को
आमंत्रित मत करो; ऐसा न हो कि वे भी तुम्हें आमंत्रित करें
और तुम्हें बदला मिल जाए.

13 किंतु जब तुम भोज का आयोजन करो तो निर्धनों, अपंगों,
लंगड़ों तथा अंधों को आमंत्रित करो.

14 तब तुम परमेश्वर की कृपा के भागी बनोगे. वे लोग तुम्हारा
बदला नहीं चुका सकते. बदला तुम्हें धर्मियों के दोबारा जी
उठने (पुनरुत्थान) के अवसर पर प्राप्त होगा."

15 यह सुन वहां आमंत्रित लोगों में से एक ने प्रभु येशु से कहा,
"धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य के भोज में सम्मिलित होगा."

16 यह सुन प्रभु येशु ने कहा, "किसी व्यक्ति ने एक बड़ा भोज
का आयोजन किया और अनेकों को आमंत्रित किया.

17 भोज तैयार होने पर उसने अपने सेवकों को इस सूचना के
साथ आमंत्रितों के पास भेजा, 'आ जाइए, सब कुछ तैयार है.'

18 "किंतु वे सभी बहाने बनाने लगे. एक ने कहा, 'मैंने भूमि
मोल ली है और आवश्यक है कि मैं जाकर उसका निरीक्षण
करूं. कृपया मुझे क्षमा करें.'

19 "दूसरे ने कहा, 'मैंने अभी-अभी पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं
और मैं उन्हें परखने के लिए बस निकल ही रहा हूं. कृपया मुझे
क्षमा करें.'

20 "एक और अन्य ने कहा, 'अभी, इसी समय मेरा विवाह हुआ
है इसलिये मेरा आना संभव नहीं.'

21 "सेवक ने लौटकर अपने स्वामी को यह सूचना दे दी. अत्यंत
गुस्से में घर के स्वामी ने सेवक को आज्ञा दी, 'तुरंत नगर की
गलियों-चौराहों में जाओ और निर्धनों, अपंगों, लंगड़ों और
अंधों को ले आओ.'

22 "सेवक ने लौटकर सूचना दी, 'स्वामी, आपके आदेशानुसार
काम पूरा हो चुका है किंतु अब भी कुछ जगह भरने बाकी है.'

23 "तब घर के स्वामी ने उसे आज्ञा दी, 'अब नगर के बाहर के
मार्गों से लोगों को यहां आने के लिए विवश करो कि मेरा भवन
भर जाए.

24 यह निश्चित है कि वे, जिन्हें पहले आमंत्रित किया गया था,
उनमें से एक भी मेरे भोज को चख न सकेगा.' "

25 एक बड़ी भीड़ प्रभु येशु के साथ साथ चल रही थी. प्रभु येशु
ने मुड़कर उनसे कहा,

26 "यदि कोई मेरे पास आता है और अपने माता-पिता, पत्नी,
संतान तथा भाई बहनों को, यहां तक कि स्वयं अपने जीवन
को, मुझसे अधिक महत्व देता है, मेरा चेला नहीं हो सकता.

27 वह, जो अपना क्रूस स्वयं उठाए हुए मेरा अनुसरण नहीं
करता, वह मेरा चेला हो ही नहीं सकता.

28 "तुममें ऐसा कौन है, जो भवन निर्माण करना चाहे और
पहले बैठकर खर्च का अनुमान न करे कि उसके पास निर्माण
काम पूरा करने के लिए पर्याप्त राशि है भी या नहीं?

29 अन्यथा यदि वह नींव डाल ले और काम पूरा न कर पाए तो
देखनेवालों के ठट्ठों का कारण बन जाएगा:

30 'देखो, देखो! इसने काम प्रारंभ तो कर दिया किंतु अब
समाप्त नहीं कर पा रहा!'

31 "या ऐसा कौन राजा होगा, जो दूसरे पर आक्रमण करने के
पहले यह विचार न करेगा कि वह अपने दस हज़ार सैनिकों

के साथ अपने विरुद्ध बीस हज़ार की सेना से टक्कर लेने में समर्थ है भी या नहीं?

32 यदि नहीं, तो जब शत्रु की सेना दूर ही है, वह अपने दूतों को भेजकर उसके सामने शांति का प्रस्ताव रखेगा.

33 इसी प्रकार तुममें से कोई भी मेरा चेला नहीं हो सकता यदि वह अपना सब कुछ त्याग न कर दे.

34 "नमक उत्तम है किंतु यदि नमक ही स्वादहीन हो जाए तो किस वस्तु से उसका स्वाद लौटाया जा सकेगा?

35 तब वह न तो भूमि के लिए किसी उपयोग का रह जाता है और न खाद के रूप में किसी उपयोग का. उसे फेंक दिया जाता है. "जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले."

Luke 15:1

1 सभी चुंगी लेनेवाले और पापी लोग प्रभु येशु के प्रवचन सुनने उनके पास आए

2 किंतु फ़रीसी और शास्त्री बड़बड़ाने लगे, "यह व्यक्ति पापियों से मित्रता रखते हुए उनके साथ संगति करता है."

3 इसलिये प्रभु येशु ने उनके सामने यह दृष्टांत प्रस्तुत किया:

4 "तुममें से ऐसा कौन होगा, जिसके पास सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए तो वह निन्यानवे को बंजर भूमि में छोड़कर उस खोई हुई को तब तक खोजता न रहेगा, जब तक वह मिल न जाए?

5 और जब वह उसे मिल जाती है, उसे आनंदपूर्वक कंधों पर लाद लेता है.

6 घर लौटने पर वह अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा कर कहता है, 'मेरे आनंद में सम्मिलित हो जाओ क्योंकि मुझे मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है!'

7 यह बात याद रखो: पश्चाताप करते हुए एक पापी के लिए उन निन्यानवे धर्मियों की तुलना में स्वर्ग में कहीं अधिक आनंद मनाया जाता है, जिन्हें मन फिराने की ज़रूरत नहीं है."

8 "या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके पास चांदी के दस सिक्के हों और उनमें से एक खो जाए तो वह घर में रोशनी कर घर को बुहारते हुए उस सिक्के को तब तक खोजती न रहेगी जब तक वह मिल नहीं जाता?

9 सिक्का मिलने पर वह अपनी पड़ोसिनों और सहेलियों से कहती है, 'मेरे आनंद में शामिल हो जाओ क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है.'

10 मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्ग में इसी प्रकार परमेश्वर के दूतों के सामने उस पापी के लिए आनंद मनाया जाता है, जिसने मन फिराया है."

11 प्रभु येशु ने आगे कहा, "किसी व्यक्ति के दो पुत्र थे.

12 छोटे पुत्र ने पिता से विनती की, 'पिताजी, संपत्ति में से मेरा भाग मुझे दे दीजिए.' इसलिये पिता ने दोनों पुत्रों में अपनी संपत्ति बांट दी.

13 "शीघ्र ही छोटे पुत्र ने अपने भाग में आई सारी संपत्ति ली और एक दूर देश की ओर चला गया. वहां उसने अपना सारा धन मनमानी जीवनशैली में उड़ा दिया.

14 और अब, जब उसका सब कुछ समाप्त हो गया था, सारे देश में भीषण अकाल पड़ा किंतु उसके पास अब कुछ भी बाकी न रह गया था.

15 इसलिये वह उसी देश के एक नागरिक के यहां चला गया जिसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने भेज दिया.

16 वह सूअरों के चारे से ही अपना पेट भरने के लिए तरस जाता था. कोई भी उसे खाने के लिए कुछ नहीं देता था.

17 "अपनी परिस्थिति के बारे में होश में आने पर वह विचार करने लगा: 'मेरे पिता के कितने ही सेवकों को अधिक मात्रा में भोजन उपलब्ध है और यहां मैं भूखा मर रहा हूं!

18 मैं लौटकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उनसे कहूंगा:
पिताजी! मैंने वे जो स्वर्ग में हैं, उनके विरुद्ध तथा आपके
विरुद्ध पाप किया है.

19 इसके बाद मैं इस योग्य नहीं रह गया कि आपका पुत्र
कहलाऊं. अब आप मुझे अपने यहां मज़दूर ही रख लीजिए.'

20 इसलिये वह उठकर अपने पिता के पास लौट गया. "वह
दूर ही था कि पिता ने उसे देख लिया और वह दया से भर गया.
वह दौड़कर अपने पुत्र के पास गया और उसे गले लगाकर
चूमता रहा.

21 "पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी! मैंने स्वर्ग के विरुद्ध तथा
आपके प्रति पाप किया है, मैं अब इस योग्य नहीं रहा कि मैं
आपका पुत्र कहलाऊं.'

22 "किंतु पिता ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, 'बिना देर किए
सबसे अच्छे वस्त्र लाकर इसे पहनाओ और इसकी उंगली में
अंगूठी और पांवों में जूतियां भी पहनाओ;

23 जाकर एक सबसे अच्छे बछड़े से भोजन तैयार करो. चलो,
हम सब आनंद मनाएं

24 क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, अब जीवित हो गया है; यह
खो गया था किंतु अब मिल गया है.' इसलिये वे सभी आनंद से
भर गए.

25 "उस समय बड़ा बेटा अपने खेतों में काम कर रहा था. जब
वह लौटकर घर आ रहा था, पास आने पर उसे संगीत और
नाचने की आवाज सुनाई दी.

26 उसने एक सेवक को बुलाकर उससे पूछा, 'यह सब क्या हो
रहा है?'

27 'आपका भाई लौट आया है,' उस सेवक ने उत्तर दिया, 'और
आपके पिता ने सबसे अच्छा बछड़ा लेकर भोज तैयार
करवाया है क्योंकि उनका पुत्र उन्हें सकुशल और सुरक्षित
मिल गया है.'

28 "गुस्से में बड़े भाई ने घर के भीतर तक जाना न चाहा.
इसलिये उसके पिता ने ही बाहर आकर उससे विनती की.

29 उसने अपने पिता को उत्तर दिया, 'देखिए, इन सभी वर्षों में
मैं दास जैसे आपकी सेवा करता रहा हूं और कभी भी आपकी
आज्ञा नहीं टाली फिर भी आपने कभी मुझे एक मेमना तक न
दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ मिलकर आनंद मना सकूं.

30 किंतु जब आपका यह पुत्र, जिसने आपकी संपत्ति वेश्याओं
पर उड़ा दी, घर लौट आया, तो आपने उसके लिए सबसे अच्छे
बछड़े का भोजन बनवाया है!'

31 " 'मेरे पुत्र!' पिता ने कहा, 'तुम तो सदा से ही मेरे साथ हो.
वह सब, जो मेरा है, तुम्हारा ही है.

32 हमारे लिए आनंद मनाना और हर्षित होना सही ही है
क्योंकि तुम्हारा यह भाई, जो मर गया था, अब जीवित हो गया
है; वह, जो खो गया था, अब मिल गया है.' "

Luke 16:1

1 प्रभु येशु ने अपने शिष्यों को यह वृत्तांत भी सुनाया: "किसी
धनी व्यक्ति का एक भंडारी था, जिसके विषय में उसे यह
सूचना दी गई कि वह उसकी संपत्ति का दुरुपयोग कर रहा है.

2 इसलिये स्वामी ने उसे बुलाकर उससे पूछताछ की: 'तुम्हारे
विषय में मैं यह क्या सुन रहा हूं? अपने प्रबंधन का हिसाब दे
दो क्योंकि अब तुम भंडारी के पद पर नहीं रह सकते.'

3 "भंडारी मन में विचार करने लगा, 'अब मैं क्या करूं?
मालिक मुझ से भंडारी का पद छीन रहा है. मेरा शरीर इतना
बलवान नहीं कि मैं भूमि खोदने का काम करूं और लज्जा के
कारण मैं भीख भी न मांग सकूंगा.

4 अब मेरे सामने क्या रास्ता बचा रह गया है, मैं समझ गया कि
मेरे लिए क्या करना सही है कि मुझे पद से हटा दिए जाने के
बाद भी लोगों की मित्रता मेरे साथ बनी रहे.'

5 "उसने अपने स्वामी के हर एक कर्ज़दार को बुलवाया. पहले
कर्ज़दार से उसने प्रश्न किया, 'तुम पर मेरे स्वामी का कितना
कर्ज़ है?'

6 " '3,000 लीटर तेल,' उसने उत्तर दिया. "भंडारी ने उससे
कहा, 'लो, यह है तुम्हारा बही खाता. तुरंत बैठकर इसमें
1,500 लिख दो.'

7 "तब उसने दूसरे को बुलाया उससे पूछा, 'तुम पर कितना
कर्ज़ है?' " '30 टन गेहूं.' "भंडारी ने कहा, 'अपना बही खाता
लेकर उसमें 24 लिख दो.'

8 "स्वामी ने इस ठग भंडारी की इस चतुराई भरी योजना की
सराहना की: सांसारिक लोग ज्योति की संतान की तुलना में
अपने जैसे लोगों के साथ अपने आचार-व्यवहार में कितने
अधिक चतुर हैं!

9 मैं तुमसे कहता हूं कि सांसारिक संपत्ति का उपयोग अपने
मित्र बनाने के लिए करो कि जब यह संपत्ति न रहे तो अनंत
काल के घर में तुम्हारा स्वागत हो.

10 "वह, जो थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह उस ज्यादा में भी
विश्वासयोग्य होता है; वह, जो थोड़े में भ्रष्ट है, ज्यादा में भी भ्रष्ट
होगा.

11 इसलिये यदि तुम सांसारिक संपत्ति के प्रति विश्वासयोग्य न
पाए गए तो तुम्हें सच्चा धन कौन सौंपेगा?

12 यदि तुम किसी अन्य की संपत्ति के प्रति विश्वासयोग्य
प्रमाणित न हुए तो कौन तुम्हें वह सौंपेगा, जो तुम्हारा ही है?

13 "किसी भी दास के लिए दो स्वामियों की सेवा नहीं कर
सकता क्योंकि वह एक को तुच्छ मानकर दूसरे के प्रति
समर्पित रहेगा या एक का सम्मान करते हुए दूसरे को तुच्छ
जानेगा. तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा कर ही नहीं
सकते."

14 वे फ़रीसी, जिन्हें धन से लगाव था, ये सब सुनकर प्रभु येशु
का उपहास करने लगे.

15 उन्हें संबोधित करते हुए प्रभु येशु ने कहा, "तुम स्वयं को
अन्यों के सामने नीतिमान प्रस्तुत करते हो किंतु परमेश्वर
तुम्हारे हृदय को जानते हैं. वह, जो मनुष्यों के सामने महान है,
परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है.

16 "व्यवस्था और भविष्यवाणियां बपतिस्मा देनेवाले योहन
तक प्रभाव में थी. उसके बाद से परमेश्वर के राज्य का प्रचार
किया जा रहा है और हर एक इसमें प्रबलता से प्रवेश करता
जा रहा है.

17 स्वर्ग और पृथ्वी का खत्म हो जाना सरल है बजाय इसके कि
व्यवस्था का एक भी बिंदु व्यर्थ प्रमाणित हो.

18 "वह, जो अपनी पत्नी से तलाक लेकर अन्य स्त्री से विवाह
करता है, व्यभिचार करता है; और वह पुरुष, जो उस त्यागी
हुई स्त्री से विवाह करता है, व्यभिचार करता है."

19 प्रभु येशु ने आगे कहा, "एक धनवान व्यक्ति था, जो हमेशा
कीमती तथा अच्छे वस्त्र ही पहनता था. उसकी जीवनशैली
विलासिता से भरी थी.

20 उसके द्वार पर लाज़रॉस नामक एक गरीब व्यक्ति को,
जिसका सारा शरीर घावों से भरा था, लाकर छोड़ दिया जाता
था.

21 वह धनवान व्यक्ति की मेज़ से नीचे गिरे हुए टुकड़े को खाने
के लिए तरसता रहता था; ऊपर से कुत्ते आ-आकर उसके
घावों को चाटते रहते थे.

22 "एक तय समय पर उस गरीब व्यक्ति की मृत्यु हुई और
स्वर्गदूत उसे अब्राहाम के सामने ले गए. कुछ समय बाद धनी
व्यक्ति की भी मृत्यु हुई और उसे भूमि में गाड़ दिया गया.

23 अधोलोक की ताड़ना में पड़े हुए धनवान व्यक्ति ने दूर से
ही अब्राहाम को देखा, जिनके सामने लाज़रॉस बैठा हुआ था.

24 उसने अब्राहाम को पुकारा और उनसे कहा, 'पिता
अब्राहाम, मुझ पर कृपा कीजिए और लाज़रॉस को मेरे पास
भेज दीजिए कि वह अपनी उंगली का सिरा जल में डुबोकर
उससे मेरी जीभ को ठंडक प्रदान करे क्योंकि मैं यहां इस
आग की ताड़ना में पड़ा हुआ हूं.'

25 "किंतु अब्राहाम ने उसे उत्तर दिया, 'मेरे पुत्र, यह न भूलो कि
अपने शारीरिक जीवन में तुमने अच्छी से अच्छी वस्तुएं प्राप्त

की जबकि लाज़रॉस ने तुच्छ वस्तुएं, किंतु वह अब यहां सुख और संतोष में है;

26 और फिर इन सबके अलावा तुम्हारे और हमारे बीच में एक बड़ी दरार बनायी गयी है, जिससे कि यहां से वहां जाने के इच्छुक वहां न जा सकें और न ही वहां से कोई यहां आ सके.'

27 "इस पर उस धनवान व्यक्ति ने विनती की, 'तो पिता, मेरी विनती है कि आप उसे मेरे परिजनों के पास भेज दें;

28 वहां मेरे पांच भाई हैं—कि वह उन्हें सावधान कर दे, ऐसा न हो कि वे भी इस ताड़ना के स्थान में आ जाएं.'

29 "अब्राहाम ने उत्तर दिया, 'उनके पास मोशेह और भविष्यद्वक्ताओं के लेख हैं. सही होगा कि वे उनका पालन करें.'

30 " 'नहीं पिता अब्राहाम,' उसने विरोध करते हुए कहा, 'वे मन तभी फिराएंगे जब कोई मृत व्यक्ति पुनर्जीवित होकर उनके पास जाएगा.'

31 "अब्राहाम ने इसके उत्तर में कहा, 'जब वे मोशेह और भविष्यद्वक्ताओं के आदेशों का पालन नहीं करते तो वे किसी दोबारा जीवित हुए व्यक्ति का भी विश्वास न करेंगे.' "

Luke 17:1

1 इसके बाद अपने शिष्यों से प्रभु येशु ने कहा, "यह असंभव है कि ठोकरें न लगें किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर, जो ठोकर का कारण है.

2 इसके बजाय कि वह निर्बलों के लिए ठोकर का कारण बने, उत्तम यह होता कि उसके गले में चक्की का पाट बांधकर उसे गहरे समुद्र में फेंक दिया जाता.

3 इसलिये तुम स्वयं के प्रति सावधान रहो. "यदि तुम्हारा भाई या बहन अपराध करे तो उसे डांटो और यदि वह मन फिराए तो उसे क्षमा कर दो.

4 यदि वह एक दिन में तुम्हारे विरुद्ध सात बार भी अपराध करे और सातों बार तुमसे आकर कहे, 'मुझे इसका पछतावा है,' तो उसे क्षमा कर दो."

5 प्रेरितों ने उनसे विनती की, "प्रभु, हमारे विश्वास को बढ़ा दीजिए."

6 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "यदि तुम्हारा विश्वास राई के बीज के बराबर भी हो, तो तुम इस शहतूत के पेड़ को यह आज्ञा देते, 'उखड़ जा और जाकर समुद्र में लग जा!' तो यह तुम्हारी आज्ञा का पालन करता.

7 "क्या तुममें से कोई ऐसा है, जिसके खेत में काम करने या भेड़ों की रखवाली के लिए एक दास हो और जब वह दास खेत से लौटे तो वह दास से कहे, 'आओ, मेरे साथ भोजन करो'?

8 क्या वह अपने दास को यह आज्ञा न देगा, 'मेरे लिए भोजन तैयार करो और मुझे भोजन परोसने के लिए तैयार हो जाओ. मैं भोजन के लिए बैठ रहा हूं. तुम मेरे भोजन समाप्त करने के बाद भोजन कर लेना?'

9 क्या वह अपने दास का आभार इसलिये मानेगा कि उसने उसे दिए गए आदेशों का पालन किया है? नहीं!

10 यही तुम सबके लिए भी सही है: जब तुम वह सब कर लो, जिसकी तुम्हें आज्ञा दी गई थी, यह कहो: 'हम अयोग्य सेवक हैं. हमने केवल अपना कर्तव्य पूरा किया है.' "

11 येरूशलेम नगर की ओर बढ़ते हुए प्रभु येशु शमरिया और गलील प्रदेश के बीच से होते हुए जा रहे थे.

12 जब वह गांव में प्रवेश कर ही रहे थे, उनकी भेंट दस कोढ़ रोगियों से हुई, जो दूर ही खड़े रहे.

13 उन्होंने दूर ही से पुकारते हुए प्रभु येशु से कहा, "स्वामी! प्रभु येशु! हम पर कृपा कीजिए!"

14 उन्हें देख प्रभु येशु ने उन्हें आज्ञा दी, "जाकर पुरोहितों द्वारा स्वयं का निरीक्षण करवाओ." जब वे जा ही रहे थे, वे शुद्ध हो गए.

Luke 17:1

15 उनमें से एक, यह अहसास होते ही कि वह शुद्ध हो गया है,
प्रभु येशु के पास लौट आया और ऊंचे शब्द में परमेश्वर की
वंदना करने लगा.

16 प्रभु येशु के चरणों पर गिरकर उसने उनके प्रति धन्यवाद
प्रकट किया—वह शमरियावासी था.

17 प्रभु येशु ने उससे प्रश्न किया, "क्या सभी दस शुद्ध नहीं हुए?
कहां हैं वे अन्य नौ?

18 क्या इस परदेशी के अतिरिक्त किसी अन्य ने परमेश्वर के
प्रति धन्यवाद प्रकट करना सही न समझा?"

19 तब प्रभु येशु ने उससे कहा, "उठो और जाओ. तुम्हारे
विश्वास ने तुम्हें हर तरह से स्वस्थ किया है."

20 एक अवसर पर, जब फ़रीसियों ने उनसे यह जानना चाहा
कि परमेश्वर के राज्य का आगमन कब होगा, तो प्रभु येशु ने
उत्तर दिया, "परमेश्वर के राज्य का आगमन दिखनेवाले
संकेतों के साथ नहीं होगा

21 और न ही इसके विषय में कोई यह कह सकता है, 'देखो,
देखो! यह है परमेश्वर का राज्य!' क्योंकि परमेश्वर का राज्य
तुम्हारे ही बीच में है."

22 तब अपने शिष्यों से उन्मुख हो प्रभु येशु ने कहा, "वह समय
आ रहा है जब तुम मनुष्य के पुत्र के राज्य का एक दिन देखने
के लिए तरस जाओगे और देख न पाओगे.

23 लोग आकर तुम्हें सूचना देंगे, 'देखो, वह वहां है!' या, 'देखो,
वह यहां है!' यह सुनकर तुम चले न जाना और न ही उनके
पीछे भागना

24 क्योंकि मनुष्य के पुत्र का दोबारा आना बिजली कौंधने के
समान होगा—आकाश में एक छोर से दूसरे छोर तक;

25 किंतु उसके पूर्व उसका अनेक यातनाएं सहना और इस
पीढ़ी द्वारा तिरस्कार किया जाना अवश्य है.

26 "ठीक जिस प्रकार नोहा के युग में हुआ था, मनुष्य के पुत्र
के समय में भी होगा,

27 तब भी लोगों में उस समय तक खाना-पीना, विवाहोत्सव
होते रहे, जब तक नोहा ने जहाज़ में प्रवेश न किया. तब पानी
की बाढ़ आई और सब कुछ नाश हो गया.

28 "ठीक यही स्थिति थी लोत के समय में—लोग उत्सव,
लेनदेन, खेती और निर्माण का काम करते रहे

29 किंतु जैसे ही लोत ने सोदोम नगर से प्रस्थान किया, आकाश
से आग और गंधक की बारिश हुई और सब कुछ नाश हो गया.

30 "यही सब होगा उस दिन, जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा.

31 उस समय सही यह होगा कि वह, जो छत पर हो और
उसकी वस्तुएं घर में हों, वह उन्हें लेने नीचे न उतरे. इसी
प्रकार वह, जो खेत में काम कर रहा है, वह भी लौटकर न
आए.

32 याद है लोत की पत्नी!

33 जो अपने प्राणों को बचाना चाहता है, उन्हें खो देता है और
वह, जो अपने जीवन से मोह नहीं रखता, उसे बचा पाता है.

34 उस रात एक बिछौने पर सोए हुए दो व्यक्तियों में से एक
उठा लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा.

35 दो स्त्रियां एक साथ अनाज पीस रही होंगी, एक उठा ली
जाएगी, दूसरी छोड़ दी जाएगी. [

36 खेत में दो व्यक्ति काम कर रहे होंगे एक उठा लिया जाएगा,
दूसरा छोड़ दिया जाएगा.]"

37 उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया, "कब प्रभु?" प्रभु येशु ने उत्तर
दिया, "गिद्ध वहीं इकट्ठा होंगे, जहां शव होता है."

Luke 18:1

1 तब प्रभु येशु ने शिष्यों को यह समझाने के उद्देश्य से कि निराश हुए बिना निरंतर प्रार्थना करते रहना ही सही है, यह दृष्टांत प्रस्तुत किया.

2 "किसी नगर में एक न्यायाधीश था. वह न तो परमेश्वर से डरता था और न किसी को कुछ समझता था.

3 उसी नगर में एक विधवा भी थी, जो बार-बार उस न्यायाधीश के पास 'आकर विनती करती थी कि उसे न्याय दिलाया जाए.'

4 "कुछ समय तक तो वह न्यायाधीश उसे टालता रहा किंतु फिर उसने मन में विचार किया, 'यद्यपि मैं न तो परमेश्वर से डरता हूं और न लोगों से प्रभावित होता हूं

5 फिर भी यह विधवा आ-आकर मेरी नाक में दम किए जा रही है. इसलिये उत्तम यही होगा कि मैं इसका न्याय कर ही दूं कि यह बार-बार आकर मेरी नाक में दम तो न करे.' "

6 प्रभु ने आगे कहा, "उस अधर्मी न्यायाधीश के शब्दों पर ध्यान दो कि उसने क्या कहा.

7 तब क्या परमेश्वर अपने उन चुने हुओं का न्याय न करेंगे, जो दिन-रात उनके नाम की दोहाई दिया करते हैं? क्या वह उनके संबंध में देर करेंगे?

8 सच मानो, परमेश्वर बिना देर किए उनके पक्ष में सक्रिय हो जाएंगे. फिर भी, क्या मनुष्य के पुत्र का पुनरागमन पर विश्वास बना रहेगा?"

9 तब प्रभु येशु ने उनके लिए, जो स्वयं को तो धर्मी मानते थे परंतु अन्यों को तुच्छ दृष्टि से देखते थे, यह दृष्टांत प्रस्तुत किया.

10 "प्रार्थना करने दो व्यक्ति मंदिर में गए, एक फ़रीसी था तथा दूसरा चुंगी लेनेवाला.

11 फ़रीसी की प्रार्थना इस प्रकार थी: 'परमेश्वर! मैं आपका आभारी हूं कि मैं अन्य मनुष्यों जैसा नहीं हूं—छली, अन्यायी, व्यभिचारी और न इस चुंगी लेनेवाले के जैसा.

12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं और अपनी सारी आय का दसवां अंश दिया करता हूं.'

13 "किंतु चुंगी लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा. उसने दृष्टि तक उठाने का साहस न किया, अपने सीने पर शोक में प्रहार करते हुए उसने कहा, 'प्रभु परमेश्वर! कृपा कीजिए मुझ पापी पर!'

14 "विश्वास करो वास्तव में यही चुंगी लेनेवाला (परमेश्वर से) धर्मी घोषित किया जाकर घर लौटा—न कि वह फ़रीसी. क्योंकि हर एक, जो स्वयं को बड़ा बनाता है, छोटा बना दिया जाएगा तथा जो व्यक्ति स्वयं नम्र हो जाता है, वह ऊंचा उठाया जाता है."

15 लोग अपने बालकों को प्रभु येशु के पास ला रहे थे कि प्रभु येशु उन्हें स्पर्श मात्र कर दें. शिष्य यह देख उन्हें डांटने लगे.

16 प्रभु येशु ने बालकों को अपने पास बुलाते हुए कहा, "नन्हे बालकों को मेरे पास आने दो. मत रोको उन्हें! क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है.

17 मैं तुम पर एक अटल सच्चाई प्रकट कर रहा हूं; जो परमेश्वर के राज्य को एक नन्हे बालक के भाव में ग्रहण नहीं करता, वह उसमें कभी प्रवेश न कर पाएगा."

18 एक प्रधान ने उनसे प्रश्न किया, "उत्तम गुरु! अनंत काल के जीवन को पाने के लिए मैं क्या करूं?"

19 "उत्तम मुझे क्यों कह रहे हो?" प्रभु येशु ने कहा, "परमेश्वर के अलावा उत्तम कोई भी नहीं है.

20 आज्ञा तो तुम्हें मालूम ही हैं: व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने माता-पिता का सम्मान करना."

21 "इन सबका पालन तो मैं बचपन से करता आ रहा हूं," उसने उत्तर दिया.

22 यह सुन प्रभु येशु ने उससे कहा, "एक कमी फिर भी है तुममें. अपनी सारी संपत्ति बेचकर निर्धनों में बांट दो. धन तुम्हें स्वर्ग में प्राप्त होगा. तब आकर मेरे पीछे हो लो."

23 यह सुन वह प्रधान बहुत दुःखी हो गया क्योंकि वह बहुत
धनी था.

24 उसे देखकर प्रभु येशु ने कहा, “धनवानों का परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश कैसा कठिन है!

25 एक धनी के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने की तुलना में
सुई के छेद में से ऊंट का पार हो जाना सरल है.”

26 इस पर सुननेवाले पूछने लगे, “तब किसका उद्धार संभव
है?”

27 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “जो मनुष्य के लिए असंभव है, वह
परमेश्वर के लिए संभव है.”

28 पेतरॉस ने प्रभु येशु से कहा, “हम तो अपना घरबार
छोड़कर आपके पीछे चल रहे हैं.”

29 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “सच तो यह है कि ऐसा
कोई भी नहीं, जिसने परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी घर-
गृहस्थी, पत्नी, भाई, बहन, माता-पिता या संतान का त्याग
किया हो

30 और उसे इस समय में कई गुणा अधिक तथा आगामी युग
में अनंत काल का जीवन प्राप्त न हो.”

31 तब प्रभु येशु ने बारहों शिष्यों को अलग ले जाकर उन पर
प्रकट किया, “हम येरूशलेम नगर जा रहे हैं. भविष्यद्वक्ताओं
द्वारा मनुष्य के पुत्र के विषय में जो भी लिखा गया है, वह पूरा
होने पर है,

32 उसे अन्यजातियों को सौंप दिया जाएगा. उसका उपहास
किया जाएगा, उसे अपमानित किया जाएगा, उस पर थूका
जाएगा.

33 उसे कोड़े लगाने के बाद वे उसे मार डालेंगे और वह तीसरे
दिन मरे हुओं में से जीवित हो जाएगा.”

34 शिष्यों को कुछ भी समझ में न आया. उनसे इसका अर्थ
छिपाकर रखा गया था. इस विषय में प्रभु येशु की कही बातें
शिष्यों की समझ से परे थी.

35 जब प्रभु येशु येरीख़ो नगर के पास पहुंचे, उन्हें एक अंधा
मिला, जो मार्ग के किनारे बैठा हुआ भिक्षा मांग रहा था.

36 भीड़ का शोर सुनकर उसने जानना चाहा कि क्या हो रहा
है.

37 उन्होंने उसे बताया, “नाज़रेथ के येशु यहां से होकर जा
निकल रहें हैं.”

38 वह अंधा पुकार उठा, “येशु! दावीद की संतान! मुझ पर दया
कीजिए!”

39 उन्होंने, जो आगे-आगे चल रहे थे, उसे डांटा और उसे शांत
रहने की आज्ञा दी. इस पर वह और भी ऊंचे शब्द में पुकारने
लगा, “दावीद के पुत्र! मुझ पर कृपा कीजिए!”

40 प्रभु येशु रुक गए और उन्हें आज्ञा दी कि वह व्यक्ति उनके
पास लाया जाए. जब वह उनके पास लाया गया, प्रभु येशु ने
उससे प्रश्न किया,

41 “क्या चाहते हो? मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?” “प्रभु मैं देखना
चाहता हूं!” उसने उत्तर दिया.

42 प्रभु येशु ने कहा, “रोशनी प्राप्त करो. तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें
स्वस्थ किया है.”

43 तत्काल ही वह देखने लगा. परमेश्वर की वंदना करते हुए
वह प्रभु येशु के पीछे चलने लगा. यह देख सारी भीड़ भी
परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी.

Luke 19:1

1 प्रभु येशु ने येरीख़ो नगर में प्रवेश किया.

2 वहां ज़क्ख़ाइयॉस नामक एक व्यक्ति था, जो प्रधान चुंगी
लेनेवाला और धनी व्यक्ति था.

3 वह यह देखने का प्रयत्न कर रहा था कि प्रभु येशु कौन हैं. भीड़ में वह प्रभु येशु को देख नहीं पा रहा था क्योंकि वह नाटा था.

4 इसलिये प्रभु येशु को देखने के लिए वह दौड़कर आगे बढ़ा और गूलर के एक पेड़ पर चढ़ गया क्योंकि प्रभु येशु उसी मार्ग से जाने को थे.

5 जब प्रभु येशु वहां पहुंचे, उन्होंने ऊपर देखते हुए उससे कहा, "ज़क्ख़ाइयॉस, तुरंत नीचे आ जाओ. ज़रूरी है कि आज मैं तुम्हारे घर में ठहरूं."

6 वह तुरंत नीचे उतरा और खुशी से उन्हें अपने घर ले गया.

7 यह देख सभी बड़बड़ाने लगे, "वह तो एक ऐसे व्यक्ति के घर गया है, जो अपराधी है."

8 किंतु ज़क्ख़ाइयॉस ने खड़े होकर प्रभु से कहा, "प्रभुवर! मैं अपनी आधी संपत्ति निर्धनों में दान कर दूंगा और यदि मैंने किसी से गलत ढंग से कुछ भी लिया है तो मैं उसे चौगुनी राशि लौटा दूंगा."

9 प्रभु येशु ने उससे कहा, "आज इस परिवार में उद्धार का आगमन हुआ है—यह व्यक्ति भी अब्राहाम की संतान है.

10 मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को खोजने तथा उन्हें उद्धार देने आया है."

11 जब वे इन बातों को सुन रहे थे, प्रभु येशु ने एक दृष्टांत प्रस्तुत किया क्योंकि अब वे येरूशलेम नगर के पास पहुंच रहे थे और लोगों की आशा थी कि परमेश्वर का राज्य तुरंत ही प्रकट होने पर है.

12 प्रभु येशु ने कहना प्रारंभ किया: "एक कुलीन व्यक्ति राजपद प्राप्त करने के लिए दूर देश की यात्रा पर निकला.

13 यात्रा के पहले उसने अपने दस दासों को बुलाकर उन्हें दस सोने के सिक्के देते हुए कहा, 'मेरे लौटने तक इस राशि से व्यापार करना.'

14 "लोग उससे घृणा करते थे इसलिये उन्होंने उसके पीछे एक सेवकों की टुकड़ी को इस संदेश के साथ भेजा, 'हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर शासन करे.'

15 "इस पर भी उसे राजा बना दिया गया. लौटने पर उसने उन दासों को बुलवाया कि वह यह मालूम करे कि उन्होंने उस राशि से व्यापार कर कितना लाभ कमाया है.

16 "पहले दास ने आकर बताया, 'स्वामी, आपके द्वारा दिए गए सोने के सिक्कों से मैंने दस सिक्के और कमाए हैं.'

17 " 'शाबाश, मेरे योग्य दास!' स्वामी ने उत्तर दिया, 'इसलिये कि तुम बहुत छोटी ज़िम्मेदारी में भी विश्वासयोग्य पाए गए, तुम दस नगरों की ज़िम्मेदारी संभालो.'

18 "दूसरे दास ने आकर बताया, 'स्वामी, आपके द्वारा दिए गए सोने के सिक्कों से मैंने पांच और कमाए हैं.'

19 "स्वामी ने उत्तर दिया, 'तुम पांच नगरों की ज़िम्मेदारी संभालो.'

20 "तब एक अन्य दास आया और स्वामी से कहने लगा, 'स्वामी, यह है आपका दिया हुआ सोने का सिक्का, जिसे मैंने बड़ी ही सावधानी से कपड़े में लपेट, संभाल कर रखा है.

21 मुझे आपसे भय था क्योंकि आप कठोर व्यक्ति हैं. आपने जिसका निवेश भी नहीं किया, वह आप ले लेते हैं, जो आपने बोया ही नहीं, उसे काटते हैं.'

22 "स्वामी ने उसे उत्तर दिया, 'अरे ओ दुष्ट! तेरा न्याय तो मैं तेरे ही शब्दों के आधार पर करूंगा. जब तू जानता है कि मैं एक कठोर व्यक्ति हूं; मैं वह ले लेता हूं जिसका मैंने निवेश ही नहीं किया और वह काटता हूं, जो मैंने बोया ही नहीं, तो

23 तूने मेरा धन साहूकारों के पास जमा क्यों नहीं कर दिया कि मैं लौटने पर उसे ब्याज सहित प्राप्त कर सकता?'

24 "तब उसने अपने पास खड़े दासों को आज्ञा दी, 'इसकी स्वर्ण मुद्रा लेकर उसे दे दो, जिसके पास अब दस मुद्राएं हैं.'

Luke 19:1

25 “उन्होंने आपत्ति करते हुए कहा, ‘स्वामी, उसके पास तो
पहले ही दस हैं!’

26 “स्वामी ने उत्तर दिया, ‘सच्चाई यह है: हर एक, जिसके पास
है, उसे और भी दिया जाएगा किंतु जिसके पास नहीं है, उससे
वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है.

27 मेरे इन शत्रुओं को, जिन्हें मेरा उन पर शासन करना अच्छा
नहीं लग रहा, यहां मेरे सामने लाकर प्राण-दंड दो.’ ”

28 इसके बाद प्रभु येशु उनके आगे-आगे चलते हुए येरूशलेम
नगर की ओर बढ़ गए.

29 जब प्रभु येशु ज़ैतून नामक पर्वत पर बसे गांव बैथफ़गे तथा
बैथनियाह पहुंचे, उन्होंने अपने दो शिष्यों को इस आज्ञा के
साथ आगे भेज दिया,

30 “सामने उस गांव में जाओ. वहां प्रवेश करते ही तुम्हें गधे का
एक बच्चा बंधा हुआ मिलेगा, जिसकी अब तक किसी ने
सवारी नहीं की है; उसे खोलकर यहां ले आओ.

31 यदि कोई तुमसे यह प्रश्न करे, ‘क्यों खोल रहे हो इसे?’ तो
उसे उत्तर देना, ‘प्रभु को इसकी ज़रूरत है.’ ”

32 जिन्हें इसके लिए भेजा गया था, उन्होंने ठीक वैसा ही पाया,
जैसा उन्हें सूचित किया गया था.

33 जब वे गधी के उस बच्चे को खोल ही रहे थे, उसके स्वामियों
ने उनसे पूछा, “क्यों खोल रहे हो इसे?”

34 उन्होंने उत्तर दिया, “प्रभु को इसकी ज़रूरत है.”

35 वे उसे प्रभु के पास ले आए और उस पर अपने वस्त्र
डालकर प्रभु येशु को उस पर बैठा दिया.

36 जब प्रभु जा रहे थे, लोगों ने अपने बाहरी वस्त्र मार्ग पर बिछा
दिए.

37 जब वे उस स्थान पर पहुंचे, जहां ज़ैतून पर्वत का ढाल प्रारंभ
होता है, सारी भीड़ उन सभी अद्भुत कामों को याद करते
हुए, जो उन्होंने देखे थे, ऊंचे शब्द में आनंदपूर्वक परमेश्वर की
स्तुति करने लगी:

38 “स्तुति के योग्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम में आ रहा है!”
“स्वर्ग में शांति और सर्वोच्च में महिमा हो!”

39 भीड़ में से कुछ फ़रीसियों ने, आपत्ति उठाते हुए प्रभु येशु से
कहा, “गुरु, अपने शिष्यों को डांटिए!”

40 “मैं आपको यह बताना चाहता हूं,” प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर
दिया, “यदि ये शांत हो गए तो स्तुति इन पत्थरों से निकलने
लगेगी.”

41 जब वह येरूशलेम नगर के पास आए तो नगर को देख वह
यह कहते हुए रो पड़े,

42 “यदि तुम, हां तुम, आज इतना ही समझ लेते कि शांति का
मतलब क्या है! किंतु यह तुमसे छिपाकर रखा गया है.

43 वे दिन आ रहे हैं जब शत्रु सेना तुम्हारे चारों ओर घेराबंदी
करके तुम्हारे निकलने का रास्ता बंद कर देगी.

44 वे तुम्हें तथा तुम्हारी संतानों को धूल में मिला देंगे. वे तुम्हारे
घरों का एक भी पत्थर दूसरे पत्थर पर न छोड़ेंगे क्योंकि तुमने
तुम्हें दिए गए सुअवसर को नहीं पहचाना.”

45 मंदिर में प्रवेश करने पर प्रभु येशु ने सभी बेचने वालों को
यह कहते हुए वहां से बाहर करना प्रारंभ कर दिया,

46 “लिखा है: मेरा घर प्रार्थना का घर होगा, किंतु तुमने तो इसे
डाकुओं की गुफ़ा बना रखी है!”

47 प्रभु येशु हर रोज़ मंदिर में शिक्षा दिया करते थे. प्रधान
पुरोहित, शास्त्री तथा जनसाधारण में से प्रधान नागरिक
उनकी हत्या की योजना कर रहे थे,

48 किंतु उनकी कोई भी योजना सफल नहीं हो रही थी क्योंकि
लोग प्रभु येशु के प्रवचनों से अत्यंत प्रभावित थे.

Luke 20:1

Luke 20:1

1 एक दिन जब प्रभु येशु मंदिर में शिक्षा दे रहे तथा सुसमाचार
का प्रचार कर रहे थे, प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों ने पुरनियों
के साथ आकर प्रभु येशु का सामना किया और

2 उन्होंने उनसे पूछा, "यह बताओ, तुम किस अधिकार से ये
सब कर रहे हो? कौन है वह, जिसने तुम्हें यह अधिकार दिया
है?"

3 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, "एक प्रश्न मैं भी आपसे पूछता
हूं: मुझे बताइए,

4 योहन का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था या मनुष्यों की
ओर से?"

5 इस पर वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे, "यदि हम
कहते हैं, 'परमेश्वर की ओर से,' तो वह कहेगा, 'तब तुमने
योहन का विश्वास क्यों नहीं किया?'

6 किंतु यदि हम कहें, 'मनुष्यों से,' तब तो जनता हमारा पथराव
कर हमें मार डालेगी क्योंकि उनका तो यह पक्का विश्वास है
कि योहन एक भविष्यवक्ता थे."

7 इसलिये उन्होंने प्रभु येशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते
कि वह बपतिस्मा कहां से था."

8 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, "तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता
कि किस अधिकार से मैं ये काम कर रहा हूं."

9 प्रभु येशु ने भीड़ को यह दृष्टांत सुनाया: "एक व्यक्ति ने एक
दाख की बारी लगाई और उसे किसानों को पट्टे पर देकर लंबी
यात्रा पर चला गया.

10 फसल तैयार होने पर उसने अपने एक दास को उनके पास
भेजा कि वे फसल का एक भाग उसे दे दें किंतु उन किसानों
ने उसकी पिटाई कर उसे खाली हाथ ही लौटा दिया.

11 तब उसने दूसरे दास को उनके पास भेजा. किसानों ने उस
दास की भी पिटाई की, उसके साथ शर्मनाक व्यवहार किया
और उसे भी खाली हाथ लौटा दिया.

12 उसने तीसरे दास को उनके पास भेजा. उन्होंने उसे भी
घायल कर बाहर फेंक दिया.

13 "तब दाख की बारी के स्वामी ने विचार किया: 'अब मेरा
क्या करना सही होगा? मैं अपने प्रिय पुत्र को उनके पास
भेजूंगा. ज़रूर वे उसका सम्मान करेंगे.'

14 "किंतु उसके पुत्र को देख किसानों ने आपस में विचार-
विमर्श किया, 'सुनो, यह तो वारिस है! चलो, इसकी हत्या कर
दें जिससे यह संपत्ति ही हमारी हो जाए.'

15 उन्होंने उसे बारी के बाहर निकालकर उसकी हत्या कर दी.
"यह बताओ, उद्यान का स्वामी अब उनके साथ क्या करेगा?

16 यही कि वह आएगा और इन किसानों का वध कर बारी
अन्य किसानों को सौंप देगा." यह सुन लोगों ने कहा, "ऐसा
कभी न हो!"

17 तब उनकी ओर देखकर प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, "तो
इस लेख का मतलब क्या है: " 'राजमिस्त्रियों द्वारा निकम्मी
ठहराई शिला ही आधार की शिला बन गई'?"

18 "हर एक, जो इस पत्थर पर गिरेगा, टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा
किंतु जिस किसी पर यह पत्थर गिरेगा उसे कुचलकर चूर्ण
बना देगा."

19 फलस्वरूप प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री तत्क्षण प्रभु येशु को
पकड़ने की योजना में जुट गए, क्योंकि वे यह समझ गए थे कि
प्रभु येशु ने उन पर ही यह दृष्टांत कहा है. किंतु उन्हें भीड़ का
भय था.

20 वे प्रभु येशु की गतिविधियों पर दृष्टि रखे हुए थे. उन्होंने प्रभु
येशु के पास अपने गुप्तचर भेजे कि वे धर्म का ढोंग कर प्रभु
येशु को उनकी ही किसी बात में फंसाकर उन्हें राज्यपाल को
सौंप दें.

21 गुप्तचरों ने प्रभु येशु से प्रश्न किया, “गुरुवर, यह तो हम
जानते हैं कि आपकी बातें तथा शिक्षाएं सही हैं और आप
किसी के प्रति पक्षपाती भी नहीं हैं. आप पूरी सच्चाई में
परमेश्वर के विषय में शिक्षा दिया करते हैं.

22 इसलिये यह बताइए कि कयसर को कर देना न्याय संगत
है या नहीं?”

23 प्रभु येशु ने उनकी चतुराई जानते हुए उनसे कहा.

24 “मुझे एक दीनार दिखाओ. इस पर आकृति तथा मुद्रण
किसका है?” उन्होंने उत्तर दिया, “कयसर का.”

25 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तो जो कयसर का है. वह कयसर
को और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो.”

26 भीड़ की उपस्थिति में वे प्रभु येशु को उनकी बातों के कारण
पकड़ने में असफल रहे. प्रभु येशु के इस उत्तर से वे चकित थे
और आगे कुछ भी न कह पाए.

27 सदूकी समुदाय के कुछ लोग, जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं
करते, प्रभु येशु के पास आए.

28 उन्होंने उनसे प्रश्न किया, “गुरुवर, हमारे लिए मोशेह के
निर्देश हैं यदि किसी निःसंतान पुरुष का पत्नी के रहते हुए
निधन हो जाए तो उसका भाई उस स्त्री से विवाह कर अपने
भाई के लिए संतान पैदा करे.

29 सात भाई थे. पहले ने विवाह किया और निःसंतान ही
उसकी मृत्यु हो गई.

30 तब दूसरे ने

31 और फिर तीसरे ने उससे विवाह किया और इस प्रकार
सातों ही निःसंतान चल बसे.

32 अंततः उस स्त्री की भी मृत्यु हो गई.

33 अब यह बताइए कि पुनरुत्थान पर वह किसकी पत्नी
कहलाएगी? क्योंकि उसका विवाह तो सातों भाइयों से हुआ
था.”

34 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “विवाह केवल इसी लोक में
होते हैं.

35 वे, जो आनेवाले लोक में प्रवेश तथा मरे हुओं में से जी उठने
के योग्य गिने जाते हैं, वैवाहिक अवस्था में प्रवेश नहीं करते.

36 जी उठने पर लोग न तो वैवाहिक अवस्था में होंगे और न ही
कभी उनकी मृत्यु होगी क्योंकि वहां वे स्वर्गदूतों जैसे होते हैं.
जी उठने के परिणामस्वरूप वे परमेश्वर की संतान होंगे.

37 मरे हुओं का जी उठना एक सच्चाई है, इसकी पुष्टि स्वयं
मोशेह ने जलती हुई झाड़ी के विवरण में की है, जहां वह प्रभु
को अब्राहाम का परमेश्वर, यित्सहाक का परमेश्वर तथा
याकोब का परमेश्वर कहते हैं.

38 इसलिये वह मरे हुओं के नहीं, जीवितों के परमेश्वर हैं
क्योंकि उनके सामने ये सभी जीवित हैं.”

39 कुछ शास्त्रियों ने इसके उत्तर में कहा, “गुरुवर, अति उत्तम
उत्तर दिया आपने!”

40 उनमें से किसी को भी अब उनसे किसी भी विषय में प्रश्न
करने का साहस न रहा.

41 प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, “लोग यह क्यों कहते हैं कि
मसीह दावीद की संतान हैं,

42 क्योंकि स्वयं दावीद स्तोत्र संहिता में कहते हैं: “ ‘परमेश्वर ने
मेरे प्रभु से कहा, “मेरे दायें पक्ष में बैठे रहो,

43 मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे अधीन करूंगा.” ’

44 जब दावीद उन्हें प्रभु कहकर संबोधित करते हैं तब वह
दावीद के पुत्र कैसे हुए?”

45 सारी भीड़ को सुनते हुए प्रभु येशु ने शिष्यों को संबोधित
करते हुए कहा,

46 “उन शास्त्रियों से सावधान रहना, जो लंबे ढीले लहराते वस्त्र
पहने हुए घूमा करते हैं, सार्वजनिक स्थलों पर सम्मानपूर्ण
नमस्कार की आशा करते है. वे यहूदी सभागृहों में मुख्य
आसन और दावतों में मुख्य स्थान की प्रीति रखते है.

47 वे विधवाओं के घर हड़प जाते हैं तथा मात्र दिखावे के
उद्देश्य से लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करते हैं. कठोर होगा इनका
दंड!”

Luke 21:1

1 प्रभु येशु ने देखा कि धनी व्यक्ति दानकोष में अपना अपना
दान डाल रहे हैं.

2 उन्होंने यह भी देखा कि एक निर्धन विधवा ने दो छोटे सिक्के
डाले हैं.

3 इस पर प्रभु येशु ने कहा, “सच यह है कि इस निर्धन विधवा
ने उन सभी से बढ़कर दिया है.

4 इन सबने तो अपने धन की बढ़ती में से दिया है किंतु इस
विधवा ने अपनी कंगाली में से अपनी सारी जीविका ही दे दी
है.”

5 जब कुछ शिष्य मंदिर के विषय में चर्चा कर रहे थे कि यह
भवन कितने सुंदर पत्थरों तथा मन्नत की भेंटों से सजाया है;

6 प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जिन वस्तुओं को तुम इस समय
सराह रहे हो, एक दिन आएगा कि इन भवनों का एक भी
पत्थर दूसरे पर स्थापित न दिखेगा—हर एक पत्थर भूमि पर
पड़ा होगा.”

7 उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया, “गुरुवर, यह कब घटित होगा
तथा इनके पूरा होने के समय का चिन्ह क्या होगा?”

8 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “सावधान रहना कि तुम भटका न
दिए जाओ, क्योंकि मेरे नाम में अनेक आएंगे और दावा करेंगे,
‘मैं हूं मसीह’ तथा ‘वह समय पास आ गया है,’ किंतु उनकी न
सुनना.

9 जब तुम युद्धों तथा बलवों के समाचार सुनो तो भयभीत न
होना. इनका पहले घटना ज़रूरी है फिर भी इनके तुरंत बाद
अंत नहीं होगा.”

10 तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, “राष्ट्र-राष्ट्र के तथा राज्य-राज्य
के विरुद्ध उठ खड़ा होगा.

11 भीषण भूकंप आएंगे. विभिन्न स्थानों पर महामारियां होंगी
तथा अकाल पड़ेंगे. भयावह घटनाएं होंगी तथा आकाश में
अचंभित दृश्य दिखाई देंगे.

12 “इन सबके पहले वे तुम्हें पकड़ लेंगे और तुम्हें यातनाएं देंगे.
मेरे नाम के कारण वे तुम्हें सभागृहों में ले जाएंगे, बंदीगृह में
डाल देंगे तथा तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के हाथों में सौंप
देंगे.

13 तुम्हें गवाही देने का सुअवसर प्राप्त हो जाएगा.

14 इसलिये यह सुनिश्चित करो कि तुम पहले ही अपने बचाव
की तैयारी नहीं करोगे,

15 क्योंकि तुम्हें अपने बचाव में कहने के विचार तथा बुद्धि मैं
दूंगा, जिसका तुम्हारे विरोधी न तो सामना कर सकेंगे और न
ही खंडन.

16 तुम्हारे माता-पिता, भाई-बहन तथा परिजन और मित्र ही
तुम्हारे साथ धोखा करेंगे—वे तुममें से कुछ की तो हत्या भी
कर देंगे.

17 मेरे नाम के कारण सभी तुमसे घृणा करेंगे.

18 फिर भी तुम्हारे एक बाल तक की हानि न होगी.

19 तुम्हारे धीरज में छिपी होगी तुम्हारे जीवन की सुरक्षा.

20 “जिस समय येरूशलेम नगर सेनाओं द्वारा घिरा हुआ दिखे, तब यह समझ लेना कि विनाश पास है.

21 तो वे, जो यहूदिया प्रदेश में हों पर्वतों पर भागकर जाएं; वे, जो नगर में हैं, नगर छोड़कर चले जाएं; जो नगर के बाहर हैं, वे नगर में प्रवेश न करें

22 क्योंकि यह बदला लेने का समय होगा कि वह सब, जो लेखों में पहले से लिखा है, पूरा हो जाए.

23 दयनीय होगी गर्भवती और दूध पिलाती स्त्रियों की स्थिति! क्योंकि यह मनुष्यों पर क्रोध तथा पृथ्वी पर घोर संकट का समय होगा.

24 वे तलवार से घात किए जाएंगे, अन्य राष्ट्र उन्हें बंदी बनाकर ले जाएंगे. येरूशलेम नगर गैर-यहूदियों द्वारा उस समय तक रौंदा जाएगा जब तक गैर-यहूदियों का समय पूरा न हो जाए.

25 “सूर्य, चंद्रमा और तारों में अद्भुत चिह्न दिखाई देंगे. पृथ्वी पर राष्ट्रों में आतंक छा जाएगा. गरजते सागर की लहरों के कारण लोग घबरा जाएंगे.

26 लोग भय और इस आशंका से मूर्च्छित हो जाएंगे कि अब संसार का क्या होगा क्योंकि आकाशमंडल की शक्तियां हिलायी जाएंगी.

27 तब वे मनुष्य के पुत्र को बादल में सामर्थ्य और प्रताप में नीचे आता हुआ देखेंगे.

28 जब ये घटनाएं घटित होने लगें, साहस के साथ स्थिर खड़े होकर आनेवाली घटना की प्रतीक्षा करो क्योंकि समीप होगा तुम्हारा छुटकारा.”

29 तब प्रभु येशु ने उन्हें इस दृष्टांत के द्वारा शिक्षा दी: “अंजीर के पेड़ तथा अन्य वृक्षों पर ध्यान दो.

30 जब उनमें कोंपलें निकलने लगती हैं तो तुम स्वयं जान जाते हो कि गर्मी का समय पास है.

31 इसी प्रकार, जब तुम इन घटनाओं को घटित होते हुए देखो तो तुम यह जान जाओगे कि परमेश्वर का राज्य अब पास है.

32 “सच्चाई तो यह है कि इन घटनाओं के हुए बिना इस युग का अंत नहीं होगा.

33 आकाश तथा पृथ्वी खत्म हो जाएंगे किंतु मेरे कहे हुए शब्द कभी नहीं.

34 “सावधान रहना कि तुम्हारा हृदय जीवन संबंधी चिंताओं, दुर्व्यसनों तथा मतवालेपन में पड़कर सुस्त न हो जाए और वह दिन तुम पर अचानक से फंदे जैसा आ पड़े.

35 उस दिन का प्रभाव पृथ्वी के हर एक मनुष्य पर पड़ेगा.

36 हमेशा सावधान रहना, प्रार्थना करते रहना कि तुम्हें इन आनेवाली घटनाओं से निकलने के लिए बल प्राप्त हो और तुम मनुष्य के पुत्र की उपस्थिति में खड़े हो सको.”

37 दिन के समय प्रभु येशु मंदिर में शिक्षा दिया करते तथा संध्याकाल में वह ज़ैतून पर्वत पर जाकर प्रार्थना करते हुए रात बिताया करते थे.

38 लोग भोर में उनका प्रवचन सुनने मंदिर आ जाया करते थे.

Luke 22:1

1 अखमीरी रोटी का उत्सव, जो फ़सह पर्व कहलाता है, पास आ रहा था.

2 प्रधान पुरोहित तथा शास्त्री इस खोज में थे कि प्रभु येशु को किस प्रकार मार डाला जाए, किंतु उन्हें लोगों का भय था.

3 शैतान ने कारियोतवासी यहूदाह में, जो बारह शिष्यों में से एक था, प्रवेश किया.

4 उसने प्रधान पुरोहितों तथा अधिकारियों से मिलकर निश्चित किया कि वह किस प्रकार प्रभु येशु को पकड़वा सकता है.

5 इस पर प्रसन्न हो वे उसे इसका दाम देने पर सहमत हो गए.

6 यहूदाह प्रभु येशु को उनके हाथ पकड़वा देने के ऐसे
सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगा, जब आस-पास भीड़ न हो.

7 तब अखमीरी रोटी का उत्सव आ गया, जब फ़सह का मेमना
बलि किया जाता था.

8 प्रभु येशु ने पेतरॉस और योहन को इस आज्ञा के साथ भेजा,
“जाओ और हमारे लिए फ़सह की तैयारी करो.”

9 उन्होंने उनसे प्रश्न किया, “प्रभु, हम किस स्थान पर इसकी
तैयारी करें, आप क्या चाहते हैं?”

10 प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “नगर में प्रवेश करते ही तुम्हें
एक व्यक्ति पानी का घड़ा ले जाता हुआ मिलेगा. उसका पीछा
करते हुए तुम उस घर में चले जाना,

11 जिस घर में वह प्रवेश करेगा. उस घर के स्वामी से कहना,
‘गुरु ने पूछा है, “वह अतिथि कक्ष कहां है जहां मैं अपने शिष्यों
के साथ फ़सह खाऊंगा?” ’

12 वह तुमको एक विशाल, सुसज्जित ऊपरी कक्ष दिखाएगा;
तुम वहीं सारी तैयारी करना.”

13 यह सुन वे दोनों वहां से चले गए और सब कुछ ठीक वैसा
ही पाया जैसा प्रभु येशु ने कहा था. उन्होंने वहां फ़सह तैयार
किया.

14 नियत समय पर प्रभु येशु अपने प्रेरितों के साथ भोज पर
बैठे.

15 उन्होंने प्रेरितों से कहा, “मेरी बड़ी लालसा थी कि मैं अपने
दुःख-भोग के पहले यह फ़सह तुम्हारे साथ खाऊं.

16 क्योंकि सच यह है कि मैं इसे दोबारा तब तक नहीं खाऊंगा
जब तक यह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो.”

17 तब उन्होंने प्याला उठाया, परमेश्वर के प्रति धन्यवाद दिया
और कहा, “इसे लो, आपस में बांट लो

18 क्योंकि यह निर्धारित है कि जब तक परमेश्वर के राज्य का
आगमन न हो जाए, दाख का रस तब तक मैं नहीं पिऊंगा.”

19 तब उन्होंने रोटी ली, धन्यवाद देते हुए उसे तोड़ा और शिष्यों
को यह कहते हुए दे दी, “यह मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए
दिया जा रहा है. मेरी याद में तुम ऐसा ही किया करना.”

20 इसी प्रकार इसके बाद प्रभु येशु ने प्याला उठाया और कहा,
“यह प्याला मेरे लहू में, जो तुम्हारे लिए बहाया जा रहा है, नई
वाचा है.

21 वह, जो मुझे पकड़वाएगा हमारे साथ इस भोज में शामिल
है.

22 मनुष्य का पुत्र, जैसा उसके लिए तय किया गया है, आगे
बढ़ रहा है, किंतु धिक्कार है उस व्यक्ति पर जो उसे पकड़वा
रहा है!”

23 यह सुन वे आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि वह कौन
हो सकता है, जो यह करने पर है.

24 उनके बीच यह विवाद भी उठ खड़ा हुआ कि उनमें से
सबसे बड़ा कौन है.

25 यह जान प्रभु येशु ने उनसे कहा, “गैर-यहूदियों के राजा उन
पर शासन करते हैं और वे, जिन्हें उन पर अधिकार है, उनके
हितैषी कहलाते हैं.

26 किंतु तुम वह नहीं हो—तुममें जो बड़ा है, वह सबसे छोटे
के समान हो जाए और राजा सेवक समान.

27 बड़ा कौन है—क्या वह, जो भोजन पर बैठा है या वह, जो
खड़ा हुआ सेवा कर रहा है? तुम्हारे मध्य मैं सेवक के समान
हूं.

28 तुम्हीं हो, जो मेरे विषम समयों में मेरा साथ देते रहे हो.

29 इसलिये जैसा मेरे पिता ने मुझे एक राज्य प्रदान किया है,

30 वैसा ही मैं भी तुम्हें यह अधिकार देता हूं कि तुम मेरे राज्य
में मेरी मेज़ पर बैठकर मेरे साथ संगति करो, और सिंहासनों
पर बैठकर इस्राएल के बारह वंशों का न्याय.

31 “शिमओन, शिमओन, सुनो! शैतान ने तुम सबको गेहूं के
समान अलग करने की आज्ञा प्राप्त कर ली है.

32 किंतु शिमओन, तुम्हारे लिए मैंने प्रार्थना की है कि तुम्हारे
विश्वास का पतन न हो. जब तुम पहले जैसी स्थिति पर लौट
आओ तो अपने भाइयों को भी विश्वास में मजबूत करना.”

33 पेतरॉस ने प्रभु येशु से कहा, “प्रभु, मैं तो आपके साथ दोनों
ही को स्वीकारने के लिए तत्पर हूं—बंदीगृह तथा मृत्यु!”

34 प्रभु येशु ने इसके उत्तर में कहा, “सुनो, पेतरॉस, आज रात,
मुर्ग तब तक बांग न देगा, जब तक तुम तीन बार इस सच को
कि तुम मुझे जानते हो, नकार न चुके होगे.”

35 प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, “यह बताओ, जब मैंने तुम्हें
बिना बटुए, बिना झोले और बिना जूती के बाहर भेजा था, क्या
तुम्हें कोई अभाव हुआ था?” “बिलकुल नहीं,” उन्होंने उत्तर
दिया.

36 तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, “किंतु अब जिस किसी के पास
बटुआ है, वह उसे साथ ले ले. इसी प्रकार झोला भी और
जिसके पास तलवार नहीं है, वह अपना वस्त्र बेचकर तलवार
मोल ले.

37 मैं तुम्हें बताना चाहता हूं कि यह जो लेख लिखा है, ‘उसकी
गिनती अपराधियों में हुई’ उसका मुझमें पूरा होना ज़रूरी है;
क्योंकि मुझसे संबंधित सभी लेखों का पूरा होना अवश्य है.”

38 शिष्यों ने कहा, “प्रभु, देखिए, ये दो तलवारें हैं.” प्रभु येशु ने
उत्तर दिया, “पर्याप्त हैं.”

39 तब प्रभु येशु उस घर के बाहर निकलकर ज़ैतून पर्वत पर
चले गए, जहां वह प्रायः जाया करते थे. उनके शिष्य भी उनके
साथ थे.

40 उस स्थान पर पहुंचकर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “प्रार्थना
करो कि तुम परीक्षा में न फंसो.”

41 तब प्रभु येशु शिष्यों से कुछ ही दूरी पर गए और उन्होंने
घुटने टेककर यह प्रार्थना की:

42 “पिताजी, यदि संभव हो तो यातना का यह प्याला मुझसे दूर
कर दीजिए फिर भी मेरी नहीं, आपकी इच्छा पूरी हो.”

43 उसी समय स्वर्ग से एक स्वर्गदूत ने आकर उनमें बल का
संचार किया.

44 प्राण निकलने के समान दर्द में वह और भी अधिक कातर
भाव में प्रार्थना करने लगे. उनका पसीना लहू के समान भूमि
पर टपक रहा था.

45 जब वह प्रार्थना से उठे और शिष्यों के पास आए तो उन्हें
सोता हुआ पाया. उदासी के मारे शिष्य सो चुके थे.

46 प्रभु येशु ने शिष्यों से कहा, “सो क्यों रहे हो? उठो! प्रार्थना
करो कि तुम किसी परीक्षा में न फंसो.”

47 प्रभु येशु जब यह कह ही रहे थे, तभी एक भीड़ वहां आ
पहुंची. उनमें यहूदाह, जो बारह शिष्यों में से एक था, सबसे
आगे था. वह प्रभु येशु को चूमने के लिए आगे बढ़ा

48 किंतु प्रभु येशु ने उससे कहा, “यहूदाह! क्या मनुष्य के पुत्र
को तुम इस चुंबन के द्वारा पकड़वा रहे हो?”

49 यह पता चलने पर कि क्या होने पर है शिष्यों ने प्रभु येशु से
पूछा, “प्रभु, क्या हम तलवार चलाएं?”

50 उनमें से एक ने तो महापुरोहित के दास पर वार कर उस
दास का दाहिना कान ही उड़ा दिया.

51 “बस! बहुत हुआ” प्रभु येशु इस पर बोले, और उन्होंने उस
दास के कान का स्पर्श कर उसे पहले जैसा कर दिया.

52 तब प्रभु येशु ने प्रधान पुरोहितों, मंदिर के पहरुओं तथा वहां
उपस्थित पुरनियों को संबोधित करते हुए कहा, “तलवारें और
लाठियां लेकर क्या आप किसी राजद्रोही को पकड़ने आए हैं?

53 आपने मुझे तब तो नहीं पकड़ा जब मैं मंदिर आंगन में
प्रतिदिन आपके साथ हुआ करता था! यह इसलिये कि यह
क्षण आपका है—अंधकार के हाकिम का.”

54 वे प्रभु येशु को पकड़कर महापुरोहित के घर पर ले गए.
पेतरॉस दूर ही दूर से उनके पीछे-पीछे चलते रहे.

55 जब लोग आंगन में आग जलाए हुए बैठे थे, पेतरॉस भी
उनके साथ बैठ गए.

56 एक सेविका ने पेतरॉस को आग की रोशनी में देखा और
उनको एकटक देखते हुए कहा, “यह व्यक्ति भी उसके साथ
था!”

57 पेतरॉस ने नकारते हुए कहा, “नहीं! हे स्त्री, मैं उसे नहीं
जानता!”

58 कुछ समय बाद किसी अन्य ने उन्हें देखकर कहा, “तुम भी
तो उनमें से एक हो!” “नहीं भाई, नहीं!” पेतरॉस ने उत्तर दिया.

59 लगभग एक घंटे बाद एक अन्य व्यक्ति ने बल देते हुए कहा,
“निःसंदेह यह व्यक्ति भी उसके साथ था क्योंकि यह भी
गलीलवासी है.”

60 पेतरॉस ने उत्तर दिया, “महोदय, मेरी समझ में नहीं आ रहा
कि आप क्या कह रहे हैं!” जब वह यह कह ही रहे थे कि एक
मुर्ग ने बांग दी.

61 उसी समय प्रभु ने मुड़कर पेतरॉस की ओर दृष्टि की और
पेतरॉस को प्रभु की पहले कही हुई बात याद आ गई: “इसके
पहले कि मुर्ग बांग दे, तुम आज तीन बार मुझे नकार चुके
होगे.”

62 पेतरॉस बाहर चले गए और फूट-फूटकर रोने लगे.

63 जिन्होंने प्रभु येशु को पकड़ा था, वे उनको ठट्ठों में उड़ाते
हुए उन पर वार करते जा रहे थे.

64 उन्होंने प्रभु येशु की आंखों पर पट्टी बांधी और उनसे पूछने
लगे, “भविष्यवाणी कर, किसने वार किया है तुझ पर?”

65 इसके अतिरिक्त वे उनकी निंदा करते हुए उनके लिए
अनेक अपमानजनक शब्द भी कहे जा रहे थे.

66 पौ फटने पर पुरनिये लोगों ने प्रधान पुरोहितों तथा शास्त्रियों
की एक सभा बुलाई और प्रभु येशु को महासभा में ले गए.

67 उन्होंने प्रभु येशु से प्रश्न किया. “यदि तुम ही मसीह हो तो
हमें बता दो.” प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं आपको यह
बताऊंगा तो भी आप इसका विश्वास नहीं करेंगे और

68 यदि मैं आपसे कोई प्रश्न करूं तो आप उसका उत्तर ही न
देंगे;

69 किंतु अब इसके बाद मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर
की दायीं ओर बैठाया जाएगा.”

70 उन्होंने प्रश्न किया, “तो क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो?” प्रभु
येशु ने उत्तर दिया, “जी हां, मैं हूं.”

71 यह सुन वे कहने लगे, “अब हमें गवाहों की क्या ज़रूरत है?
स्वयं हमने यह इसके मुख से सुन लिया है.”

Luke 23:1

1 इस पर सारी सभा उठ खड़ी हुई और वे प्रभु येशु को
राज्यपाल पिलातॉस के पास ले गए.

2 पिलातॉस के सामने वे यह कहते हुए प्रभु येशु पर दोष लगाने
लगे, “हमने यह पाया है कि यह व्यक्ति हमारे राष्ट्र को भरमा
रहा है. यह कयसर को कर देने का विरोध करता है तथा यह
दावा करता है कि वह स्वयं ही मसीह, राजा है.”

3 इसलिये पिलातॉस ने प्रभु येशु से प्रश्न किया, “क्या तुम
यहूदियों के राजा हो?” “सच वही है, जो आपने कहा है.” प्रभु
येशु ने उत्तर दिया.

4 इस पर पिलातॉस ने प्रधान पुरोहितों और भीड़ को संबोधित
करते हुए घोषणा की, “मुझे इस व्यक्ति में ऐसा कोई दोष नहीं
मिला कि इस पर मुकद्दमा चलाया जाए.”

5 किंतु वे दृढतापूर्वक कहते रहे, “यह सारे यहूदिया प्रदेश में
लोगों को अपनी शिक्षाओं द्वारा भड़का रहा है. यह सब इसने
गलील प्रदेश में प्रारंभ किया और अब यहां भी आ पहुंचा है.”

6 यह सुनते ही पिलातॉस ने प्रश्न किया, “क्या यह व्यक्ति
गलीलवासी है?”

7 यह मालूम होने पर कि प्रभु येशु हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र
के हैं, उसने उन्हें हेरोदेस के पास भेज दिया, जो इस समय
येरूशलेम नगर में ही था.

8 प्रभु येशु को देखकर हेरोदेस अत्यंत प्रसन्न हुआ क्योंकि
बहुत दिनों से उसे प्रभु येशु को देखने की इच्छा थी. उसने प्रभु
येशु के विषय में बहुत कुछ सुन रखा था. उसे आशा थी कि
वह प्रभु येशु द्वारा किया गया कोई चमत्कार देख सकेगा.

9 उसने प्रभु येशु से अनेक प्रश्न किए किंतु प्रभु येशु ने कोई भी
उत्तर न दिया.

10 प्रधान पुरोहित और शास्त्री वहीं खड़े हुए थे और पूरे ज़ोर
शोर से प्रभु येशु पर दोष लगा रहे थे.

11 हेरोदेस और उसके सैनिकों ने अपमान करके प्रभु येशु का
मज़ाक उड़ाया और उन पर भड़कीला वस्त्र डालकर वापस
पिलातॉस के पास भेज दिया.

12 उसी दिन से हेरोदेस और पिलातॉस में मित्रता हो गई—
इसके पहले वे एक दूसरे के शत्रु थे.

13 पिलातॉस ने प्रधान पुरोहितों, नायकों और लोगों को पास
बुलाया

14 और उनसे कहा, “तुम इस व्यक्ति को यह कहते हुए मेरे
पास लाए हो कि यह लोगों को विद्रोह के लिए उकसा रहा है.
तुम्हारी ही उपस्थिति में मैंने उससे पूछताछ की और मुझे
उसमें तुम्हारे द्वारा लगाए आरोप के लिए कोई भी आधार नहीं
मिला—न ही हेरोदेस को उसमें कोई दोष मिला है.

15 उसने उसे हमारे पास ही भेज दिया है. तुम देख ही रहे हो
कि उसने मृत्यु दंड के योग्य कोई अपराध नहीं किया है.

16 इसलिये मैं उसे कोड़े लगवाकर छोड़ देता हूं.” [

17 उत्सव के अवसर पर एक बंदी को मुक्त कर देने की प्रथा
थी.]

18 भीड़ एक शब्द में चिल्ला उठी, “उसे मृत्यु दंड दीजिए और
हमारे लिए बार-अब्बास को मुक्त कर दीजिए!”

19 (बार-अब्बास को नगर में विद्रोह भड़काने और हत्या के
आरोप में बंदी बनाया गया था.)

20 प्रभु येशु को मुक्त करने की इच्छा से पिलातॉस ने उनसे
एक बार फिर विनती की,

21 किंतु वे चिल्लाते रहे, “क्रूस पर चढ़ाओ! क्रूस पर चढ़ाओ!”

22 पिलातॉस ने तीसरी बार उनसे प्रश्न किया, “क्यों? क्या है
उसका अपराध? मुझे तो उसमें मृत्यु दंड देने योग्य कोई दोष
नहीं मिला. मैं उसे कोड़े लगवाकर छोड़ देता हूं.”

23 किंतु वे हठ करते हुए ऊंचे शब्द में चिल्लाते रहे, “क्रूस पर
चढ़ाओ उसे!” तब हारकर उसे उनके आगे झुकना ही पड़ा.

24 पिलातॉस ने अनुमति दे दी कि उनकी मांग पूरी की जाए

25 और उसने उस व्यक्ति को मुक्त कर दिया, जिसे विद्रोह
तथा हत्या के अपराधों में बंदी बनाया गया था, जिसे छोड़ देने
की उन्होंने मांग की थी और उसने प्रभु येशु को भीड़ की इच्छा
अनुसार उन्हें ही सौंप दिया.

26 जब सैनिक प्रभु येशु को लेकर जा रहे थे, उन्होंने सायरीनवासी शिमओन को पकड़ा, जो अपने गांव से आ रहा था. उन्होंने प्रभु येशु के लिए निर्धारित क्रूस उस पर लाद दिया कि वह उसे लेकर प्रभु येशु के पीछे-पीछे जाए.

27 बड़ी संख्या में लोग उनके पीछे चल रहे थे. उनमें अनेक स्त्रियां भी थी, जो प्रभु येशु के लिए विलाप कर रही थी.

28 मुड़कर प्रभु येशु ने उनसे कहा, "येरूशलेम की पुत्रियो! मेरे लिए रोना छोड़कर स्वयं अपने लिए तथा अपनी संतान के लिए रोओ.

29 क्योंकि वे दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, 'धन्य हैं वे स्त्रियां, जो बांझ हैं, वे गर्भ, जिन्होंने संतान पैदा नहीं किए और वे स्तन, जिन्होंने दूध नहीं पिलाया!'

30 " 'तब वे पर्वतों से कहेंगे, "हम पर आ गिरो!" और पहाड़ियों से कहेंगे, "हमें ढांप लो!" '

31 क्योंकि जब वे एक हरे पेड़ के साथ इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं तब क्या होगी सूखे पेड़ की दशा?"

32 राजद्रोह के अपराधी दो व्यक्ति भी प्रभु येशु के साथ मृत्यु दंड के लिए ले जाए जा रहे थे.

33 जब वे कपाल नामक स्थल पर पहुंचे उन्होंने प्रभु येशु तथा उन दोनों राजद्रोहियों को भी क्रूसित कर दिया—एक को प्रभु येशु की दायीं ओर दूसरे को उनकी बायीं ओर.

34 प्रभु येशु ने प्रार्थना की, "पिता, इनको क्षमा कर दीजिए क्योंकि इन्हें यह पता ही नहीं कि ये क्या कर रहे हैं." उन्होंने पासा फेंककर प्रभु येशु के वस्त्र आपस में बांट लिए.

35 भीड़ खड़ी हुई यह सब देख रही थी. यहूदी राजा यह कहते हुए प्रभु येशु का ठट्ठा कर रहे थे, "इसने अन्य लोगों की रक्षा की है. यदि यह परमेश्वर का मसीह, उनका चुना हुआ है, तो अब अपनी रक्षा स्वयं कर ले."

36 सैनिक भी उनका ठट्ठा किये. वे प्रभु येशु के पास आकर उन्हें घटिया दाखरस प्रस्तुत करके कहे,

37 "यदि यहूदियों के राजा हो तो स्वयं को बचा लो."

38 क्रूस पर उनके सिर के ऊपर सूचना पत्र के रूप में यह लिखा था: यही वह यहूदियों का राजा है.

39 वहां लटकाए गए राजद्रोहियों में से एक ने प्रभु येशु पर अपशब्दों की बौछार करते हुए कहा: "अरे! क्या तुम मसीह नहीं हो? स्वयं अपने आपको बचाओ और हमको भी!"

40 किंतु दूसरे राजद्रोही ने डपटते हुए उससे कहा, "क्या तुझे परमेश्वर का थोड़ा भी भय नहीं है? तुझे भी तो वही दंड दिया जा रहा है!

41 हमारे लिए तो यह दंड सही ही है क्योंकि हमें वही मिल रहा है, जो हमारे बुरे कामों के लिए सही है किंतु इन्होंने तो कुछ भी गलत नहीं किया."

42 तब प्रभु येशु की ओर देखकर उसने उनसे विनती की, "आदरणीय येशु! अपने राज्य में मुझ पर दया कीजिएगा."

43 प्रभु येशु ने उसे आश्वासन दिया, "मैं तुम पर यह सच्चाई प्रकट कर रहा हूं: आज ही तुम मेरे साथ स्वर्गलोक में होगे."

44 यह दिन का मध्याह्न था. सारे क्षेत्र पर अंधकार छा गया और यह तीन बजे तक छाया रहा.

45 सूर्य अंधियारा हो गया, मंदिर का पर्दा फटकर दो भागों में बांट दिया गया.

46 प्रभु येशु ने ऊंचे शब्द में पुकारते हुए कहा, "पिता! मैं अपनी आत्मा आपके हाथों में सौंपता हूं." यह कहते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिए.

47 वह शताधिपति, जो यह सब देख रहा था, यह कहते हुए परमेश्वर की वंदना करने लगा, "सचमुच यह व्यक्ति निर्दोष था."

48 इस घटना को देखने के लिए इकट्ठा भीड़ यह सब देख
छाती पीटकर विलाप करती हुई घर लौट गयी.

49 प्रभु येशु के परिचित और गलील प्रदेश से प्रभु येशु के साथ
आई स्त्रियां कुछ दूर खड़ी हुई ये सब देख रही थी.

50 योसेफ़ नामक एक व्यक्ति थे. वह महासभा के सदस्य,
सज्जन तथा धर्मी थे.

51 वह न तो यहूदी अगुओं की योजना से और न ही उसके
कामों से सहमत थे. योसेफ़ यहूदियों के एक नगर अरिमथिया
के निवासी थे और वह परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहे
थे.

52 योसेफ़ ने पिलातॉस के पास जाकर प्रभु येशु का शरीर के
लिए विनती की.

53 उन्होंने शरीर को क्रूस से उतारकर मलमल के वस्त्र में
लपेटा और चट्टान में खोदकर बनाई गई एक कब्र की गुफ़ा में
रख दिया. इस कब्र में अब तक कोई भी शरीर रखा नहीं गया
था.

54 यह शब्बाथ की तैयारी का दिन था. शब्बाथ प्रारंभ होने पर
ही था.

55 गलील प्रदेश से आई हुई स्त्रियां भी उनके साथ वहां गईं.
उन्होंने उस कब्र को देखा तथा यह भी कि शरीर को वहां कैसे
रखा गया था.

56 तब वे सब घर लौट गए और उन्होंने अंत्येष्टि के लिए
उबटन-लेप तैयार किए. व्यवस्था के अनुसार उन्होंने शब्बाथ
पर विश्राम किया.

Luke 24:1

1 सप्ताह के प्रथम दिन पौ फटते ही वे तैयार किए गए उबटन-
लेपों को लेकर कंदरा-क़ब्र पर आईं.

2 उन्होंने कब्र के द्वार का पत्थर कब्र से लुढ़का हुआ पाया

3 किंतु जब उन्होंने कब्र की गुफ़ा में प्रवेश किया, वहां प्रभु येशु
का शरीर नहीं था.

4 जब वे इस स्थिति का निरीक्षण कर ही रही थी, एकाएक
उजले वस्त्रों में दो व्यक्ति उनके पास आ खड़े हुए.

5 भय में डरी हुई स्त्रियों की दृष्टि भूमि की ओर ही थी कि
उन्होंने स्त्रियों से प्रश्न किया, "आप लोग एक जीवित को मरे
हुओं के मध्य क्यों खोज रही हैं?

6 वह यहां नहीं हैं—वह दोबारा जीवित हो गए हैं. याद कीजिए
जब वह आपके साथ गलील प्रदेश में थे, उन्होंने आपसे क्या
कहा था:

7 'यह अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र कुकर्मियों के हाथों में सौंपा
जाए, क्रूस पर चढ़ाया जाए और तीसरे दिन मरे हुओं में से
जीवित हो जाए.' "

8 अब उन्हें प्रभु येशु की बातों की याद आई.

9 वे सभी स्त्रियां कब्र की गुफ़ा से लौट गईं और सारा हाल
ग्यारह शिष्यों तथा बाकियों को सुनाया.

10 जिन स्त्रियों ने प्रेरितों को यह हाल सुनाया, वे थी:
मगदालावासी मरियम, योहान्ना तथा याकोब की माता
मरियम तथा उनके अलावा अन्य स्त्रियां.

11 प्रेरितों को यह समाचार बेमतलब लगा. उन्होंने इसका
विश्वास नहीं किया.

12 किंतु पेतरॉस उठे और कब्र की गुफ़ा की ओर दौड़ पड़े.
उन्होंने झुककर भीतर देखा और वहां उन्हें वे पट्टियां, जो शव
पर लपेटी गई थी, अलग रखी हुई दिखीं. इस घटना पर
अचंभित पेतरॉस घर लौट गए.

13 उसी दिन दो शिष्य इम्माउस नामक गांव की ओर जा रहे
थे, जो येरूशलेम नगर से लगभग ग्यारह किलोमीटर की दूरी
पर था.

14 सारा घटनाक्रम ही उनकी आपस की बातों का विषय था.

15 जब वे विचार-विमर्श और बातचीत में मगन ही थे, स्वयं प्रभु येशु उनके पास पहुंचकर उनके साथ साथ चलने लगे.

16 किंतु उनकी आंखें ऐसी बंद कर दी गई थी कि वे प्रभु येशु को पहचानने न पाएं.

17 प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, “आप लोग किस विषय पर बातचीत कर रहे हैं?” वे रुक गए. उनके मुख पर उदासी छायी हुई थी.

18 उनमें से एक ने, जिसका नाम क्लोपस था, इसके उत्तर में उनसे यह प्रश्न किया, “आप येरूशलेम में आए अकेले ऐसे परदेशी हैं कि आपको यह मालूम नहीं कि यहां इन दिनों में क्या-क्या हुआ है!”

19 “क्या-क्या हुआ है?” प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया. उन्होंने उत्तर दिया, “नाज़रेथवासी प्रभु येशु से संबंधित घटनाएं—प्रभु येशु, जो वास्तव में परमेश्वर और सभी जनसाधारण की नज़र में और काम में सामर्थ्यी भविष्यवक्ता थे.

20 उन्हें प्रधान पुरोहितों और हमारे सरदारों ने मृत्यु दंड दिया और क्रूस पर चढ़ा दिया.

21 हमारी आशा यह थी कि प्रभु येशु इस्राएल राष्ट्र को स्वतंत्र करवा देंगे. यह आज से तीन दिन पूर्व की घटना है.

22 किंतु हमारे समुदाय की कुछ स्त्रियों ने हमें आश्चर्य में डाल दिया है. पौ फटते ही वे कब्र पर गई थी

23 किंतु उन्हें वहां प्रभु येशु का शव नहीं मिला. उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने वहां स्वर्गदूतों को देखा है; जिन्होंने उन्हें सूचना दी कि प्रभु येशु जीवित हैं.

24 हमारे कुछ साथी भी कब्र पर गए थे और उन्होंने ठीक वैसा ही पाया जैसा स्त्रियों ने बताया था किंतु प्रभु येशु को उन्होंने नहीं देखा.”

25 तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, “ओ मूर्खो! भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मंदबुद्धियो!

26 क्या मसीह के लिए यह ज़रूरी न था कि वह सभी यातनाएं सह कर अपनी महिमा में प्रवेश करे?”

27 तब प्रभु येशु ने पवित्र शास्त्र में स्वयं से संबंधित उन सभी लिखी बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया—मोशेह से प्रारंभ कर सभी भविष्यद्वक्ताओं तक.

28 तब वे उस गांव के पास पहुंचे, जहां उनको जाना था. प्रभु येशु के व्यवहार से ऐसा भास हुआ मानो वह आगे बढ़ना चाह रहे हों

29 किंतु उन शिष्यों ने विनती की, “हमारे साथ ही ठहर जाइए क्योंकि दिन ढल चला है और शाम होने को है.” इसलिये प्रभु येशु उनके साथ भीतर चले गए.

30 जब वे सब भोजन के लिए बैठे, प्रभु येशु ने रोटी लेकर आशीर्वाद के साथ उसे तोड़ा और उन्हें दे दिया.

31 तब उनकी आंखों को देखने लायक बना दिया गया और वे प्रभु येशु को पहचान गए किंतु उसी क्षण प्रभु येशु उनकी आंखों से ओझल हो गए.

32 वे आपस में विचार करने लगे, “मार्ग में जब वह हमसे बातचीत कर रहे थे और पवित्र शास्त्र की व्याख्या कर रहे थे तो हमारे मन में उत्तेजना हुई थी न!”

33 तत्काल ही वे उठे और येरूशलेम को लौट गए. वहां उन्होंने ग्यारह शिष्यों और अन्यों को, जो वहां इकट्ठा थे, यह कहते पाया,

34 “हां, यह सच है! प्रभु मरे हुओं में से दोबारा जीवित हो गए हैं और शिमओन को दिखाई भी दिए हैं.”

35 तब इन दो शिष्यों ने भी मार्ग में हुई घटना का ब्यौरा सुनाया कि किस प्रकार भोजन करते समय वे प्रभु येशु को पहचानने में समर्थ हो गए थे.

36 जब वे इस बारे में बातें कर ही रहे थे, स्वयं प्रभु येशु उनके
बीच आ खड़े हुए और उनसे बोले, "तुममें शांति बनी रहे."

37 वे अचंभित और भयभीत हो गए और उन्हें लगा कि वे किसी
दुष्टात्मा को देख रहे हैं.

38 प्रभु येशु ने उनसे कहा, "तुम घबरा क्यों हो रहे हो? क्यों उठ
रहे हैं तुम्हारे मन में ये संदेह?

39 देखो, ये मेरे हाथ और पांव. यह मैं ही हूं. मुझे स्पर्श करके
देख लो क्योंकि दुष्टात्मा के हाड़-मांस नहीं होता, जैसा तुम
देख रहे हो कि मेरे हैं."

40 यह कहकर उन्होंने उन्हें अपने हाथ और पांव दिखाए

41 और जब वे आश्चर्य और आनंद की स्थिति में विश्वास नहीं
कर पा रहे थे, प्रभु येशु ने उनसे प्रश्न किया, "क्या यहां कुछ
भोजन है?"

42 उन्होंने प्रभु येशु को भूनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया

43 और प्रभु येशु ने उसे लेकर उनके सामने खाया.

44 तब प्रभु येशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे साथ रहते हुए मैंने तुम
लोगों से यही कहा था: वह सब पूरा होना ज़रूरी है, जो मेरे
विषय में मोशेह की व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं के लेख तथा
भजन की पुस्तकों में लिखा गया है."

45 तब प्रभु येशु ने उनकी समझ खोल दी कि वे पवित्र शास्त्र
को समझ सकें

46 और उनसे कहा, "यह लिखा है कि मसीह यातनाएं सहे और
तीसरे दिन मरे हुओं में से दोबारा जीवित किया जाए,

47 और येरूशलेम से प्रारंभ कर सभी राष्ट्रों में उसके नाम में
पाप क्षमा के लिए पश्चाताप की घोषणा की जाए.

48 तुम सभी इन घटनाओं के गवाह हो.

49 जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, उसे मैं तुम्हारे लिए
भेजूंगा किंतु आवश्यक यह है कि तुम येरूशलेम में उस समय
तक ठहरे रहो, जब तक स्वर्ग से भेजी गई सामर्थ्य से परिपूर्ण
न हो जाओ."

50 तब प्रभु येशु उन्हें बैथनियाह नामक गांव तक ले गए और
अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी.

51 जब वह उन्हें आशीष दे ही रहे थे वह उनसे विदा हो गए
और स्वर्ग में उठा लिये गये.

52 तब उन्होंने येशु की आराधना की और बहुत ही आनंद में
येरूशलेम लौट गए.

53 वे मंदिर में नियमित रूप से परमेश्वर की स्तुति करते रहते
थे.